Nathmall Bantia

* श्री वीतरागायनमः *

Bhinasar Bikaner

॥ सव्व जग जीव रक्खण दयट्ठयाये ॥
॥ पावयणं भगवया सुकहियं ॥

चित्रमय ।

अनुकम्पा-विचार

संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण

जिसे

श्री साधुमार्गी-जैन पूज्य श्री १००८ श्री हुक्मीचन्द जी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य्य श्री श्री १००८ श्री जवाहिरलाल जी महाराज ने भोले जीवों के लाभार्थ रचा ।

संग्रहकर्त्ता—

पं० कृष्णानन्द त्रिपाठी,

वीर सं० २४५९) मूल्य (वि० सं० १९८९

श्री लाल सं०-१२) १।≡) (प्रथमवार २०००,

प्रकाशक—
पन्नोमल कपूरचन्द जौहरी,
मालीवाड़ स्ट्रीट, दिल्ली।

To be had of
PHANNOMAL KAPOORCHAND Jewellers
Maliwar Street,
DELHI.

पुस्तक मिलनेका पता—
पन्नोमल कपूरचन्द जौहरी,
मालीवाड़ स्ट्रीट, दिल्ली।

मुद्रक—
शिवचन्द तिवारी,
जगदीश प्रेस
१०८, काटन स्ट्रीट,
कलकत्ता।

भूमिका

आजकल कतिपय जैन नामधारी व्यक्तियों ने अपने विपरीत मन्तव्यों द्वारा दया-दान आदि पवित्र महावीर स्वामी के सिद्धान्तों का जिस निष्ठुरता के साथ विरोध किया है उसका अवलोकन करते हुये कहना पड़ता हैं कि—तीर्थंकरों के उत्तम सिद्धान्तों की इन निर्दय सिद्धान्तों से बचाना प्रत्येक धार्मिक जैन का कर्त्तव्य है।

मारवाड़ और मेवाड़ आदिमें रहनेवाली बहुसंख्यक जनता अशिक्षित तथा शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान से रहित होकर दान, दया के विपरीत सिद्धान्त को मानती है; उसके सुधार तथा शिक्षा का कोई उपयुक्त साधन सम्प्रति नहीं है, बल्कि दया-दान के विरोधी नामधारी "जैन साधुओं" की बनाई हुई ढालों (पदों) के फेर में पड़कर बुरी तरह से अज्ञानान्धकार में फंसी हुई है।

इनके उद्धार का उपाय—तर्क वितर्क करना—सच्छास्त्र अवलोकन करना, अत्यन्त निषेध (सख्त मना) किया गया है। अतः इनके उद्धार तथा धर्म सम्बन्धी शास्त्रीय ज्ञान का एक यही उपाय शेष रह गया है। वह है अनुकम्पा आदि विषयक ढालों का प्रचार करना।

उन नामधारी "जैन साधुओं" की ढालों में महावीर स्वामी के सिद्धान्तों की जैसी छीछा लेदर की गई है उसे देखकर प्रत्येक सहृदय व्यक्ति को अवश्य महान क्लेश होगा। जो 'दया' जैन-धर्म का प्राण है, उसे एकन्त पाप कह कर इन लोगों ने धर्म को अधर्म का स्वरूप दे दिया है।

अतः इस अज्ञानान्धकार में फंसी हुई जनता की दयनीय दशा पर ध्यान देकर २२ सम्प्रदाय के आचार्य श्री १००८ पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने सद्धर्म ज्ञान कराने के निमित्त यह आवश्यक समझा कि—इनकी धर्म विरुद्ध ढालों का प्रतिशोध उसी प्रकार की ढाल बनाकर किया जाय, जिससे सर्व साधारण की बुद्धि में सत्य ज्ञान का प्रकाश हो जावे। ऐसा धार कर पूज्यश्री ने शास्त्रीय प्रमाणों के अनुकूल उसी भाषा में ढालें बनाकर (क्रमशः) उनकी ढालों का उत्तर योग्यता पूर्वक दिया है, जिसका जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है।

उनकी उपयोगिता देखकर शास्त्रीय घटनाओं की वास्तविकता चित्रों द्वारा भी प्रगट करने का भाव उत्पन्न हुवा, जिससे साधारण जनता और भी सुगमता से उन्हें हृदयङ्गम कर सके उसीके फलस्वरूप "चित्रमय—अनुकम्पा—विचार" नामक यह ग्रंथ आपके कर कमलों में शोभित है। पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में भी कुछ निवेदन करना है।

पूज्य श्री का जन्म मालवा देश के अन्तर्गत थांदला नामक ग्राम में वि० स० १९३२ में हुवा था। आपकी माता का नाम

ाथी बाई तथा पिता का नाम श्री जीवराज था। आप ओस-
ाल वंश में कुवाड़ गोत्रीय थे। सांसारिक विषयों को विष के
ममान समझ कर पूर्ण वैराग्य सम्पन्न हो, आत्म कल्याणार्थ मुनी
श्री १००८ श्री मगन मुनी जी से सं० १६४६ वि० में दीक्षा ग्रहण
की। अतः आपका जन्म मारवाड़ में न होने से मातृ-भाषा
मारवाड़ी नहीं है। तथापि अपनी विमल प्रतिभा से थोड़े ही
समय में मारवाड़ो भाषा भी अच्छी प्रकार जानली।

धर्म सम्बन्धी सिद्धान्तों को यदि मारवाड़ी भाषा में न बना
कर शुद्ध हिन्दी में रचना करते तो जिस सिद्धान्त को लक्ष्य करके
इसकी रचना की गई है उससे सर्वथा नहीं तो अधिकांश में
जनता को उस ज्ञान से वंचित रहना पड़ता, क्योंकि प्रत्येकप्राणी
अपनी मातृ भाषा में जितना शीघ्र किसी ज्ञान को धारण कर
सकता है, उतना किसी अन्य भाषा से नहीं। ऐसा निश्चय
कर पूज्यश्रीजी ने इन ढालों को मारवाड़ी भाषा में उसी तर्ज
और उदाहरण पर रचा, जिस तर्ज और उदाहरणमें दया-दान को
पाप बतला कर धर्म विरुद्ध ढालें बनाई गई थीं।

पूज्यश्रीजी ने भाषा और कविता पर उतना ध्यान नहीं
दिया है जितना इन तेरह पंथी नामधारी साधुओं के अध्यारोपित
दान-दया के विरुद्ध जमे हुये भावों के मिटाने पर दिया है।
आपने अपनी कवित्व-शक्ति का परिचय देने के लिये नहीं;
किन्तु भयंकर अंधकार में पड़ी हुई जनता का उद्धार करनेके
लिये ही इनका निर्माण किया है। अतः पाठक वृन्द इस पुस्तक

को कविता की दृष्टि से नहीं, भावों की दृष्टि से देखने
कृपा करेंगे।

पूज्य श्रीजीने यद्यपि शास्त्रानुकूल ही ढालों की रचना व
तथापि अपने दृष्टि दोष से यन्त्रालय की या किसी कार्यव
की असावधानी से (जैसा होना स्वाभाविक है) कोई भूल
गई हो तो उसके लिये कार्यकर्त्ता ही उत्तरदायी है। पुस्तक
आदि में शुद्धिपत्र लगा दिया गया है परन्तु मात्रायें यंत्रा
चलते २ टूट जाती हैं। अतः कुल पुस्तक का शुद्धिपत्र ह
किसी अंश में असम्भव नहीं तो दुस्साध्य अवश्य है।

इस संस्करण में पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिरलाल
महाराज के सुयोग्य शिष्य श्री गब्बूलाल जी महाराज
बनाई हुई ढालें भी उपयुक्त समझकर अन्त में सम्मिलित
दी गई हैं। हमें पूर्ण विश्वास और आशा है कि निष्पक्ष द
सरल मनोभाव से अध्ययन करने पर अज्ञान का परदा अव
खुल जायगा।

विनीत—

कृष्णानन्द त्रिपाठी

विषय-सूची

पहलो ढालके दोहे

ढाल पहली

दूसरी ढालके दोहे पेज-५६

ढाल दूसरी

तीसरी ढालके दोहे

ढाल तीसरी

———

ढाल नवमी — पेज-२८१

श्री गब्बूलालजी कृत ढालें

॥ इति शुभम् ॥

चित्रमय अनुकम्पा-विचार

दोहा

करुणा वरुणालय प्रभो, मङ्गलमूल अनन्त ।
जय-जय जिनवर विबुधवर, सुखमय सुषमावन्त ॥१॥
अनन्त जिन हुआ केवली, मनपर्य्यव मतिमन्त ।
अवधिधर मुनि निर्मला, दशपूर्व लगि सन्त ॥ २ ॥
आगम बलिया ये सहू, भाषे आगम सार ।
बचन न श्रद्धे तेहना, ते रुलसे संसार ॥ ३ ॥
अनुकम्पा आछी कही, जिन-आगम रे मांय ।
अज्ञानी सावज कहे, खोटा चोज लगाय ॥ ४ ॥
ढालां नहिं, जालां हुई, अनुकम्पा री घात ।
पंचमकाल प्रभाव थी, हा ! हा ! त्रिभुवन तात ॥५॥
अनुकम्पा उठायवा, मांडो माया जाल ।
मूरख मछला ज्यों फँस्या, रुले अनन्तो काल ॥ ६ ॥
दुःखमि आरे पंचमे, कुगुरु चलायो पन्थ ।

अनुकम्पा खोटी कहे, नाम धरावे सन्त ॥ ७ ॥
आक-थोर नो दूध सम, अनुकम्पा बतलाय।
मन सों सावज नाम दे, भोलाने भरमाय ॥ ८ ॥
सपाप सावज नाम है, हिन्सादिक थी होय।
अनुकम्पा हिंसा नहीं, सावज किस विध होय ॥ ९ ॥
अनुकम्पा रक्षा कही, दया कही भगवन्त।
पाप कहे कोई तेहने, मिथ्या जाणो तन्त ॥ १० ॥
अमृत एक सो जाणज्यो, अनुकम्पा पिण एक।
भेद प्रभू नहिं भाषियो, सूतर मांही देख ॥ ११ ॥
तो पिण कुगुरु कदाग्रहे, चढ़िया विस्वा बीस।
मन सूं करे परूपणा, करड़ी ज्यांरी रीस ॥ १२ ॥
निरवद्‌ने सावद वलि, अनुकम्पा रा भेद।
अणहूंता कुगुरु करे, ते सुण उपजे खेद ॥ १३ ॥
भरमजाल लाड़न तणू, रचूँ प्रबन्ध रसाल।
धारो भवजीवां! तुम्हें, बरते मंगलमाल ॥ १४ ॥

—*—

१—अधिकार मेघकुंवरका

(तर्ज—धिग धिग छे उणी नागश्रीने)

मेघकुंवर हाथी रा भवमें,

करुणा करी श्री जिनजी बताई।

प्राणी, भूत, जीव, सत्व री,

अनुकम्पा की, समकित पाई।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ अनु० ॥१॥

निज देह री परवा नहिं राखी,

पर अनुकम्पा रो हुवो रसियो।

बीस पहर पग ऊंचो राख्यो,

पर-उपकार सूँ मन नहिं खसियो ॥अनु०॥ २॥

पड़तसंसार कियो तिण विरियां,

श्रेणिक घर उपनो गुन पाई।

आठ रमणी तज दीक्षा लीधी;
ज्ञाता अध्ययने गनधर गाई ॥अनु०॥ ३ ॥
(कहे) "बलता जीव दावानल देखो,
सुण्डसूँ पकड़के नाय बचाया !"
मूढ़मत्यांरी या खोटी कल्पना,
बलता जीव सूतर न बताया ॥अनु०॥४॥
मण्डल जीवां थी पूरण भरियो,
शस बैठन ने स्थान न मिलियो ।
जीव लाय किण जागा मेले,
खोटो—पक्ष मिथ्याती झलियो ॥अनु०॥५॥
सुसलो न मार्‌यो अनुकम्पा बतावे,
(तो) एक जोजन मण्डल रे मांई ।
जीव घणा जामें आइने बसिया,
(त्यां) सगलांने हाथी तो मार्‌या नाहीं ॥अनु०॥६॥
(जो) सुसलो न मार्‌या रो धर्म बताओ,
(तो) दूजा (ने) न मार्‌यां रो क्यों नहिं केवो ।
(जो) सुसला रा प्राण बचाया धर्म है,
तो दूजा जीव बचाया रो (पिण) केवो ॥अनु० ॥७॥
जोजन मन्डले जीव जो बचिया,

आठ रमणी तज दीक्षा लीधी;
ज्ञाता अध्ययने गनधर गाई ॥अनु०॥ ३ ॥
(कहे) "बलता जीव दावानल देखी,
सुण्डसूँ पकड़के नाय बचाया !"
मूढ़मत्यांरी या खोटी कल्पना,
बलता जीव सूतर न बताया ॥अनु०॥४॥
मण्डल जीवां थी पूरण भरियो,
शस बैठन ने स्थान न मिलियो।
जीव लाय किण जागा मेले,
खोटो—पक्ष मिथ्याती झलियो ॥अनु०॥५॥
सुसलो न मार्‍यो अनुकम्पा बतावे,
(तो) एक जोजन मण्डल रे मांई।
जीव घणा जामें आइने बसिया,
(त्यां) सगलांने हाथी तो मार्‍या नाहीं ॥अनु०॥६॥
(जो) सुसलो न मार्‍या रो धर्म बताओ,
(तो) दूजा (ने) न मार्‍यां रो क्यों नहिं केवो।
(जो) सुसला रा प्राण बचाया धर्म है,
तो दूजा जीव बचाया रो (पिण) केवो ॥अनु० ॥७॥
जोजन मन्डले जीव जो बचिया,

हाथी भवमें मेघकुमार ।

ढाल पहली गाथा ७, ८ का भाव चित्र ।

"(जो) सुसल्यो न मास्रो रो धर्म वतावो,
(तो) दूजा (ने) नमास्याँ रो क्यों नहिं केवो ॥

(जो) सुसलारा प्राण वचाया धर्म है,
तो दूजाजीव वचाया रो (पिण) केवो॥ अनु० ॥७॥

जोजन मण्डल जीव जो वचिया,
मंदमती ताने पाप वतावे ॥

त्यांरे लेखे सुसलो वंचियारो,
'धर्म" कहो जी किण विध थावे ॥अनु०॥८॥
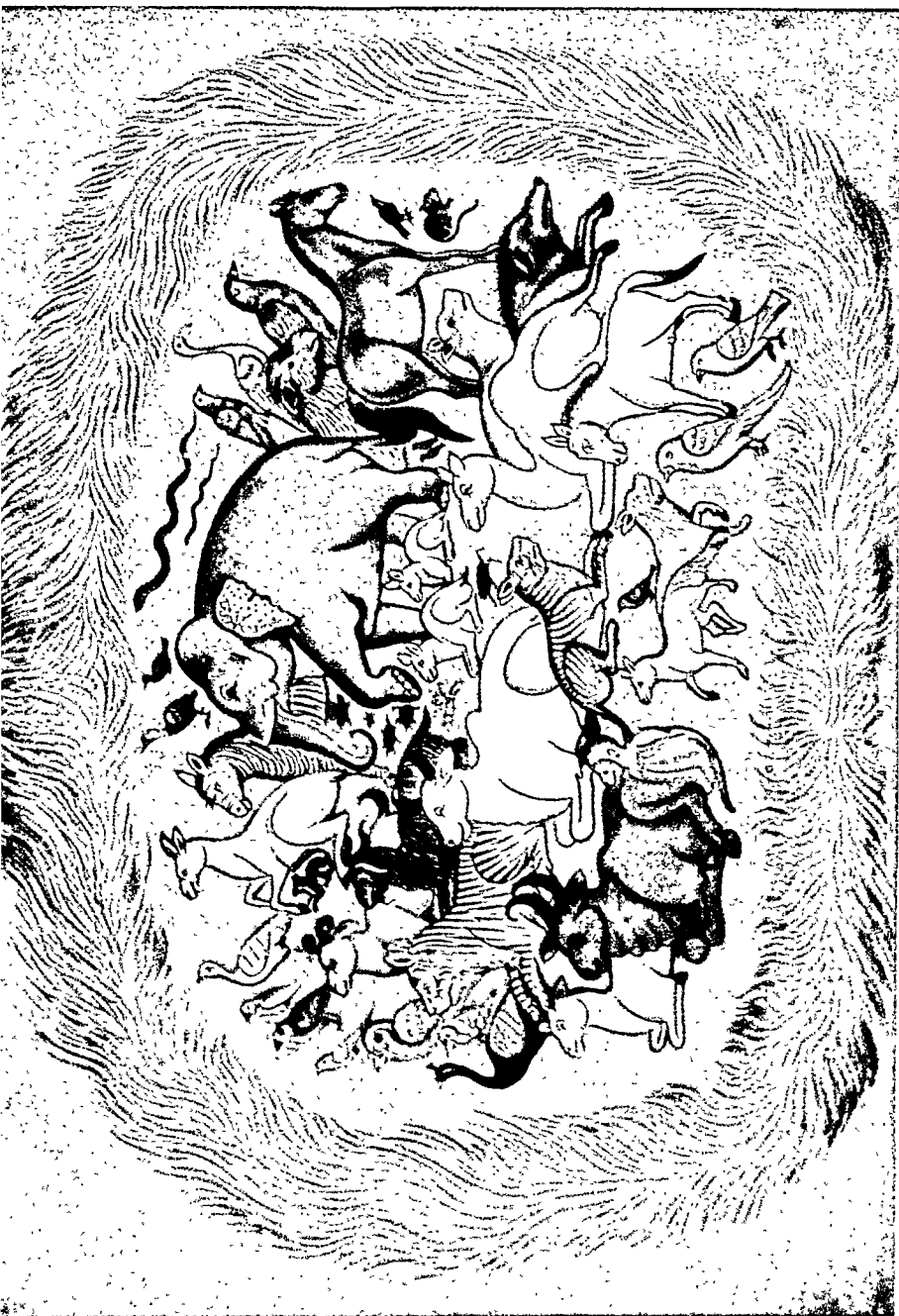
जीव दया सब जगने बतावा,
जादवी हिंसा मेटण काजे।
पंचेन्द्रि प्राणी रा प्राण बचावा,
प्रत्यक्ष न्याय प्रभूजी रो राजे ॥ अनु०॥२॥
इत्यादि उपकार रे अर्थे,
न्याव करण री बात ज मानी।
स्नान अर्थे पानी बहु देख्यो,
जामें भी जीव जाने बहु ज्ञानी ॥अनु०॥३॥
पिन पशु-पक्षी री हिंसा मोटो,
रक्षा पिण ज्यारी मोटो जानी।
यो ही भेद सब जगने बतावा,
स्नान कियो सूतर री या वानी ॥ अनु०॥४॥
मन्दमती कहे जीव सरीखा,
एकेन्द्री पंचेन्द्री भेद न दाखे।
छोटी, मोटी हिंसा रा भेदने,
केई अज्ञानी 'सरीखा' भाखे ॥अनु०॥ ५ ॥
जो यो श्रद्धा नेम री होती,
तो पानी ने देखि स्नान न करता।
वाड़ा रा जीवां थी असंख्यगुना ये,

भगवान श्री नेमीनाथजी का जीव छुड़ाना।

ढाल पहला गाथा ३, ४ और १३, १४ का भाव चित्र।

इत्यादि उपकार रे अर्थे,
व्यावकरणरी वातज मानो॥
स्नान अर्थे पाणी वहु देख्यो,
जामेभी जीव जाणे वहु ज्ञानी॥३॥
पिण पशु पक्षीरी हिंसा मोटी,
रक्षा पिण ज्याँरी मोटी जाणी॥
योही भेद सब जगने वतावा,
स्नान कियो सूतररी या वाणी॥४॥
"व्याहरे काज मरें वहु प्राणी,
हिंसा से डरिया निर्मल ज्ञानी॥
सारथि प्रभुजीरो मनस्या जाणी,
जीवां ने छोड़ दिया अभय दानी॥१३॥
जीव छुट्याँसुं नेमजी हरष्या,
वक्षीसी दीनी सूत्रमें गाई॥
कुंडल युगम अरु कणडोरो,
सर्व आभूषण दीधा वधाई॥१४॥

नेमिनाथ जी
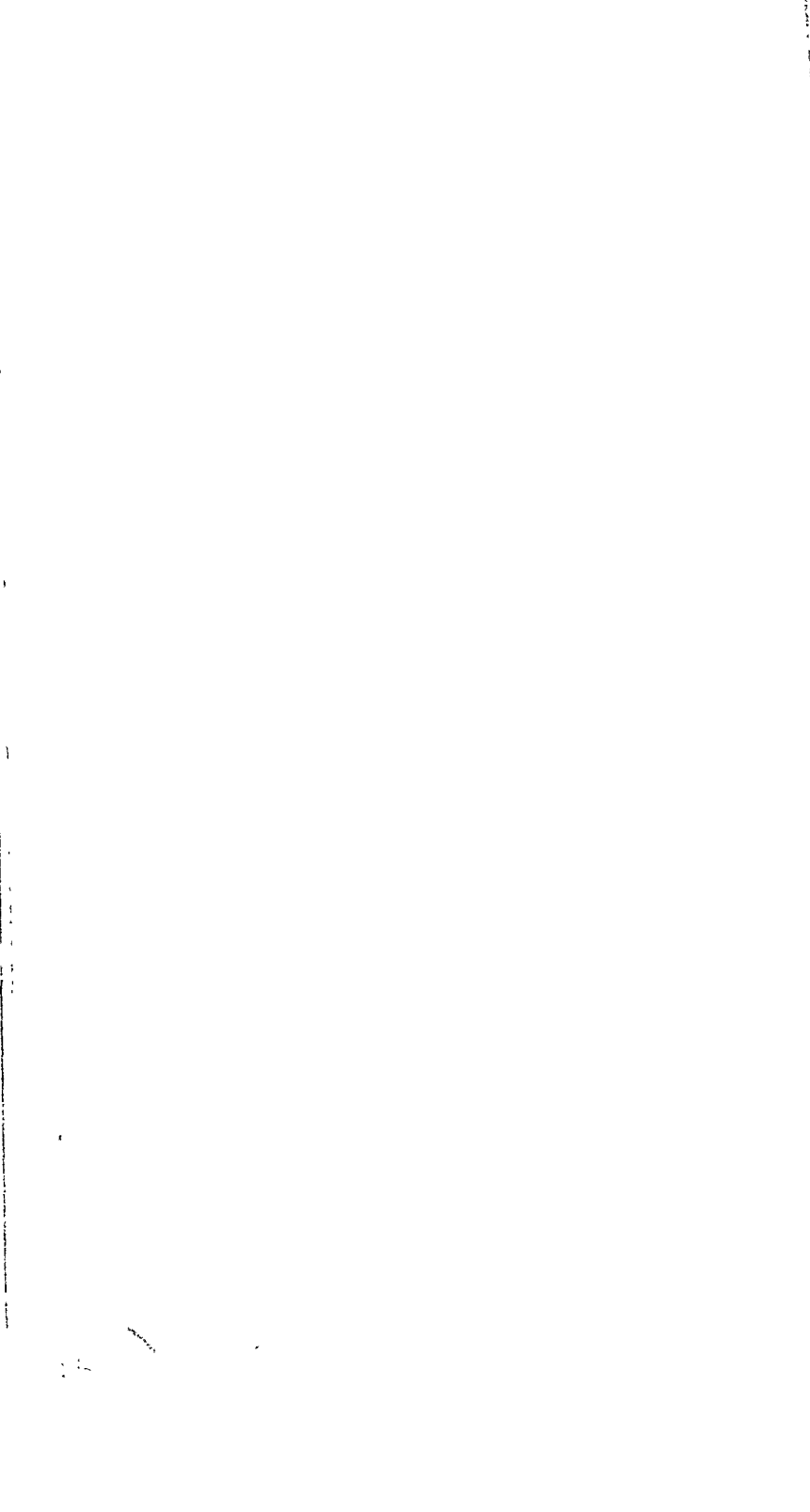
तत्क्षन देखि ने पीछो फिरता ॥अनु०॥६॥
पशुपंखी री दया (रक्षा) रे मांहीं,
लाभ घनो प्रभु परगट कीनो।
अल्प हिंसा पानी री जाने,
तिन थी पंचेन्द्रियमें मन (ध्यान) दीनो ॥अनु०॥७॥
छोटी-मोटी हिंसा-रक्षा री,
ज्ञानी तो भेद परगट जाने।
मन्दमती रक्षा नहिं चावे,
तेथी ते तो ऊँधी ताने ॥अनु०॥ ८ ॥
स्नान करी परनोजन चाल्या,
तोरन पर देख्या बहु प्रानी।
वाड़ा पिंजरमें रुकिया दुखिया,
सूत [सारथि] से पूछे करुना आनी ॥अनु०॥९॥
सुख अर्थी ये जीव बिचारा,
क्योंकर यांने दुखिया कीधा।
तब तो सारथि इनविध बोले,
स्वामी वचन सुनो हम सीधा ॥अनु०॥ १०॥
ये सहु भद्रक प्रानी प्रभुजी,
ब्याह कारन तुमरो मन आणी।

आमिष (मांस) भक्षी रे भोजन सारू,
बांध्या छे घात दिल ठानी ॥अनु०॥ ११॥
सारथि वचने रु ज्ञान से जाणी,
दीन दयालु दया दिल आणी।
जीवां तणो हित वंछ्यो स्वामी,
आतम सम जाण्या तें प्राणी ॥अनु०॥१२॥
व्याह रे काज मरें बहु प्राणी,
हिंसासे डरिया निर्मल ज्ञानी !
सारथि प्रभुजी री मनस्या जाणी,
जीवांने छोड़ दिया अभयदानी॥अनु० ॥१३॥
जीव छुट्या सूँ नेमजी हरष्या,
बक्षीसां दीनी सूत्र में गाई।
कुण्डल युग्म अरू कणडोरो,
सर्व आभूषण दीधा बधाई ॥अनु०॥१४॥
पीछे वरषीदान जो दीधो,
दान-दया दोनूँ ओलखाया।
संजम सहस्राबनसें लीधो,
केवल ले प्रभु मोक्ष सिधाया ॥अनु०॥१५॥
(कहे) "जीवां रो हित नहिं नेमजी वंछयो"

दीपिकादिक री साख बतावे।
दीपिकासें हितकारी (अर्थ) * भाख्यो,
उणने अज्ञानी जाग छिपावे ॥अनु०॥१ ।
नहिं मारण ने हित बताओ,
(तो) जीव बचाया अहित किम थावे
नहिं मारण निज हित पहिचाणो,
मरतो बचाया स्व-परहित पावे ॥अनु०॥१७॥
जीव बचे जीने रक्षा कही प्रभु,
देही (जीव) री रक्षा ने दया बताई।
शम्बरद्वार में पाठ उघाड़ो,
मन्दमती रे मन नहिं भाई ॥ अनु० ॥१८॥
"जीवांने नेमजी नांय छूड़ाया,
मन्दमती एवी वात उचारे।
"अवचूरी दीपिका टीका" अर्थ ने,
मध्या उदर था नाय विचारे ॥ अनु० ॥१९॥

---

* "साणुक्कोसे जिएहिओ"
(उत्तराध्ययय सूत्र, अ० २२ गा० १८)

टीका—सानुक्रोशः सह अनुक्रोशेन वर्तते इति सानुक्रोशः सदयः जीवे हितः जीव विषये हितेप्सुः।

जीव छुड्या री बक्षीसो दीधी,
"अवचूरी दीपिका टीका †" देखो ।

†—"जइ मज्झ कारणा ए ए, हम्मंति सुबहू जिया। न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥ सो कुण्डलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो। आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामई ॥

(उत्त० सूत्र अध्य० २२ गाथा १९-२०)

दीपिका—तदा नेमिकुमारः किं चिंतयतीत्याह यदि मम विवाहादि कारणेन एते सुबहवः प्रचुराजीवाः हनिष्यन्ते। मारयिष्यन्ते तदा एतत् हिंसाख्यं कर्म परलोके परभवे निःश्रेयसं कल्याणकारी न भविष्यति परलोक भीरुत्वस्य अत्यन्तं अभ्यस्ततया एवं अभिधानं अन्यथा भगवतश्चरमदेहत्वात् अतिशय ज्ञानत्वाच्च कुत एवं विधा चिन्ता इति भावः ॥ १९ ॥ स नेमिकुमारो महायशाः नेमिनाथस्याऽभिप्रायात् सर्वेषु जीवेषु वन्धनेभ्यो मुक्तेषु सत्सु सर्वाणि आभरणाणि सार्थये प्रणामयति ददाति तान्याभरणाणि कुण्डलानां युगलं पुनः सूत्रकं कटिदवरकं चकारात् आभरण शब्देन हारादीनि सर्वाङ्गोपाङ्ग भूषणानि सार्थये ददौ ॥ २० ॥

टीका—भवान्तरेषु परलोक भीरुत्वस्यात्यन्तमभ्यस्ततयैवमभिधानमन्यथा चरम शरीरत्वादतिशय ज्ञानित्वाच्च भगवतः कुत एवंविध-चिन्तावसरः? एवं च विदित भगवदाकूतेन सारथिना मोचितेषु सत्त्वेषु परितोषितोऽसौ यत्कृतवां स्तदाह—'सो' इत्यादि 'सुत्तकंचे' तिकटीसूत्रम्, अर्पयतीत योगः, किमेत देवेत्याह—आभरणानि च सर्वाणि शेषाणीति गम्यते।

मूल पाठे बक्षीसी भाषी,
मन्दमती ! जरा समझो लेखो ॥अनु०॥२०॥
आज पिन या परतख दीखे छे,
मनभाने कामसे स्वामी रीझे ।
जब राजी हो बक्षीसो देवे,
पंडित न्याय बिचारी लीजे ॥अनु०॥२१॥
जीव छुट्या प्रभु राजी न होता,
बक्षीस नेमजी काहेको देता ।
"निर्दय ऐसो न्याय न लेवे,
करुनाकर यों परगट केता ॥अनु०॥२२॥

३-धर्मरुचिजीका करुणा अधिकार

कटुक आहार जेहर सम जानी,
परठन री गुरु आज्ञा दीनी ।
खावन रो निषेध जो कीनो,
धर्मरुचिजी 'तहत' कर लीनी ॥अनु०॥२३॥
कटुक आहार सुँ किड़ियां मरती,
अनुकम्पा मुनि मन मांही आनी ।
कडुवा तुम्बा रो भोजन कीधो,

धर्मरुचीजी ! धन गुणखानी ॥अनु०॥२॥
गुरु आज्ञा बिन आहार कियो मुनि,
किड़ियां री अनुकम्पा आणी ।
विशुद्ध भाव मुनि रा अति आछा,
आराधिक हूवा गुणखानी ॥ अनु० ॥३॥
कहत कुतर्की "धर्मरुचीजी [तो],
किड़ियां बचावण भाव न ल्यायो ।
आपां सूँ मरता जीव जाणी ने,
पाप हटा मुनि कर्म खपायो" ॥ अनु० ॥४॥
जीव बचावा में पाप बतावा,
इण विध भोलो [जन] ने भरमावे ।
न्यायवादी ज्ञानीजन पूछे,
[तो] मंदमती ने ज्वाब न आवे ॥ अनु० ॥५॥
अचित मही मुनि विन्दू परठ्यो,
किड़ियां मारण रा नहिं कामी ।
ज्ञान बिना किड़ियां खा मरती,
जाने बचावण कामी स्वामी ॥ अनु० ॥६॥
अचित भू परठ्यां पाप जो लागे,
तो गुरु परठण री आज्ञा न देता ।

उच्चारादि निन मुनि परठे,
उपजे मरे जीव त्यां माहीं केता ॥ अनु० ॥७॥
तिण री हिंसा मुनि ने नहिं लागे,
सूतर मांहीं गणधर भाषे ।
धर्मरुचीजी तो विध से परठ्यो,
जिनमें पाप कुतर्की दाखे ॥ अनु० ॥८॥
जो मुनि कड़वो तुम्बो न खाता,
तो परठ्यां दोष मुनी ने न कांई ।
करुणासागर किड़ियां रे खातिर,
निज तन री परवा नहिं लाई ॥ अनु० ॥९॥
या अधिकाई जीवदया री,
सूतर में गणधरजी गाई ।
"पराणुकम्पे नो आयाणुकम्पे *"
चौथा ठाणा में यों दरशाई ॥ अ० ॥१०॥

---

*—चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०—आयाणु कम्पए, णाममेगे नो पराणुकम्पए ॥

(ठाणांगसूत्र ठाणा ४ उद्दे० ४ सुत्र ३५२)

टीका—आत्मानुकम्पकः—आत्महित प्रवृत्तः प्रत्येकबुद्धो जिनकल्पको वा परानपेक्षो वा निर्घृणः, परानुकम्पको निष्ठितार्थतया तीर्थंकरः आत्मानपेक्षो वा दयैकरसो मेतार्यवत्, उभयानुकम्पकः स्थविरकल्पिक उभयानुकम्पकः पापात्मा कालशौकरिकादिरिति ॥

परजीवां रा प्राण बचावन,
अपना प्राण री परवा न राखे।
ऐसा तो बिरला इण जग में,
धर्मरुची सा शास्तर साखे ॥ अनु० ॥११॥

४—श्री महावीरस्वामीका गोशालकपर अनुकम्पाका अधिकार

केवलज्ञानी वीर जिनेश्वर,
गौतमजी को भेद बतायो।
दयाभाव [से] अनुकम्पा करने,
में पिण गोशाला ने बचायो ॥ अनु० ॥१॥
गोशाल बचाया में पाप होतो तो,
गौतमजीने क्यों नहिं कीनो।
"पाप किया मैं, तुम मत करज्यो,"
यो उपदेश प्रभू क्यों न दीनो ॥ अनु० ॥२॥
केवली तो अनूकम्पा केवे,
मन्दमती तामें पाप बतावे।
ज्ञानी वचन तज मूढ़ां री माने,
वे नर मोह मिथ्यातम पावे ॥ अनु० ॥३॥

असंजती रो नाम लेई ने,
गोशाल बचाया रो पाप जो केवे।
माखी-मूषक पात्र से काढ़े,
ज्यांरो तो जाब सरल नहिं देवे ॥ अनु० ॥४॥
जूँ वां असंयति ने वो पोषे,
पाप जाणे तो क्यों नहिं फेंके।
जद कहे म्हारी दया उठ जावे,
तो वीरने दोष कहो कुण लेखे ॥ अनु० ॥५॥
प्राणि आदि अनुकम्पा करने,
वैसायण जूँ वां शिर धारे।
सूत्र भगोती सतक पन्द्रहवें,
केवल ज्ञानी वचन उचारे ॥ अनु० ॥६॥
प्राणी भूत जीव सत्वानुकम्पा,
सातावेदनी रो कारण भाख्यो।
सप्तम शतक छठे उद्दे शे,
वीर प्रभू गौतम ने दाख्यो ॥ अनु० ॥७॥
मेघकुँवर अधिकार पाठ यों,
प्राणी भूतादि जीवदया रो।
यां पाठां में असंजति आया,

पाप नहीं अनुकम्पा किया रो ॥ अनु० ॥८॥

अनुकम्पा उठावन कारण,
वीरने द्वेषी पाप बतावे ।
सूत्र रो न्याय बतावे ज्ञानी,
तो मंदमती ने जवाब न आवे ॥ अनु० ॥९॥

[कहे] "दोय साधां ने क्यों न बचाया,
गोशाला थी बलता जाणी ।"
(उत्तर) आयुष आयो ज्ञानी जाण्यो,
न्याय न सोचे खेंचाताणी ॥ अनु० ॥१०॥

विहार कराया तो थारे [पिण] लेखे,
दोष तो कोई लेश न लागे ।
क्यों न विहार करायो स्वामी,
घात जाणता [थां] दोनांरी आगे ॥ अनु० ॥११॥

जद कहे "निश्चय ज्ञानमें देख्यो,
दोनां री घात यहां इज आई ।
जासूँ विहार करायो नाहीं,
भवितव्यता टाली नहिं जाई" ॥ अनु० ॥१२॥

सरल भाव यों ही तुम शरधो,
अनुकम्पा में [तो] पाप न कांई ।

ज्ञानी ज्ञान देखे ज्यों वरते,

तिणरी खौंच करो मत भाई ॥ अनु० ॥१३॥

अनुकम्पा सावज थापण ने,

सूत्रपाठ रा अरथ ने ठेले ।

छे लेश्या छद्मस्थ वीर रे,

बोले मिथ्याती पापको झेले ॥ अनु० ॥१४॥

किसन, नील, कापोत लेश्या रा,

भावमें साधुपणो नहिं पावे ।

प्रथम शतक दूजे उद्देशो*,

(तो) वीरमें षट्लेश्या किम थावे ॥अनु० ॥१५॥

"कषाय कुशील" रो नाम लेई ने,

अज्ञानी भोला (ने) भरमावे ।

मूल-उत्तर गुण दोष न सेवे,

भाव माठी लेश्या किम पावे ॥ अनु ० ॥१६॥

कषाय कुशील भाव लेश्या जो माठी,

होतो (तो) अपडिसेवी क्यों कहता ।

इन लेखे द्रव्य लेश्या छः जाणो,

भाव लेश्या (रा) शुध भाव वदीता ॥अनु०॥१७॥

* भगवती सूत्र

'कषायकुशील' 'सामायिक' चारित्रे,
छे लेश्या रो नाम जो आयो ।
प्रथम शतक दूजे उद्देशे,
टीकासें तिण रो भेद बतायो ॥ अनु० ॥१८॥
किसन नील कापोत द्रव्य लेश्या (में),
साधुपणो शुद्ध भावे जाणो ।
छे लेश्या तिण लेखे कहिये,
भावे तो तीनों ही शुद्ध पिछाणो ॥अनु० ॥१९॥
तेथी छे लेश्या द्रव्य कहिये,
भावे तो तीनों ही शुद्ध पिछाणो ।
कषायकुशील अरु संजम मांहीं,
भाव खोटी लेश्या मत ताणो ॥अनु० ॥२०॥
छेदोस्थापन अरु सामायिक,
संयम छे लेश्या द्रव्य जाणो ।
यो ही न्याय मनपर्यवज्ञाने,
भावे तो तीनों ही शुद्ध पिछाणो ॥अनु० ॥२१॥
इण न्याय द्रव्य छे लेश्या पावे,
ज्ञानी न्याय जुगतसे बतावे ।
डाहा होय विवेक सूँ तोले,

खोटी त्राणसे समकित जावे ॥अनु० ॥२२॥

पुलाक पड़िसेवन कुशील ने,

मूल उत्तरगुण दोषी भाष्या ।

ते (पिण) तीनूँ भाव शुद्ध लेश्यामें,

मूलपाठे सूतर में दाख्या ॥ अनु० ॥२३॥

वुक्कस पिण उत्तरगुण दोषी,

तीन भावलेश्या तिहां पावे ।

कषायकुशील तो दोष न सेवे,

खोटी लेश्यां रा भाव क्यों आवे ॥अनु० ॥२४॥

कल्पातीत अरु आगम बिहारी,

छद्मस्थपणे प्रभु पाप न कीनो ।

आचारंग नवमें अध्ययने,

केवलज्ञानी परकाश यूं दीनो ॥अनु० ॥२५॥

अनुकम्पा कर गोशालो बचायो,

मन्दमती रे मन नहीं भायो,

अछती छे लेश्या प्रभु रे लगाई,

अनुकम्पा-द्वेषी आल चढ़ायो ॥अनु० ॥२६॥

५—जिनऋषीका अधिकार

(कहे) "जिनऋषि यह अनुकम्पा कीधी,
रेणादेवी सामो तिण जोयो।
शैलक यक्ष हेठो उतार्यो
देवी आय तिण खड्ग में पोयो।
आ अणुकम्पा सावज्ज जाणो"

(अनु० ढाल १ गा० १०)

सूत्र विरुद्ध यों बात उठा केई,
अनुकम्पा सावज बतलावें।
अनुकम्पा पाठ तिहां नहिं चाल्यो,
अज्ञानी झूठरा गोला चलावे ॥अनु०॥१॥
'कलुणरसे रयणा जद बोली,
जिन ऋषियां रे कलुणरस आयो।
कलुण पाठ ज्ञातासूतरमें,
तो पिण भोला भरम फैलायो ॥अनु०॥२॥
कलुणरस अनुयोग दुवारे,
आठवों (रस) पाठमें वीर बतायो।

प्रिय रो वियोग हुवां यो आवे,
ऐसो श्री गणधरजी गायो ॥ अनु० ॥३॥
करुण रस जिण ऋषियां रे आयो,
रेणादेवी रा वियोग थी पायो।
दोनूँ सूतर रो पाठ सरीखो,
लक्षण से भी तुल्य दिखायो ॥ अनु० ॥४॥
मोह कलुणरसमें अनुकम्पा,
भेषधार्‌यां ए झूठी गाई।
शंका होवे तो सूतर देखो,
मत पड़ज्यो झूठा फंद मांई ॥ अनु० ॥५॥
ठाणाङ्ग दशमें ठाण रे मांहीं,
अनुकम्पा-दान प्रथम बतायो।
कालुणी दान रो पाठ छे न्यारो,
अर्थ दान्यां रो न्यारो दिखायो ॥ अनु० ॥६॥
'कलुण' (रस) 'अनुकम्पा' एक नहीं छे,
"ज्ञातासूत्र" रो भेद बतायो।
अनुकम्पा, दया, रक्षा कहिये,
कालुण (रस) दुःख वियोगमें गायो ॥अनु०॥७॥
रात-दिवस ज्यों दोनों ही न्यारा,

तो पिण मंद भोला भरमावे ।
कलुणरस तो मोह मलिन है,
अज्ञानी अनुकम्पामें लावे ॥ अनु० ॥८॥
आश्रवद्वार तीजा रे मांहीं,
दीन आरत रे कलुण बतायो ।
दूजे अंग प्रथम श्रुतखंधे,
घणा अध्ययन में योहीज आयो ॥ अनु० ॥९॥
शोक आरत भावे कलुणरस है,
सूतर साख लेवो तुम धारी ।
कलुणरस अनुकम्पा, करुणा,
एक सरीखी न सूत्र उचारी ॥ अनु० ॥१०॥

६—हिरणागमेषी का अधिकार

हिरणगमेषि (देव) अनुकम्पा करने,
देवकि-बालक सुलसा ने दीधा ।
चर्मशरीरी छव जीव बचिया,
संजम पालि ने होगया सिद्धा ॥ अनु० ॥१॥
मन्दमत्यां रे मन नहिं भाया,

(तासूँ) हिरणगमेषी ने पाप बतावे ।
जावण आवण रो नाम लेई ने,
अनुकम्पा ने सावज गावे ॥ अनु० ॥२॥
जावण आवण री तो किरिया न्यारी,
अनुकम्पा (तो) परिणामां में आई ।
जिन वन्दन देव आवे ने जावे,
[तो] वंदना सावज जिन ना बताई ॥अनु०॥३॥
आवण जावण [से] अनुकम्पा जो सावज,
[तो] वन्दना ने पिण सावज कहणी ।
[जो] आवण जावण वंदना नहिं सावज,
[तो] अनुकम्पा पिण निरवद वरणी ॥अनु०॥४॥
मंदमती ऊंधी श्रद्धा सूं,
अनुकम्पा सावज बतलावे ।
वन्दना ने तो निरवद केवे,
जाणे म्हारी पूजा उठजावे ॥ अनु० ॥५॥
देव करी सुलसा री करुणा,
ते थी छेहूं बाल बचाया ।
कंस रा भय थी निरभय कीधा,
अभयदान फल देवता पाया ॥ अनु० ॥६॥

७—अधिकार हरिकेशी मुनिका

हरिकेशी मुनि गोचरी आया,
जांरी निन्दा ब्राह्मण कीनी।
जक्षदेव अनुकम्पक मुनि रो,
शास्तरयुक्त समझ बहु दीनी ॥ अनु० ॥१॥
अनुकम्पा थी धर्म बतायो,
मूलपाठ रा वचन है सीधा।
मन्द कहे "अनुकम्पा रे कारण,
रुधिर वमन्ता ब्राह्मण *कीधा" ॥अनु०॥२॥
अनुकम्पा रा द्वेषी वेषी,
मिथ्या बोलता मूल न लाजे।
ज्ञानी सूतरपाठ दिखावे,
अज्ञानी जब दूरा भाजे ॥ अनु० ॥३॥

---

* —जैसे कि वे कहते हैं: —
यक्ष रे पाड़े हरिकेशी आया, अशनादिक त्याने नहीं दीधा।
यक्ष देवता अनुकम्पा कीधी, रुधिर वमंता ब्राह्मण कीधा ॥
(अनु० ढाल १ गाथा १३)

सांचा हेतू जक्ष सुणाया,
[जद] ब्राह्मण बालक मारण आया।
राजकुमारी भद्रा वारया,
तो पिण मूढ़ नहीं शरमाया ॥ अनु० ॥४॥
यक्षदेवने कोप जो आयो,
कष्ट देई ब्राह्मण समझाया।
कूटनहार ने जक्षे कूटया,
शास्तर मांहे प्रगट बताया ॥ अनु० ॥५॥
अनुकम्पा थी तो वचन उचारया,
पिण न दया थी ब्राह्मण मारया।
भवजीवां ! तुमें सांची शरधो,
अज्ञानी खोटा वचन उचारया ॥ अनु० ॥६॥

८—अधिकार धारणीकी गर्भ विषयक अनुकम्पा

गर्भ री अनुकम्पा करी राणी,
धारणी अजतना सहु टारी।
जयणा सूं बैठे ने जयणा सूं उठे,
खाटामोटा भोजन तजे भारी ॥ अनु० ॥१॥

आपने गमता भोजन छोड्या,
गर्भ हितकारी भोजन करती।
चिन्ता, भय, अरु शोक, मोहादी,
दुखदाई जाणी परहरतो ॥ अनु० ॥२॥
ऊंधो अर्थ करी कहे मूरख,
"धारणीजी अनुकम्पा आणी।
आपने गमता भोजन खाया *"
झूठी बात कुगुरु मुख आणी ॥३॥
अनुकम्पा कर भय, मोह त्याग्यो,
या तो पन्थी दोनी छुपाई।
भोजन पण मनमान्या न खाया,
मनमान्या खायारी झूठी उठाई ॥ अनु० ॥४॥
मोह त्याग्यो अनुकम्पा रे अर्थे,
तिणने मोह अनुकम्पा बतावे।
मत अन्धा होय झूठा बोलो,

---

* जैसा कि वे कहते हैं: —
मेघकुमार गर्भ माँहीं हूँता, सुख रे तई किया अनेक उपायो।
धारणी राणी अनुकम्पा आणी, मनगमता अशनादिक खायो ॥
आ अनुकम्पा सावज जाणजे ॥
(अनु० ढा० १ गा० १४)

आँधा री लारे आंधा जावे ॥ अनु० ॥५॥

श्रावक रा पहला व्रत मांई,

पञ्चम अति चारे प्रभु केवे ।

अशन समय भात पाणी न देणो,

[तो] अतिचार लागे व्रत नहिं रेवे ॥अनु०॥६॥

भातपाणी छोड़ाया हिंसा,

[तो] गर्भ भूखे मारया किम धर्मी ।

अज्ञानी इतनो नहिं सोचे,

गर्भ रा दया उठाई अधर्मी ॥ अनु० ॥७॥

जो बालक ने नाय चुँखाणे,

[तो] पेहलों व्रत श्राविका रो जाणे ।

[जो] गर्भने बाई भूखों मारे,

तो तप-व्रत तिण रे किम थावे ॥ अनु० ॥८॥

गर्भवती ने तपस्या कराणे,

उपवासादि रो उपदेश देणे ।

गर्भ मरे तिण री दया नांहीं,

प्रगट अधर्म ने धर्म वे केवे ॥अनु०॥९॥

गर्भ आहार माता रे आहारे,

'भगवती' मांहीं वीरजी भाषे ।

आहार छोड़ावे ते भूखा मारे,
वेषधारी दया दिल नहिं राखे ॥अनु०॥१०॥
गर्भ अनुकम्पा धारणी कीनी,
सूतर माहीं गणधर गाई ।
दया रहित रे [तो] दाय न आई,
ज्ञानी अनुकम्पा आछी बताई ॥अनु०॥११॥
गर्भ ने दुःख न देणो कदापि,
समदृष्टी अनुकम्पा राखे ।
दोपद चौपद भूखा न मारे,
पहले व्रतमें जिनवर भाखे ॥अनु०॥१२॥

९—अधिकार कृष्णाजीकी वृद्ध विषयक अनुकम्पा

श्री कृष्ण नेम ने वन्दन चाल्या,
बूढ़ा ने अति ही दुखियो जाणो ।
जीर्ण जरा थी थर-थर कम्पे,
देखि ने मन अनुकम्पा आणी ।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥
उणरी ईंट श्रीकृष्ण उठाई,

बूढ़ा रे घर निज हाथ पुगाई ।
दुरगुण नाशक सद्गुण भासक,
अनुकम्पा री रीत दिखाई ॥१॥
मोह-अनुकम्पा इणने बतावे,
अज्ञानी ऊंधा हेतु लगावे ।
स्वार्थ रहित अनुकम्पा धरम ने,
सावज कहि कहि जन्म गमावे ॥२॥
ईंट तोकण जिन आज्ञा न देवे,
तिन सूं अनुकम्पा सावज केवे ।
ऊंधी श्रद्धा थी ऊंधो सूझे,
तिणथी कुहेतू बहुला देवे ॥४॥
अनुकम्पा परिणाम में आई,
ईंट तोकण किरिया छे न्यारी ।
[जो] नेमवन्दन री मनसा जागी,
[तव] चतुरंगी सेना सिणगारी ॥५॥
सेन्या री जिन आज्ञा नहिं देवे,
वन्दनभाव तो निर्मल जाणे ।
(तिम) ईंट तोकण री आज्ञा न देवे,

(पिण) अनुकम्पा जिन आछो बखाणे ॥६॥

बन्दनकाजे सेना चलाई,

अनुकम्पा काजे ईंट उठाई ।

सेना चले बन्दन नहिं सावज,

अनुकम्पा ईट थी सावज नांई ॥७॥

ऊंच गोत्र बन्दन फल भाख्यो,

ऊत्तरोध्ययन १ गुणतीस रे मांहीं ।

अनुकम्पा फल सातावेदनी,

भगवतिसूत्रे २ जिन फुरमाई ॥८॥

दोनों कारज आछा जाणों,

समदृष्टी रे आज्ञा मांई ।

भवछेदन (संसार पड़त) सकाम निर्जरा,

ज्ञातादिक सूतर में आई ॥९॥

पुण्य बंधे अज्ञानीजन रे,

अकाम निर्जरा ते पिण पावे ।

आगे चढ़तां समकित पावे,

जद वो जिन आज्ञा में आवे ॥१०॥

दुखिया दीन दरिद्री प्राणी,

पंचेंद्रिय जीवां ने मारण धावे।
मांस अर्थी भूख दुःख रा पीड़्या,
(वां)अज्ञानी जीवांने कोण चेतावे ॥११॥
दयावन्त [वाने] उपदेशे वारया,
अचित वस्तु देई कारज सार्‍या।
पंचेन्द्रिय जीव रा प्राण बचाया,
हिंसक हिंसादि पाप ज टार्‍या ॥१२॥
मूरख इणमें पाप बतावे,
ज्ञानी पूछे जब जाब न आवे।
जो हिंसा उपदेशे छुड़ावे,
वाहिज साज देई ने छुड़ावे ॥१३॥
हिंसा छूटी दोनों हि ठामे
जिण में फर्क न दीसे कांई।
साज सूँ हिंसा छुटी तिण मांहीं,
एकान्तपाप री कुमति ठेराई ॥१४॥
साज सूं हिंसा छुट्या मांहो पापो,
तो घोड़ा दोड़ावण* जुक्ति थी लायो।

* जैसा कि वे कहते हैं :—
आच राजाने इम कहै, सांभलज्यो महारायजी।

चित श्रावक परदेशी राय ने

केसी समण जद धर्म पतायो ॥१५॥

घोड़ा दोड़ाई राजाने ल्यायो,

इण सें तो धर्मदलाली बतावे ।

(तो) साज देई ने हिंसा छुड़ावे,

(जामें) पाप बतावतां लाज न आवे ॥१६॥

सुबुद्धि प्रधान थो जितशत्रु राजा,

पाणी परिचय थो समझाणो ।

या पण धर्म दलाली जानो,

आरंभ हूवो ते अलग पिछाणो ॥१७॥

गाजर मूला रो नाम लेई ने,

कुमती भोलां ने भरमावे ।

घोड़ा देश कमोद ना, में ताजा किया चगायजी ।

धर्म दलाली चित करे ॥१॥

किणविध ल्यावे राय ने, सांभलज्यो नरनारीजी ।

चित्त सरीखा उपगारिया; विरला इण संसारीजी ॥२॥

आप मोनें सूंप्या हूंता, ते देख लेज्यो चोड़ेजी ।

अवसर वरते एहवो, घोड़ा किसड़ाक दोड़ेजी ॥धर्म०॥३॥

(परदेशी राजाकी संघ ढाल—१०)

अचित देई मूलादि छुड़ावे,
जारी तो चर्चा मूल न लावे ॥१८॥
अचित साहाय अनुकम्पा जो होवे,
(तो) सचित समदृष्टि क्यांने खवावे ।
ऊंधा हेतु अणहूंता लगावे,
ज्ञानी रे सामे जवाब न आवे ॥१९॥

१०—अधिकार धूपमें पडे हुए जीवोंके सम्बंधमें ।

तड़के तड़फत जीवां ने देखी,
दया लाय कोई छाया* में मेले ।
अज्ञानी तिण में पाप बतावे,
खोटा दांव कुगुरु यों खेले ।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ १ ॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

ऊपाड़ी जो मेले छाया, असंजती री वियावच लागे ।
या अनुकम्पा साधु करे नो, ज्यारा पांचों हि महाव्रत भागे ।
आ अनुकम्पा सावज [illegible]णो ॥ १८ ॥

भगवति पन्दरहवें शतक में,
वीर प्रभू गौतम ने भाखे
तप तपे वैसायण तपसी,
बेले-बेले पारणो राखे ॥ २ ॥
सूर्य आताप ना लेतां जूँदां,
ताप लाग्या सूं नीचे पड़ता ।
प्राणी, भूत, जीव दया भाव थी,
त्यांने उठाई मस्तक धरता ॥ ३ ॥
बाल तपस्वी दया जूंवां पर,
तड़का सूं लेकर मस्तक मेले ।
जैन रो भेष ले पाप बतावे,
दया उठावण माया खेले ॥ ४ ॥
तप तो तिणरो निरवद्य केवे,
अनुकम्पा सावज कहि ठेले ।
अनुकम्पा प्रभु निरवद्य भाखो,
ज्ञानी न्याय सूतर से मेले ॥ ५ ॥
कीड़ा-मकोड़ाने छाया में मेले,
असंजती री न्यावच केवे ।

भेषधारी कहे "साधु मेले तो,

त्यांरा पांचो ही (महा) व्रत नहिं रेवे" ॥ ६ ॥

चतुर पूछे कोई भेषधारी ने,

जूं वां असंजति ने थे पोखो ।

नीचे पड़ी ने पाछो उठावो,

महाव्रत रो थारे रह्यो न लेखो ॥ ७ ॥

दशवैकालिक चौथे अध्ययने,

त्रसजीवां अनुकम्पा काजे ।

साधुने प्रभुजी विधी बतावे,

मूलपाठ में इणविध राजे ॥ ८ ॥

उपासरा वलि उपधी मांई,

त्रसजीव देख दया दिल लावे ।

रक्षा रे ठामे त्यां ने मेले,

दुःख रे ठाम नहां परठावे ॥ ९ ॥

जीव बचाया जो महाव्रत भागे,

(तो) शास्त्रमें आज्ञा प्रभु किम देवे ।

'भारीकर्मा लोगांने भोल्ट करण ने'

दया में पाप मिथ्याती केवे ॥ १० ॥

११—अधिकार अभयकुमारकी अनुकम्पाका

अभयकुंवर तप तेलो करने,
ब्रह्मचर्य सहित पोसो कर बैठो।
पूरब संगति देव ने समरथ्यो,
मन एकाग्रह राख्यो सैंठो।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ १ ॥
तीजे दिन रे कष्ट प्रभावे,
आसण चलता देवता देखे।
तेला री अनुकम्पा आई,
गुणरागी हुवो तप रे लेखे ॥ २ ॥
"अनुकम्पा कर बरसायो पानी,"
मिथ्यामती एवी झूठी भाखे।
अनुकम्पा तो तप री आई,
इणरो तो नाम छिपाई ने राखे ॥३॥
जल बरसावण कारज न्यारो,
तिहां अनुकम्पा रो नाम न आयो।
झूठो नाम सूतर रा लईने,

अनुकम्पा रो धर्म उठायो ॥४॥

(तप) संयमीरी अनुकम्पा करे कोइ,

समण माहाण पर प्रेम ज लावे ।

उत्तर वैक्रिय कर गुणरागी,

दर्श उमंग धरी देव आवे ॥५॥

दर्शण अनुकम्पा गुण राग तो,

निर्मल श्रीमुख जिन फुरमावे ।

वैक्रिय करण आवण जावण री,

क्रिया तो तिण थी न्यारी बतावे ॥६॥

क्रिया योगे गुण-राग न सावज,

तिम अणुकम्पा सावज नाहीं ।

सांचो न्याय सुणि मूढ़ भड़के,

खोटा पक्ष री ताण मचाई ॥७॥

———

१२—अधिकार पशु बांधने छोड़नेक

कहे "साधु थी अनेरा त्रसजीवां ने,
अनुकम्पा थी बांधे ने छोड़े *।
चौमासी दण्ड साधु ने आवे,
गृहस्थ रे (पिण) पापरो बन्ध चौड़े" ॥१॥
अनुकम्पा सावज इण लेखे,
अज्ञानी यों बात उचारे ।
'निशिथ' पाठ रो अर्थ ऊंधोकर,
भोला डुबाया मिथ्या मझधारे ।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥२॥
न्याय सुणो हिवे निशिथ पाठ रो,
"कोलूणवड़िया" त्रस जो प्राणी ।

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

साधु विना अनेरा सर्व जीवां री,
अनुकम्पा आणे साधु बांधे बंधावे ।
तिण ने निशीथ रे बारहवें उद्देशे,
साधु ने चौमासी प्रायश्चित आवे।
आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥
(अ० ढा० १ गा० २२)

डाभमुंज घरमादि रे फांसे,
बांधे न छोड़े सूतर री वाणो ॥३॥
डाभ चाम लक्कड़ रा फांसा,
साधु रे पास में रेवे नाहीं ।
(तो) साधु इण फांसे किम बांधे,
पण्डित न्याय तोलो मनमाहीं ॥४॥
चूरणी भाष्यमें न्याय बताओ,
सेजातर रा घर री या वातो ।
जिणरी जागामें साधु उतरिया,
तहां ये जोग मिले साक्षातो ॥ ५ ॥
साधु आचार सेजातर न जाणे,
जद वो साधु ने घर संभलावे ।
खेत खला रे कामे जातां,
बांधण छोड़ण पशु रो बतावे ॥ ६ ॥
साधु कहे हम बांधां न छोड़ां,
गृहस्थ रा घर रीचिन्ता न लावे ।
तब तो मुनि ने प्रायश्चित नाहीं,
बांधे छोड़े तो अनुकम्पा जावे ॥७॥

विशिष्ट ओगेणावन्त गवादिक,
त्रसजीवां रो अर्थ पिछाणो।
चूरणी भाष्य में अर्थ यो कीनो,
जूना केई टब्बा में जाणो ॥८॥
द्वीन्द्रियादिक जीव तरस रो,
अशुद्ध टब्बा में अर्थ बतायो।
यो अर्थ मिलतो नहिं दीखे,
तिणरो न्याय सुणो चित चायो ॥९॥
लट, कीड़ी ने माखी, माछर,
द्वान्द्रियादिक जीव पिछाणो
(जाने) चाम बेंत फांसे बांधण रो,
अर्थ करे ते,मन्दमति जाणो ॥१०॥
अशुद्ध टब्बा री ताण करीने,
नाहीं हृदय सूँ न्याय विचारे।
"टीका में नहीं तो टब्बा में क्यां थी"
पोते पण एहवी वाणी उच्चारे ॥११॥
यो ही न्याय यहां पिण जाणो,
टीका विरुद्ध टब्यो मत ताणो।

भाष्य चूरणी थी मिले ते तो सांचो,
. विपरीत तो विपरीत बखाणो ॥१२॥

'कोलुण बड़िया' सूतर पाठ रो,
चूरणी भाष्य थी अर्थ विचारो ।

बांध्या छोड़्या अनुकम्पा न रेवे,
दोष लागे कींनो निरधारो ॥१३॥

कुण कुण दोष बांधण सें लागे,
भाष्य, चूरणी टब्बा में देखो ।

आपणी पर री घात ज होवे,
तिणरो बतायो इण विध लेखो ॥१४॥

बांध्या थी पशु पीड़ा पावे,
आंटी खाय रखे मर जावे ।

अन्तराय बांध्या थी लागे,
तड़फड़तो अति ही दुःख पावे ॥१५॥

पर री विराधना या बतलाई,
साधु घात री हिवे सुणो वातो ।

सींग थी मारे ने खुर थी चांपे,
कोप चड़्यो करे मुनि री घातो ॥१६॥

लोकां में पिण लघुता लागे,
साधू होकर ढांडा बांधे ।
इण कारण चौमासी प्राछित,
(पिण) अज्ञानी तो ऊंधी सांधे ।।१७।।

किण कारण मुनि छोड़े नांहीं,
तिणरो विवरो भाष्य में देखो ।
छोड़्या वह परजीवां ने मारे,
कूवा खाड़में पड़वा रा लेखो ।।१८।।

चोर हरे अटवी में जावे,
सिंहादिक छूटा ने मारे ।
इत्यादि हिंसा रा दोष बताया,
साधू तो चोखो चित धार ।।१९।।

छूटा सूं प्राणी दुखिया होस ,
तो दयावान छोड़न नहीं चावे ।
साधु तो अनुकम्पा रा सागर,
ते छोड़ण मन में किम लावे ।।२०।।

(जो) बांधे छोड़े अनुकम्पा न रेवे,
तिण थी चौमासी प्राछित आवे ।

करुणा, दया, शान्ति, ऋषि चावे,
तिण रो दण्ड मुनी नहिं पावे ॥२१॥
अनुकम्पा लायां रो प्राछित केवे,
झूठा नाम सुतर रा लेवे।
भाष्य, सुतर, चूरणि, टब्बा में,
कठेहि न चाल्यो तो पिण केवे ॥२२॥
अनुकम्पा रा द्वेषी वेषी,
झूठा नाम लेता नहिं लाजे।
अज्ञान अंधेरे स्याल ज्यों कूके,
ज्ञान प्रकाशे डरकर भाजे ॥२३॥
खाड़ में पड़तां ने अग्नि में जलतां,
सिंह थी खाता साधू जाणे।
लाय दया बांधे छोड़े तो,
प्राछित नाहीं अर्थ प्रमाणे ॥२४॥
प्राचीन भाष्य अरु चूरणि में,
करुणानुकम्पा करणी बताई।
मरतां जाण बांधे अरु छोड़े,
इणविधि में कछु प्राछित नाहीं ॥२५॥

त्रस अर्थ बेन्द्रियादिक करने,
दया थी बांध्या दोष बतावे ।
(पोते) पाणी में माखी ठर मुरझाई,
कपड़ा में बांध ने मूर्छा मिटावे ॥२६॥
मूर्छा मिट्यां सूँ छोड़ उड़ावे,
तिण में तो ते पिण धर्म बतावे ।
(तो) अनुकम्पा थी बांध्या छोड्या में,
पाप परूप के भेष लजावे ॥२७॥
साधू पण त्रसजीव कहीजे,
कारण करुणा थी बांधे ने छोड़े ।
भेषधार्यां रे अर्थ प्रमाणे,
पाप हूँसी वांरी शरधा रे जोड़े ॥२८॥
"साधू ने करुणा थी बांध्या छोड़्या में,
धर्म हुवे" यूँ ते पिण बोले ।
अर्थ कहो यह क्यां थी लाया ?
सूतर पाठ में तो नहिं खोले ॥२९॥
तब तो कहे म्हें जुगती से केवां,
पण्डित त्यां ने उत्तर देवे ।

"भाष्य चूरणि" "टब्बा" री युक्ति,
क्यों नहिं मानो ? सुगुरु यों केवे ॥३०॥

मन रे मते मतहीणा बोले,
शुद्ध-परम्परा सूत्र ने ठेले।

माखी ने तो बांधे अरु छोडे,
दूजा जीवां री कुयुक्ति क्यों मेले? ॥३१॥

सूत्र निशीथ उद्देशे द्वादश,
इणरे नाम थी द्वन्द मचायो।

तिण कारण यो मैं कियो खुलासो,
सूत्र रो सांचो अर्थ बतायो ॥३२॥

जिण बांध्या अनुकम्पा न रेवे,
तिण रो प्रायश्चित निश्चय जाणो।

बांध्या छोड़यां जीव बचे तो,
दण्ड नहीं तजो खेंचाताणो ॥३३॥

१२—अधिकार व्याधिमिटावरा विषयक

व्याधि बहुत कोढ़ादिक सुण ने,
वैद्य अनुकम्पा तिणरी लावे।

प्रासुक औषध दुःख मिटावे,

निर्लोभी ने पिण पाप बतावे।
अनुकम्पा सावज्ज मत जाणो ॥१॥
दुःख न देणो तो पुन में बोले,
दुःख मिटावा में पाप बतावे ।
दुःख मिटायो तिण दुःख न दीधो,
मन्दमती क्यों पाप लगावे ॥२॥
जैन रा देखो अङ्ग उपाङ्गो,
वेद पुराण कुरान में देखो ।
दुःख न देणो अरु दुःख मिटाणो,
दोनां रो शुद्ध बतायो लेखो ॥३॥
दुःख मिटावा में पाप घणेरो,
मन्दमती विन दूजो न बोले ।
घोर अंधारो हिरदा में छायो,
भोला ने नाख दिया झकझोले ॥४॥
दुख देई कोई दुःख मिटावे,
तिण रो नाम तो मुख पर लावे ।
दुःख दिया विना दुःख मिटावे,
इण रो तो नाम मन्द छिपावे ॥५॥

साधू थी दूजा ने साता जो देवे,
पाप लागे अज्ञानी केवे।
नारिभोग दृष्टान्त देई ने,
दुर्गुणि केई मिथ्यामत सेवे ॥6॥
नारिभोगे पंचेन्द्रिय हिंसा,
मोह उदेरणा दोनां रे होवे।
यो दृष्टान्त दया (अनुकम्पा) रे जोड़े,
जो देवे वो भव-भव रोवे ॥7॥
रोग छुड़ावण तिरिया सेवण,
दोनां ने कोई सरीखा केवे।
त्यां दुर्गुण रो भेद न जाण्यो,
खोटा हेतु कुपन्थी देवे ॥8॥
रोग तो वेदनीं कर्म उदय में,
नारिभोग मोहकर्म में जाणो।
रोग मिटाया दुःख मिट जावे,
नारिभोग मोह बँधवा रो ठाणो ॥9॥
रोग मिटावामें पाप घणेरो,
नारीभोग समान बतावे।

माता री भोग अरु रोग मिटावण,
तिणरी श्रद्धा में सरीखो थावे ॥१०॥
कोई माता जेन री रोग मिटावे,
कोई तिण थी भोग कुकर्मी चावे ।
दोनों पापकर्म रा कर्त्ता;
तुल्य कहे ते धर्म लजावे ॥११॥
लब्धिधारी री लब्धि प्रभावे;
रोग मिटे सूतर में बतायो ।
[पिण] लब्धिधारी मुनि रे परितापे;
पाप बंधे यो कठेहि न आयो ॥१२॥
दुःख छुटे मुनि रे परतापे;
या तो बात सभी जग जाणे ।
पर-स्त्री पाप मुनि परतापे;
ऐसी तो कोई मूरख माने ।।१३।।
दुःख मिट्यो दुर्गुण में थो केवो;
तो साधु प्रतापे दुर्गुण मानो ।
साधु थी दुर्गुण वधतो न समझो,
तो रोग मिट्यो दुर्गुण में न जानो ॥१४॥

जिन जिन देश तीर्थङ्कर जावे,

सौ-सौ कोसां रो दुःख मिट जावे।

धान (रो) उपद्रव मूल न होवे,

'ईति' मिटण अतिशय यो थावे ॥॥१५॥

मिरगी रे रोग मनुज बहु मरता,

जिनजी गया मिरगी नहिं रेवे,

लाखों मनुष्य मरण थी बच्चिया,

मिथ्याती इणने दुर्गुण केवे ॥ १६ ॥

देश री सैन्या देशने मारे,

स्वचक्री नृप रो भय थावे।

ए गुणतीस अतीसे प्रभावे,

भीति (भय) मिटे जन शान्ति पावे ॥ १७॥

'पर' राजा री सेना आई,

देश लूटे वो दुःख अति देवे।

प्रभु परतापे भय मिट जावे,

तीस अतिशय नृनर केवे ॥ १८ ॥

अति वर्षा बहु जन दुःख पावे,

नदी री बाढ़ जन घबरावे।

जिण देशे श्री जिनजी विराजे,

तिण देशे अति वृष्टि न थावे ॥ १९ ॥

विन वृष्टी दुख जगमें मोटो,

दुष्काले होवे धर्म रो टोटो।

अतिशय चौतिश में प्रभुकेरे,

सुभिक्षे शान्ती सुख मोटो ॥ २० ॥

अनरथसूचक रक्त री वृष्टि,

बहु उत्पात हुवा जिण देशे ।

चिन्तातुर दुखियो अतिभारी,

कहो हिवे शान्ती होवे कैसे ? ॥ २१ ॥

तिण काले श्री जिनजी पधारया,

विघ्न तुरत तिण देशांरा टलिया ।

परतख (प्रत्यक्ष) गुण जिनजी रे जोगे,

जय जय बोले जन सहु मिलिया ॥ २२ ॥

खाश, स्वांस, ज्वर, कोढ़, भगन्दर,

त्रिविध-व्याधि जिण देशे आई ।

प्रभु पग धरतां व्याधि न रेवे,

तत्क्षण शान्ती देशमें छाई ॥ २३ ॥

"समवायंग चौंतीस" में देखो,
यो वृत्तान्त तो पाठमें गायो।
सौं-सौ कोसां उपद्रव टलनो,
केवल ज्ञानी आप बतायो ॥२४॥
टलियो उपद्रव दुर्गुण जाणां,
तो प्रभुजी रा जोग सूँ दुर्गुण मानो।
प्रभु जोगे दुर्गुण नहिं होवे,
तो मिटियो उपद्रव गुणमें बखानो ॥२५॥
आरत रुद्र जीवां रा टले अरु,
प्रभु ऊपर शुद्ध भाव ज आवे।
परतख लाभ यो दुःख मिट्या सूँ,
प्रभु अतिशय गणधर फरमावे ॥२६॥
"रायपसेणी" सूतर में देखो,
चित्त "केशीमुनिजो" ने बोले।
परदेशी ने धर्म सुणाया,
किण ने गुण होसी विवरो खोले ॥२७॥
दोपद चौपद जीवांने बहुगुण,
समण माहण भिखारी रे जाणो।

देश ने प्रभुजी बहु गुण होसी,

तिण कारण प्रभु धर्म बखाणो ॥२८॥

जीव देश अरु समण भिखारी (रो),

राजा थी यांरो दुःख मिट जासी।

आरत मिटसी गुणमें भाख्यो,

जाण्यो जीव घणा सुख पासी ॥२९॥

तिम रोग आरत मिटियो पिण गुण में,

भव जीवां! शङ्का मत आणो।

विन स्वारथ थी वैद्य मिटावे,

तो तिण ने गुण (पिण) निश्चय जाणो ॥३०॥

वैद्य स्वारथ बुद्धि आरम्भ ने,

गुण रो मुनिजन नांय बखाणे।

पर-उपकारी दुःख मिटावे,

तिण में एकंत पाप न जाणे ॥३१॥

आरम्भ कर कोई (मुनि) वन्दन जावे,

अथवा स्वारथ बुद्धी आणे।

आरम्भ स्वारथ गुणमें नांहीं,

वन्दन भाव तो गुण में जाणे ॥३२॥

शुद्ध भाव अरु विन आरम्भ थी,

मुनि वन्द्या अधिको फल पावे।

तिम कोई रोगी रो रोग मिटावे,

(तो) वैद्यादिक गुण रो फल पावे ॥२३॥

१४—अधिकार साधुकी लब्धिसे साधु की प्राणरक्षाका

लब्धिधारी रा 'खेलादिक' सूँ,

सोले रोग शरीर सूँ जावे।

साधू ने रोग सूँ मरता बचावे,

(तो) ज्यां पुरुषांने भी पाप* बतावे।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥

पाप अठारह प्रभुजी भाख्या,

---

* जैसा कि वे कहते हैं :—

लब्धिधारी रा खेलादिक सूँ,

सोलह ही रोग शरीर सूं जावे ॥

वले जाणे इण रोगां सुं साधू मरसी,

अनुकंपा आणी नहीं रोग गमावे।

आ अनुकंपा सावज जाणो ॥

(अनु० ढा० १ गा० २५)

अनुकम्पा पाप कठेहि न चाल्यो।
घेटा धर्मने भ्रष्ट करण ने,
तो पिण घोचो कुगुरां घाल्यो ॥२॥
लब्धिधारी रा खेल रे फरसे,
साधु रा रोग मिट्यां कुण पापो।
साधू बचिया रो पाप बतावो,
तो खाणा-पीणा में धर्म क्यों थापो ॥३॥
लब्धिधारी रा शरीर रे फरसे,
रोग सूँ मरतो साधु बचियो।
लब्धिधारी ने पाप बतावे,
कुगुरु खोटो पाखण्ड रचियो ॥४॥
गुरु रा चरण शिष्य नित फरसे,
आवश्यक अध्ययन तीजा देखो।
देह फरसिया धर्म बतायो,
आनन्द चरण फरसियां रो लेखो ॥५॥
लब्धिधारी री काया फरसे,
धर्म तो प्रभुजी प्रगट बतायो।
फरसणवालों ने धर्म हुवो तो,

लब्धिधारी ने पाप क्यों आयो ॥६॥

उत्तराध्ययन ग्यारवें मांई,

रोगी ने शिक्षा अजोग बतायो ।

लब्धिधारी रा चरण फरस ने,

रोग मिट्या शिक्षा गुण पायो ॥७॥

रोग मिट्यां गुण चरणफरस गुण,

किणविध अवगुण कुगुरु बतावे ।

गुणसें अवगुण रा थाप करी ने,

मिथ्याती पोल में ढोल बजावे ॥८॥

१५—अधिकार मार्ग भूले हुएको साधु किस कारण रास्ता नहीं बतावे

अटवी रे मांहि गृहस्थी भूल्यां,

साधु ने मारग पूछण लागे ।

किण कारण मुनि नांहि बतावे,

"अर्थ भाष्य" में देखो सागे ।

अनुकम्पा सावज मन जागे ॥१॥

मुनि रे बताये मारग जानां,

चोर कदाचित् उणने लूटे ।
सिंहादिक श्वापद दुःख देवे,
तिण उपसर्ग थी प्राण भी छूटे ॥२॥
वा, तिण रस्ते गृहस्थी जातां,
मृग आदिक जीवां ने मारे ।
तिण कारण दयावन्त मुनीश्वर,
मार्ग बतावा रो परिचय टारे ॥३॥
इसड़ा सूत्र रा सरल अरथ ने,
अज्ञानी तो उलटा मोड़े ।
अनुकम्पा कर मार्ग बतायां,
चार मास चारित्तर* तोड़े ॥ ४ ॥
"भाष्य चूरणि" अरु मूल में देखो,

---

*-जैसे कि वे कहते हैं—
गृहस्थ भूलो ऊजड़ वन में, अटवी ने वले ऊजड़ जावे ।
अनुकम्पा आणी साधू मार्ग बतावे, तो चार महीनां रो चारित्र जावे ॥
आ अनुकम्पा सावज जाणो ।
(अनु० ढा० १ गा० २७)

अनुकम्पा रो नाम ही नाहीं ।
तो पिण अनुकम्पा रा द्वेषी रे,
झूठ बोलण री लाज न कांहीं ॥ ८ ॥
हितकारा मुनि सर्व जीवां रा,
अनुकम्पा रो प्राछित नाहीं ।
समदृष्टि तो सूतर माने,
कुगुरु री बात देवे छिटकाही ॥९॥

॥ प्रथम ढाल सम्पूर्णम् ॥

दोहा

समकित रो लक्षण कह्यो, अनुकम्पा प्रभु आप।
पापबन्ध तिण थी कहे, खोटी थापे थाप ॥१॥
अनुकम्पा साधू करे, गृहस्थ करे मन लाय।
सुकृत लाभ सहु ने हुवे, तिणमें शंका नाय ॥२॥
अनुकम्पा अभयदानने, सर्व श्रेष्ठ कह्यो दान।
"सुगडायंग" में देख लो, तज दो खैंचातान ॥३॥
साधु वन्दे साधु ने, गृहस्थ वन्दे चितचाय।
उच्चगोत्र रो फल लहे, नीचो गोत्र खपाय ॥४॥
गाड़ी घोड़ा साज सूं, गेही वन्दन जाय।
साधू तिम जावे नहीं, पण्डित! समझो न्याय ॥५॥
अनुकम्पा वन्दन जिसी, दोनां ने सुखदाय।
कारण न्यारा जाणजो, साधु गृहस्थ रे मांय ॥६॥
सावज कारण सेव ने, गेही(गृहस्थ) वन्दन जाय।
साधू, वन्दन कारणे, कल्प बिगाड़े नाय ॥७॥
तिम अनुकम्पा कारणे, कल्प न तोड़े साधु।
जणे अनुकम्पा भली, वन्दन सम निर्बाधु ॥८॥

अनुकम्पा कारण कोई (गृहस्थ)
सावज करे जो (कोई) काम।
(ते) कारण अनुकम्पा नहीं,
करुणा (अनुकम्पा) निरवद्य नाम ॥९॥

सावज कारण सेवतां, वन्दन सावज नांय।
अनुकम्पा तिमजानज्यो, निरमल ध्यान लगाय १०।

भाषा सुमती थी करे, वन्दन नो उपदेश।
तिम अनुकम्पा नो करे, मुनि रे राग न द्वेष।११।
गेही पिण समझू हुवे, विवेक मनमें लाय।
वन्दन अनुकम्पा करे, वैसो ही फल पाय।१२।
कुगुरु कूड़ी खेंचा सूं, अनुकम्पा उत्थाप।
वन्दन रा तो लोलुपी, जोर सूं मांडे थाप।१३।
कारण कारज भेद ते, कुगुरु खोले नाय।
कारण ने आगे करि, करुणा दीवि उठाय।१४।
वन्दन कारण प्रगट में, बहुविध आरंभ थाय।
कुगुरु देखे तोहि पिण; वन्दन वर्जे नाय।१५।
रत्ना री सेवा तणो, अतिशय लोभ बताय।
गृहस्थी राखे साथ में, भोजन खाता जाय।१६।

इणविध सेवा ना कही, सूतर में जिन राज।
प्राछित पिण भाष्यो प्रभु, संजम राखणकाज।१७।
खोटी सेवा थापने, लोपी जिनवर कार।
अनुकम्पा उत्थापने, डूबा काली धार।१८।
सावज कारण साधुने, वरज्या सूतर मांय।
[ते]कल्प बतायो साध रो, करुणासावज नाय।१९।
साधू कल्प रे नाम सूं भोलां ने भड़काय।
अनुकम्पा सावज कहे, खोटा चोजा लगाय।२०।
साधू ने वर्जी नहीं, अनुकम्पा जिनराज।
निज-निज कल्प संभालने, करने सारे काज।२१।
करुणा[अनुकम्पा]करणी साधने, भाखूं सूतरसाख।
भवजीवां ! तुम सांम्हलो, वीर गया छे भाख।२२।
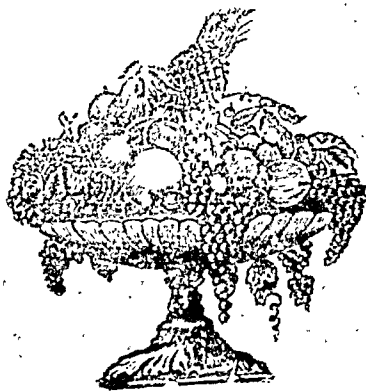
दूसरी-ढाल

१—अधिकार जीवां रो दया खातर दयावान मुनि ने बांधने छोड़ने का।

(तर्ज—हीवे सामलज्यो नरनार)

डाभ मूं जादिक रे फांसे,
गाय भैंसादि बंध्या विमासे।
जो छोड़ रखे दुःख पासे
अटवी में दोड़ी ने जासे ॥ १ ॥

रखे सिंहादिक याने खावे;
म्हारी अनुकम्पा उठ जावे।
अनुकम्पा घणी घट मांही;
तेथी मुनिवर छोड़े नांही ॥ २ ॥

छोड़्या अनुकम्पा उठ जावे,
मुनिजीने प्रायश्चित आवे।

इम बांध्या सूँ तड़फे प्राणी,
रखे मर जावे इसड़ी जाणी ॥ ३ ॥
इण कारण बांधे नांई,
अनुकम्पा घणी घट मांई ।
मरता जाणे तो बांधे ने खोले,
दोष नाहीं अर्थ यूँ बोले ॥ ४ ॥
साधु जन रा पातरा मांहीं,
चिड़ियो उन्दिर पड़ियो आई ।
भेषधारी पिण काढ़णो केवे,
बिन काढ़्या दया नहिं रेवे ॥ ५ ॥
(तो) अनुकम्पा थी छोड़्यां पापो,
एहवी खोटो करो किम थापो ।
अनुकम्पा निरवद्य जाणो,
तिणरा साधु रे नहिं पचखाणो ॥ ६ ॥
साधू पातरा सूं जीव काढ़े,
तामें धर्म कहे चोड़े-धाड़े ।
ग्रस्ती यदि जीव छुड़ावे,
पाप लागा रो हल्लो उड़ावे ॥ ७ ॥
ग्रस्ती रे मूंज रा पासा,

पशु गंध्या पावे त्रासा ।
जो उणने वो नाहिं खोले,
पाप लागे सूत्तर यों बोले ॥८॥
जो खोले तो पाप सूं बचियो,
हुवो अनुकम्पा रो रसियो ।
भेषधारी उलटी सिखावे,
ग्रस्नी (रे) छोड़्यां पाप बतावे ॥९॥
तथ उत्तम नर कोई प्राणी,
भेषधार्‍यां ने बोल्यो वाणी ।
धारे पातरिक रे मांहीं,
जीव तड़फ रयो दुःख पाई ॥१०॥
तिणने जीवनो काढ़ो के नांहीं
के मरवा देवो असंजति तांहीं ।
कहे जीवनो काढ़ां में प्राणी,
नहि काढ़्या पाप लेवो जाणी ॥११॥
साधु नहीं काढ़े तो पापी,
या तो ठीक तुमे पिण थापी ।
(जो) जीव छोड्यां में पाप न लागे,

दया धर्म रो काम है सागे ॥१२॥
तो आहती ने पाप म केवो,
छांड़ मिथ्यामत तुम देवो।

साधू उपधी सूँ जीव मर जावे,
तिणरो पाप साधू ने थावे ॥१३॥
गेही उपधी सू जीव मरजावे।
तिण रो पाप गृहस्थ पिण पावे।
साधु छोड़े तो साधु ने धर्मों,
गेही ने किम कहो पाप कर्मों ॥१४
उपकरण (पिण) दोनां रा सागे,
नहिं छोड़्या पिण पाप लागे।
साधु ने तो वतावे धर्म,
अस्ती ने कहे पापकर्म ॥१५॥
अनुकम्पा एक वतावे*

*—जैसा कि वे कहतु हैं—
जो अनुकम्पा साधु करे, तो नवा न वन्धो कर्म।
तिण माहली श्रावक करे, तो तिणने पिण होसी धर्म ॥२॥
साधू श्रावक दोनो तणी, एक अनुकम्पा जाण।
अमृत सहुने सारखो, तिणगे म करो ताण ॥३॥
(अनु० ढाल २)

साधु श्रावक री एक सिखावे ।
अमृत री उपमा देवे,
दोनों सेव्यासम सुख केवे ।१६।
जो वात खरी छे थारी,
तो यहां भेद करो क्यों भारी ।
साधूने धर्म बतावो,
ग्रस्तीने क्यों पाप लगावो । १७ ।
निज बोली रो वन्धन काँई,
मोह मिथ्या री छाक रे माहीं ।
ज्ञान केर अंजन आँजो,
अब मिथ्या बोलतां लाजो ॥ १८ ॥

२—अधिकार लाय बचानेका ।

(कहे) 'ग्रस्ती रे लागी लायो,
घर बारे निसर्यो न जायो,
बलतां जीव 'बिलबिल' बोले,
(कोई) साधू जाय किवाड़ न खोले' ॥१॥

उत्तर-(कोई) खोले तिण ने पाप बतावे,
(वली) धर्म शरध्या मिथ्यात लगावे।
नर बचिया पाप कहे मोटो,
जाँरों हिरदो हुवो घणों खोटो ॥ २ ॥
थीवरकल्पी मुनि पिण खोले,
ठाणायंग चोभंगी रे ओले।
द्वार खोल बाहर निकलणो,
थीवरकल्पी रा कल्प रो निरणो ॥ ३ ॥
पर री.........अनुकम्पा लावे,
द्वार खोल्या प्राछित नहीं आवे।
अगनी संगट्टाने मुनि टारे,
मनुजाँ ने तो साधु उबारे ॥ ४ ॥
पोते तो निकल झट जावे,
दूजाँ मरताँ री दया न लावे।
उणने तो निरदयी जाणो,
ठाणाअंग रो है परमाणो ॥ ५ ॥
अनुकम्पा रो दण्ड न आवे,
ज्ञानीजन परमारथ पावे।

अनुकम्पा री दण्ड*बतावे,
अणहूँता ही अरथ लगावे ॥ ६ ॥
भोला ने बहु भरमाया,
कूड़ा-कूड़ा अरथ बताया ।
अनुकम्पा में पाप ने गायो,
हलाहल कलियुग चलि आयो ॥ ७ ॥

अधिकार अपराधीको निरपराधी कहनेका

कोई चोर अने परदारी,
हत्या कीनी मनुज री भारी ।
अपराधी राजा ठहरायो,
मारण योग्य जगत दरसायो ॥ १ ॥
वधवा योग्यते 'वध्या' कहावे,
"वज्झापाणा" पाठमें गावे ।
मुनि मध्यस्थ भावना भावे,

---

*जैसा कि वे कहते हैं ।
अनुकम्पा किया दण्ड आवे, प्रायश्चित्त [illegible] पावे ।
निशीथरे ग्यारमें उद्देशे, जिन भाख्यो दण्ड ऐसो ॥
(अनु० ढा० २ गा०)

उत्तर-(कोई) खोले तिण ने पाप बतावे,
(वलो) धर्म शरध्या मिथ्यात लगावे।
नर बचिया पाप कहे मोटो,
जाँरों हिरदो हुवो घणों खोटो ॥ २ ॥
थीवरकल्पी मुनि पिण खोले,
ठाणायंग चोभंगी रे ओले।
द्वार खोल बाहर निकलणो,
थीवरकल्पी रा कल्प रो निरणो ॥ ३ ॥
पर री.........अनुकम्पा लावे,
द्वार खोल्या प्राछित नहीं आवे।
अगनी संगट्टाने मुनि टारे,
मनुजाँ ने तो साधु उबारे ॥ ४ ॥
पोते तो निकल झट जावे,
दूजाँ मरताँ री दया न लावे।
उणने तो निरदयी जाणो,
ठाणाअंग रो है परमाणो ॥ ५ ॥
अनुकम्पा रो दण्ड न आवे,
ज्ञानीजन परमारथ पावे।

अनुकम्पा रो दण्ड*बतावे,
अणहूँता ही अरथ लगावे ॥ ६ ॥
भोला ने बहु भरमाया,
कूड़ा-कूड़ा अरथ बताया ।
अनुकम्पा में पाप ने गायो,
हलाहल कलियुग चलि आयो ॥ ७ ॥

अधिकार अपराधीको निरपराधी कहनेका

कोई चोर अने परदारी,
हत्या कीनी मनुज री भारी ।
अपराधी राजा ठहरायो,
मारण योग्य जगत दरसायो ॥ १ ॥
वधवा योग्यते 'वध्या' कहावे,
"वज्झापाणा" पाठमें गावे ।
मुनि मध्यस्थ भावना भावे,

---

*जैसा कि वे कहते हैं ।

अनुकम्पा किया दण्ड पावे, परमारथ [illegible] पावे ।
निर्दोषरो मारणो कहे शां, जिन भाख्यो दुखारो देणो ॥
(अनु० ढा० २ गाथा)

समभाव पापी पर लावे ॥ २ ॥
बधवा योग्य मुनी नहीं केवे,
दुष्ट कर्म पे मन नहीं देवे।
अनवध्य अपराधी प्राणी,
ऐसी मुनी कहे नहिं वाणी ॥ ३ ॥
अपराधी होवे जो प्राणी,
निर अपराधी कहे किम जाणी।
दोषी ने निर्दोषीथापे,
राजनीति धर्म (ने) उत्थापे ॥ ४ ॥
दोषी ने निरदोषी बतावे,
दोष री अनुमोदना पावे।
तिण हेते मुनी मौन राखे,
'सुगडायँग' सूतर भाखे ॥ ५ ॥
मन्दमती तो ऊँधा बोले,
सूत्रपाठ हिये नहिं तोले।
(कहे)'मतमार कहें उणरो रागी,
तीजे करणे हिंसा लागी'' ॥ ६ ॥
इम ऊँधा अरथ लगावे,

जाने ज्ञानी न्याय बतावे ।
मतमार मुनि नित केवे,
तेथी "माहण" पद प्रभु देवे ॥ ७ ॥
मतमार कह्याँ पाप नाहीं,
भव्य ! समझो हिरदा रे माँहीं ।
'मतमार' में पाप जो केवे,
मिथ्यामत रो पद वो लेवे ॥ ८ ॥
साधु थी अनेरा जो प्राणी,
थापे हिंसक खेंचाताणी ।
वाने मत मारण नहि केणो,
ये कुगुरु तणा छे वेणों ॥ ९ ॥
जगजीव राखण रे काजे,
सत-शास्त्र कह्या जिनराजे ।
प्रश्नव्याकरण सूत्तर देखो,
संवरद्वारे, कह्यो जिन लेखो ॥१० ॥
चार भावना मुनि नित भावे,
ते थी संवर गुण बढ़ जावे ।
मैत्री प्रमोद करुणा जाणों,

मध्यास्था चौथी ····· वखाणो ॥ ११ ॥
मैत्रिभाव सभी पे लावे,
गुणिजन से हर्ष बढ़ावे ।
करुणा दुःखिया-जीवाँ री लावे,
यथा योग्य मिटावण चावे ॥ १२ ॥
खोटा-कर्म करे कोई जाणो,
चोरी जारी जा हत्या मन आणो ।
हिंसक क्रूर-कर्म रो कारी,
देवे दुःख जगत ने भारी ॥ १३ ॥
एवा दुष्ट देखे मुनि प्राणी,
मध्यस्थ भाव लावे गुणखाणी ।
मारण योग्य ऐसो नहि बोले,
"अवजुझा" "बचन" नहि खोले ॥ १४ ॥
वधवा योग्य कहें किम ज्ञानी,
समभाव है महा सुख दानी ।
आततायी (ने) अवज्झथ किम केवे,
लोक विरुद्ध कार्य किम सेवे ॥ १५ ॥
या मध्यस्थ भावना जाणों,

इणरो सुगडाअंग वखाणो।
दुष्ट जीवाँ रो यहाँ अधिकारो,
अध्ययन पाँचवें ज्ञानी विचारो ॥ १६ ॥
ऊँधा अरथ करी भ्रम पाड़े,
नाखे मिथ्यामत रो खाड़े।
"कहें साधु थी अनेरा प्राणी,
जाने हिंसक लेवो जाणी" ॥ १७ ॥
(कहें तिणने) मतमार कहें उण रो रागी,
तीजे करणे हिंसा लागी ॥
'मतमार' जीव नहि केणों,
ऐसा कुमति काढ़े वेणो ॥ १८ ॥
हिवे सूत्र प्रमाण पिछाणों,
सभी जीव दुष्ट मत जाणो।
क्षुद्र-प्राणी रो चाल्यो लेखो,
"ठाणायंग" सूतर में देखो ॥ १९ ॥
क्षुद्रिक अधम कह्या प्राणी,
षट् भेद कह्या ज्यांरा नाणी।
असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री,

तेउ वाउ चलो विकलेन्द्री ॥ २० ॥
दूसरी वाचना रे माँई,
सिंह बाघ वरग (ड़ा) दुःखदाई ।
दिवड़ा रीछ तिरक्ष लहिये,
षट् क्रूर प्राणी इम कहिये ॥ २१ ॥
सब जीवक्रूर मत जाणो
ठाणाअंग सूतर परमाणो ।
साधू थो अनेरा जो प्राणी,
तेने क्षुद्र कहे ते अनाणी ॥ २२ ॥
तिम दुष्ट सर्व मत जाणो,
कोई कुकर्मो ने पिछाणो ।
जिम उतराध्येन रे माँई,
भद्र प्राणी कह्या जिनराई ॥ २३ ॥
जम्बुक आदिक कुत्सित कहिये,
हिरणादिक भद्रक लहिये ।
निरअपराधी भद्रक भाखे,
सूत्र अरथ टोका री साखे ॥ २४ ॥
जो कहे साधू थी अन्य क्रूर प्राणी,

(तो) भद्रिक अर्थ री होवे हाणो।
तिम हिंसक सर्व नहिं प्राणी,
अति-दुष्ट हिंसक लेवो जाणी ॥ २५ ॥
बध्याने बध्या न बतावे,
निरदोषी कह्या दोष आवे।
या मध्यस्थ भावना भाई,
दुरगुण री उपेक्षा बताई ॥ २६ ॥
करुणारी बात यहाँ नाई,
"सुगडाअँग" टीका रे माई।
इणरो ऊँधो अर्थ केई ताणे,
'मतमार' में पाप बखाणे ॥ २७ ॥
नाम सुगडाअँग रो लेवै,
खोटी जुगत्याँ मन सूँ देवे।
तिण हेत कियो विस्तारो,
शुद्ध-श्रद्धा थी है निस्तारो ॥ २८

रोग आयाँ करे कोई खेदो ॥ ७ ॥
रोग रो वियोग जो चावे,
आरत ध्यान प्रभूजी बतावे।
और मुनियाँ रो रोग मिटावे,
ते तो आरत नाहिं कहावे ॥ ८ ॥
तिम पर-उपद्रव रो जाणो,
पाप केवे तो कुमति पिछाणो।
ज्यों वन्दना मुनि नहिं चावे,
चावे तो दूषण पावे ॥ ९ ॥
यो आपणा आसरि जाणो,
'सुगडायंग' सूत्र पिछाणो।
कोई वन्दना मुनिने देवे,
दोष तिणमें सूत्र नहि केवे ॥ १० ॥
'खेम' निरउपद्रव तिम जाणो,
पर रो वंछ्या न दोष रो ठाणो।
खेमंकर मुनी गुण कहिये,
ते वंछ्या दोष किम लहिये ॥ ११ ॥

———

६—अधिकार नौकाका पानी बतानेका

साधू बैठा नावामें आई,
नावड़िये नाव चलाई।
नाव फूटो माँय आवे पाणी,
उपरा-उपरो जल सूँ भराणो ॥ १ ॥
आता पानी बतावा रो नेमो
तेथो मुनी बतावे केमो।
अवसर डूबण केरो आवे,
जतनासे निकल मुनि जावे ॥ २
विधिसे उतरथा नहिं घाट,
"आहारियंरियेजा" पाठ।
जतना सूँ निकलने जाणो,
डूबजाणे रो नाहिं वखाणो ॥ ३ ॥
एवा सरल-अर्थने छोड़ी,
खोटो ढालाँ मूँडा सूँ जोड़ो।
(कहे) "मनुज बचाया पापो,
तेथो (मुनि) जल न बतावे आपो ॥

जो जीव बचायामें धर्मो,
(तो) मनुज बचियाँ हुवे शुभ-कर्मो ।
जल बताई नाँय बचावे,
(तेथी मनुष्य) बचायाँ पाप बहु थावे ॥५॥
एवी खोटी करे कोई थापो,
जाँरे उदय हुवा महापापो ।
जो जलने (मुनि) नाहिं बतावे,
(तेथी)मनुज बचायाँ पापमें गावे ॥ ६ ॥
(उत्तर) मुनि निज नो तो जीवणो चावे,
आहार पाणी मुनी नित खावे.
निजनी अनुकम्पा (तो) करनी,
यातो तुम पिण मुख थी वरणी ॥ ७ ॥
तो नज अनुकम्पा लाई,
(कहो) क्यों पाणी बतावे नाहीं ?
(कहे) "अनुकम्पा तो निज नी करणी,
पाणी बतावा री (सूत्तरमें)नाहीं वरणी ॥८॥
कल्प पाणी बतावा रो नाहीं.
(पिण निज) अनुकम्पामें दोष न काई ।

तो इमहिज समझो रे भाई
पर री अनुकम्पा धर्म रे माईं ॥ ९ ॥
मनुजांने बचाया में धर्मो,
यो ठाणायङ्ग रो मर्मो ।
निज (अनुकम्पा) काजे न पाणी बतावे,
(तिम) परकाजे पिण नाहिं दिखावे ॥ १० ॥
पाणी बतावा रो कल्प नाहीं,
मनुजरक्षा धर्म रे माहीं ।
जीव बचियां न व्रत में भङ्गो
'तिण रो साखी आचारङ्गो' ॥ ११ ॥
"अनुकम्पा किणरी न करणी"*
ऐसी आचारंगे न वरणी ।
शंका होवे तो सूतर देखो,
नाव रो बतायो जठे लेखो ॥ १२ ॥
* द्वितीय ढाल सम्पूर्णम् *

*—जैसे कि वे कहते हैं:—
आप डूबे अनेरा प्राणी,
अनुकम्पा किणरी नहिं आणी । णी
(अनु० ढाल २ गा० १६)

॥ दोहा ॥

वांछे मरण जीवणो, धर्म तणे जे काज।
सतधारी ते शूरमा, (जां) साऱ्या आतमकाज ॥१॥
(पर) अनुकम्पा कीधा थकां, कटे कर्म नो वंश
"ठाणायँग' चौथे कह्यो मोह तणो नहिं अंश ॥२॥
पर-अनुकम्पा जो करे, मिटे राग अरु धेख।
भोग मिटे इन्द्रयां तणा, अन्तर-दृष्टि देख ॥ ३ ॥
जीव दया रे कारणे, मेघरथ खंडी काय।
शान्तिनाथ नो जीव ये, समवायँग रे मांय ॥ ४ ॥
सैंठा रया चल्या नहीं, कर्म किया चकचूर।
ममता छांडी देह नी, दयावन्त महा-शूर ॥ ५ ।

तीसरी-ढाल
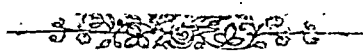
१ अधिकार मेघरथ राजाका परेवा पर दया करनेका।

(तर्ज—विछिया नी)

इन्द्र करी परसंसिया,
मेघरथ मोटो महाराय— रे जीवां।
दयावन्त दानेश्वरी,
शरणागत देवे सहाय—रे जीवां ॥ १ ॥

मोह अनुकम्पा न जाणाये,

नहिं मोह तणो यह काम—रे जीवां।
परकाश अन्धेरा ज्यूँ जुवा,
दोयां रा न्यारा नाम—रे० मो० ॥ २ ॥
तिण काले एक देवता,
दयाभाव देखण रे काज—रे जीवां।

रूप परेवो बाज नो,
तिण कीनो वैक्रिय साज—रे० मो० ॥ ३ ॥
पड़ियो राय री गोद में,
भय थी तड़फे तस काय—रे जीवां।
शरणो दियो महारायजी,
भय मतपावो कहि वाय-रेजीवां, मो०॥४॥
बाज कहे भख माहरो,
मुझ भूखर नो यह शिकार—रे जीवां।
और कछू लेसूँ नहीं,
मोने आपो म्हारो आहार-रे० मो० ॥ ५ ॥
यो शरणागत माहरे,
और मांग तू वस्तु रशाल—रे जीवां।
जे मांगे ते आपसूँ,
हूँ जीवदया प्रतिपाल-रे जीवां, मो० ॥६॥
मांस आपो निज देह नो,
इणरे बराबर तोले—रे जीवां।
हर्षित हो राय इम कहे,
यह तो भलो कह्यो थें बोल-रे जीवां,मो०॥७॥

तुरत तराजू मांड ने,
राय खण्डन लागो काय--रे जीवां।
हाहाकार हूओ घणो,
अन्तेवर अति विलखाय-रे जीवां,मो० ॥८॥
उत्तर दीधो राजवी,
नहिं मोह तणो यहां काम--रे जीवां।
क्षत्री धर्म छे म्हारो,
धर्म राखे छे थारो स्वाम-रे जीवां,मो० ॥९॥
सब समझाया ज्ञान सूं,
विलखाया सामा जोय--रे जीवां।
इसड़ो धर्मी जगतमें,
हुओ वली होसी कोय-रेजीवां मो०॥१०॥
निज नो मरणो वंछियो,
ते तो जाणी धर्म रो काम--रे जीवां।
प्राण कपोत रा राखिया,
ते शुद्ध धर्मरे नाम-रे जीवां मो० ॥११॥
तन खंड्यो मन खंड्यो नहीं,
अपूरण जाण्यो बोल रे जीवां।

वीर रसे महारायजी,
तन मेल दियो अनमोल-रेजीवां मो०॥१२॥
जयजयकार (तब) सुर करे,
धन ! धन ! तूँ महाराय—रे जीवां।
इन्द्र किया गुण ताहरा,
मैं देख लिया यहां आय-रे जीवां,मो०॥१३॥
खम अपराध तूँ माहरो,
हुओ सुवरण (मैं) पारस संग-रे जीवां।
गोत तीर्थंकर बांधियो,
राय दया तणे परसंग-रे जीवां,मो० ॥१४॥
इण अनुकम्पा में मोह कहे,
उणरे पूरो उदे मिथ्यात—रे जीवां।
यह तो परतख मोह रो जीतणों,
ग्रन्थ मांहे देखो साक्षात-रे जीवां,मो०॥१५॥

२—अधिकार अरणकजी की

अनुकम्पा का

अरणक परीक्षा कारणे,

देव बोले इण पर वाय--रे जीवां ।
अनुव्रत पांचो निर्मला,
दया-धर्म धारे चितचाय--रेजीवां, मो० ॥१॥
व्रत तोड़ हिंसा करसी नहीं
अनुकम्पा न छोड़सी आज--रेजीवां ।
(जाव) धर्म न छोड़सी ताहरो
तो हूँ करसूँ मोटो अकाज-रेजीवां मो० ॥२॥
बचन सुणी डरियो नहीं
इम चिन्तवे चित्त मुझार--रेजीवां ।
धर्म बोध इणरे नहीं
तेथी पाप करण झूँझार- रे जीवां मो०॥३॥
सुमति तजी कुमती भजी
तेहथी धर्म छुड़ावण चाय रेजीवां ।
मैं मर्म जाण्यो छै एहनो
तेथी धर्म छोड्यो किम जाय रे जीवां मो०॥४॥
पाप है घातक जगतमें
दुःख देवे करे अकाज रे जीवां ।
जगवत्सल जिन-धर्म है

सुखदाई सारे काज—रेजीवां मो०॥५॥
अट्ठी-मीजा रम रह्यो
जारे धर्म तणो अनुराग—रे जीवां।
केम गहें कर कांकरो
रतन चिन्तामणि त्याग—रे जीवां, मो०॥६॥
दृढ़ रह्यो चलियो नहीं
देव कीनो उपसर्ग दूर—रे जीवां।
धन धन मुखसे बोलतो:
दयाधर्मी तूँ महाशूर—रे जीवां मो०॥७॥
कुमती कदाग्रही इम कहे
जहाजमें मनुज अनेक—रे जीवां।
मोह करुणा न आणी केहनी*

---

*—जैसा कि वे कहते हैं—

तिण सागारी अणसण कियो, धर्म ध्यान रह्यो चित ध्याय रे।
सगला ने जाण्या डवता मोह, करुणा न आणी काय रे।
जीवा मोह अनुकम्पा न आणिये ॥ ४ ॥
लोक विलविल करता देखने, अरणकरो न विगड्यो नूर रे।
मोह करुणा न आणी केहनी, देव उपसर्ग कीधो दूर रे।
जीवां मोह अनुकम्पा न आणिये ॥ ८ ॥
(अनुकम्पा ढाल २)

मरतो नहिं राख्यो एक—रे जीवां मो०॥८॥
एहवी अणहूँति बात उठायने
अनुकम्पामें थापे पाप—रे जीवां।
जारे मोह उदे अति आकरौ
तेहथी खोटी करे छे थाप—रे जीवां मो०॥९॥
झाझ राखण धर्म छोड्यो नहीं
तेहथी मोह करुणा री थाप—रे जीवां।
त्यांने बुधवन्त कहे इण परे
इक हेतु रो देवो जाब—रे जीवां मो॥१०॥
"रावण सीताने कहे
तू मुजने न करे स्वीकार—रे जीवां।
तेथी मरसे नर अति सांकटा
थारे नहिं दयासूँ प्यार—रे जीवां मो०॥११॥
दया धर्म मुझ मन वस्यो
हूँ तो सगला रो चाहूँ खेम—रे जीवां।
थारे हिरदे खोटी वासना
म्हारे हिरदे सांचो नेम—रे जीवां मो०॥१२॥
शील न सीता खण्डियो

तेथी अनुकम्पामें पाप"—रे जीवां।
एवी मूढ़ करे कोई कल्पना ?
के ज्ञानी केरी या थाप ?—रे जीवां, मो० ॥१३॥
जब जाब न आवे एहनो
तब ज्ञानी कहे समझाय—रेजीवां।
शील सती खण्डे नहीं
तिणरे रक्षा घणी दिल माँय—रे० मो०॥१४॥
तिम धर्म न छोड़े शुभमति
अनुकम्पा घणी घट माँय—रे जीवां।
तिणने कहे कोई मूढ़मति
वो अनुकम्पा लायो नाँय—रे०मो० ॥१५॥
धर्म शील न छोड़े तेहने,
नामे करे एहवी थाप—रे जीवां।
अनुकम्पा में पाप छे
तेथी मनुष्य बचाया जाय" रे० मो० ॥ १६ ॥
एवी मूढ़ करे परूपणा
ज्ञानी री यह नहिं वाय—रे जीवां।
धर्म शील सम जाणजो

जीव रक्षा धर्म रे माँय—रे० मो० ॥१७॥
कोई देव कहे श्रावक भणी
तू दे जिन धर्मने छोड़—रेजीवां ।
नहिं तो साधवी गुरुणी ताहरी
जारो शीलने नाखसूँ तोड़—रे० मो०॥१८॥
धर्म न छोड़े तेहथी
कोई मूर्ख उठावे भरम—रे जीवां ।
शील बचायामें पाप है
तिणरे हेते न छोड्यो धर्म—रे० मो०॥१९॥
(बलि) देव कहे धर्म न छोड़सी
झूठ चोरी रो करस्यूँ पाप—रे जीवां ।
तब धर्म न छोड़े तेहथी
कोई मूढ़ करे एहवी थाप—रे० मो०॥२०॥
धर्म त्याग चोरी न छुड़ावतां
चोरी झूठ छोड़ावा में पाप—रे जीवां ।
या मूरख री परूपणा
इम ज्ञानी जाणेसाफ—रे ०मो० ॥२१॥
इम अठाराही पाप रो

न्याय शुद्ध हिरदेमें धार—रे जीवां ।
धर्म त्यागे न पाप छुड़ायवा
यो सूत्र तणो निरधार—रे० मो०॥२२॥
कहे "पाप छोड़ावणो धर्ममें
पिण धर्म तो छोड़े नाँय—रे जीवां ।
धर्म न छोड़े तेहथी,
पाप मेटण पाप न थाय"—रे० मो० ॥२३॥
(तो) जीवरक्षा रो द्वेष छोड़ने,
समभाव लावो मनमांय—रेजीवां ।
धर्म छोड़ अनुकम्पा ना करे,
अनुकम्पा सावज नांय—रेजीवां मो० ॥२४॥
धर्म छोड़ मनुष्य नहिं राखिया,
तेथी मनुष्य बचाया पाप—रेजीवां ।
या खोटी सरधा थांहरी,
इण न्याय थी जाणो साफ—रे० मो० ॥२५॥
नाम लेवे अरणक तणो,
अनुकम्पा उठावण काज—रेजीवां ।
ते मूढ़ अज्ञानी जीवड़ा,

छोड़ी धर्मने भेष री लाज—रे० मो० ॥२६॥

३—अधिकार "माता बचानेसे चुलणी पियाके व्रतादिका भंग नहीं हुआ

अरणक नी परे जाणज्यो,

चुलणीपिया नी बात—रेजीवां ।

पुत्र मार सूला कर छांटता,

अनुकम्पा राखी साक्षात—रेजीवां मो० ॥१॥

अपराधीने नहिं मारणो,

कीधो पोसा माहीं नेम—रेजीवां ।

तेथी पुत्र रा मारणहार पे,

अनुकम्पा राखी धर प्रेम—रेजीवां मो० ॥२॥

मूढ़मती उलटी कहे,

जारे दया नहिं दिल मांय—रेजीवां ।

करुणा न की अंगजात नी,

एवी खोटी बोले वाय—रेजीवां मो० ॥३॥

जो देव इणी विध बोलतो,

थारा पुत्र बचायामें धर्म—रेजीवां ।

तूं सरधे तो छोडूं जीवता,
नहिं तो घात करूं तज सर्म—रेजीवां, मो० ॥४॥
तदा श्रावक धर्म न श्रद्धतो,
देव करतो पुत्र री घात—रेजीवां।
तो करुणा न की अंगज तणी,
या साँची होती तुम बात—रेजीवां, मो० ॥५॥
पिण देव तो बोल्यो इण परे,
थारे जीव दया रो व्रत—रेजीवां।
ते तोड़ हिंसा करसी नहीं,
थारा पुत्र मारूं इन शर्त—रेजीवां, मो०॥६।
तेथी श्रावक व्रत तोड्या नहीं,
दया-धर्म हिरदा में ध्याय—रेजीवां।
तुम कहो करुणा आणी नहीं,
यो तो झूठो थारो न्याय—रेजीवां, मो० ॥७॥
देव कहे हिंसा करसी नहीं,
थारे देव गुरू सम माय—रेजीवां।
तिणने मार सुला कर छाँटसूं,
दया धर्म न मुझ सुहाय—रेजीवां, मो० ॥८॥

इम सुण चुलणीपिया कोपियो,
यो तो पुरुष अनारज थाय—रेजीवां ।
पकड , मारू एहने,
इम चिन्ती लारे धाय—रेजीवां मो० ॥९॥
देव गयो आकाश में,
इणरे थाँबो आयो हाथ—रेजीवां ।
कोलाहल कीधो घणो,
तब आई भद्रा मात—रेजीवां ,मो० ॥ १० ॥
वच्छ ! विरूप देख्यो तुमे,
नहिं हुई पुत्राँ री घात—रेजीवाँ ।
पुरुष मारण तुम ऊठिया,
व्रत-नेम भागा साक्षात—रेजीवाँ, मो० ॥११॥
इहाँ झूठा बोला इम कहे,
जाँरे नहिं अनुकम्पा सू प्रेम—रेजीवाँ ।
"अनुकम्पा करी जननी तणी,
ते सू भागा व्रत-नेम"—रेजीवां, मो० ॥१२॥
घेटा हो इण पर कहे,
मिथ्यात री चढ़ियो पूर—रेजीवाँ ।

ज्ञानी कहे हिवे साँभलो,
होकर सतबादी शूर—रेजीवाँ, मो० ॥१३॥
त्याग किया हिंसा तणा,
तेथी श्रावक रे व्रत होय—रे जीवां।
ते व्रत भागे हिंसा किया,
यो न्याय विचारी जोय—रेजीवां मो० ॥१४
अनुकम्पा हिंसा नहीं,
तेने त्यागया व्रत नहिं थाय-रे जीवां।
जो, अनुकम्पा त्याग दे,
निरदयी कह्यो जिनराय—रे जीवां मो० ॥१५॥
अनुकम्पा थी व्रत नीपजे,
तेथी व्रत री किम हुवे घात—रेजीवां।
अमृत थी मरणो कहे,
या तो मूढ़मत्याँ री बात-रे जीवां, मो० ॥१६॥
मारे ते विष जाणज्यो,
अमृत थीं रक्षा थाय-रे जीवां।
अनुकम्पा थी व्रत भागे नहीं,
हिंसा हुवा व्रत जाय-रे जीवां, मो० ॥१७

अनुकम्पा थी व्रत भागा कहे,
ते बूड़ा काली-धार—रे जीवां।
वली भोला ने भरमाय ने,
पकड डुबोयो लार—रेजीवां, मो०॥१८॥
"भग्गवए भग्गनियम" री,
वलि "भग्ग पोषध" रो अर्थ—रेजीवां।
टीका में कियो इण भाँत थी,
थें खेंच करो क्यों व्यर्थ—रे जीवां, मो० ॥१९॥
कोप करी ने दौड़ियो,
पुरुष मारण रे परिणाम—रे जीवां।
अनुव्रत भागो तेहथी,
करुणा न रही तिण ठाम—रे जीवां, मो॥२०॥
अपराधी पिण नहिं मारणो,
या पोषध रा मर्याद—रे जीवां।
भाव हुवा मारण तणा,
व्रत भागो तजो हठवाद—रे० मो० ॥२१॥
क्रोध करण रा त्याग था,
पूरुष पर आयो कोप—रे जीवां।

नियम उत्तर गुण भागियो,
जिन आणा दिवि लोप—रेजीवां, मो० ॥२२॥
न कल्पे पोषधे दोड़णो,
ते तो दोड्या पुरुष रे संग— रे जीवां।
दोड्याँ अजतना हुई,
पोषध रो हुओ भंग—रे जीवां मो० ॥ २३ ॥
यो सत्य अर्थ सूतर तणो,
टीका थी लीजो जोय—रे जीवां।
खोटा अर्थ कुगुराँ तणा,
मत मानजो स्याणा होय—रे० मो० ॥ २४ ॥

शूरादेव का दाखला

"अनुकम्पा आणी जननी तणी,
ते सूँ भागा व्रत ने नेम"—रे जीवां।
एवी खोटी थाप कोई करे,
तेने उत्तर दीजे एम—रेजीवां, मो० ॥२५॥

शूरादेव श्रावक तणी,
चुलणीपिया सम वात—रेजीवां।
देव कष्ट दियो पुत्राँ तणो,
तिनमें विशेष छे इण भाँत—रे० मो० ॥२६॥
जो तूँ दया-धर्म छोडे नहीं,
तो थारी देह रे माँय—रेजीवां।
सोले रोग मैं घालसूँ,
तूँ मरने दुर्गत जाय—रेजीवां, मो०॥२७॥
इम सुण कोप थी दोडियो,
चुलणीपिया सम जाण—रेजीवां।
व्रत-नियम भागा कह्या,
ते समझ ने तज दो ताण—रेजीवां, मो० ॥२८॥
पोषा सामायक में तुमें,
एवी करो छो थाप—रेजीवां।
देह रक्षा किया भागे नहीं*,
आगार कह्यो तुम साफ—रे० मो० ॥२९॥

* जैसा कि वे "श्रावक धर्म-विचार" में श्रावक की सामायिक व्रत की ढालमें कहते हैं:—

तुम कथने शूरादेव रे,
देह रक्षा थी भागा न व्रत—रेजीवां।
हीवे अनुकम्पा किणरी करा,
तिण थी भागा इणरा व्रत—रे जीवां, मो० ॥३०॥
इण कथने थें जानलो,
चुलणीपिया नी (पिण) घात—रे जीवां।
जननी अनुकम्पा थकी,
नहिं हूई व्रत री घात—रे जीवां, मो० ॥३१॥

शरीर कपड़ादिक तेहना,
जतन करे सामायक मांयजी
लाय चोरादिक रा भय थकी,
एकांत स्थानक जयणा से जायजी ॥२४॥
आपरो तो आगार राखियो,
औरां रो नहीं छे आगार जी।
औरा ने त्याग्या सामाई मुझे,
त्याँ ने किणविध लेजावे बहार जी॥
सिखाजा व्रत आराधिये॥ २७॥
लाय चोराद्रिक रा भय थकी,
राख्या ते द्रव्य ले जायजी।

हिंसा करण ने दोड़ियो,

वली क्रोध आयो तिणवार—रे जीवां ।

अजतना व्योपार थी,

व्रत नेम पोषध टूटी कार—रे० मो० ॥ ३२ ॥

व्रत भागे हिंसा थकी,

यो निश्चय लीजो जाण—रे जीवां ।

पाखती कपड़ादिक हुवे घणा ।

त्याँ ने तो वाहर न ले जावे तायजी ॥ २८ ॥

राख्या ते द्रव्य ले जावता,

समाई रो भंग न थायजी

त्यागा छे त्याँ ने ले जावता,

सामायी रो व्रत भाग जायजी ॥ २६ ॥

ग्यारहवें व्रत की ढाल में भी लिखा है:—

पोषा ने सामायिक व्रत ना,

सरखा छे पच्चखाणजी ।

सामायिक तो मुहूर्त एकनी,

पोषो दिवसरात रो जाणजी ॥ ७ ॥

पोषा ने सामायिक व्रत में,

याँ दोयाँ में सरखो छे आगारजी ॥ ८ ॥

अनुकम्पा थी रक्षा हुवे,
(तेथी)व्रत भागो कहे अणजाण—रे० मो० ॥३३॥

४—अधिकार 'नमीराज ऋषि ने अनुकम्पा नहीं की' ऐसा कहनेवालों के लिये उत्तर।

नमीराज ऋषि संयम लीनो,
प्रत्येकबोधी (मोटा) अणगार रे जीवां।
निज हित करणे उठिया,
पर री नहिं करे सार संभार—रे० मो० ॥ १ ॥
दीक्षा न देवे केहने,
न देवे श्रावक (ना) व्रत—रे जीवां।
उपदेश पिण देवे नहीं,
पूछ्याँ उत्तर देवे सत्य—रे जीवां, मो० ॥ २ ॥
(ते) अनुकम्पा करे आपनी,
पर री कल्पे तस नायँ—रे जीवां।
इन्द्र आयो तिण ने परखवा,
त्यों माया विविध बनाय—रे जीवां, मो० ॥ ३ ॥

महल अन्तेवर ताहरा,
अगनि में बले परतख—रे जीवां।
तुम स्वामी छो एहना,
ज्ञानादिक नी परे (याने) रख—रे० मो० ॥ ४ ॥
तब, नमीऋषिजी इम कहे,
ज्ञानादिक गुण छे मूझ—रे जीवां।
एथी बीजी वस्तु नहिं माहरे,
निश्चय-नयरी बताई सूझ—रेजीवां, मो० ॥५॥
मुझनो ते तो बले नहीं,
बले ते न म्हारो होय रे जीवां।
यह मिथिला बलता थकाँ,
ज्ञानादिक नाश न होय रे जीवां, मो० ॥६॥
केई अज्ञानी इम कहे,
अनुकम्पा री करवा घात—रे जीवां।
"नमीराज ऋषि आणी नहीं,
मोह अनुकम्पा री बात"—रेजीवां, मो० ॥७॥
(उत्तर) अनुकम्पा रो प्रश्न छे नहीं,
नहिं उत्तर में तेनी बात—रे जीवां।

थाँ झूठा गाल बजाविया,
थाँरे मोह उदय मिथ्यात—रे जीवां, मो० ॥८॥
(जो) अन्तेवर रक्षा ना करी,
तेहथी अनुकम्पा में पाप—रेजीवां
एवी करे कोई थापना,
तो उत्तर सुणजो साफ—रे जीवां, मो० ॥ ९ ॥
हिंसा, झूठ, चोरी तणा,
नमी (जी) न करावे त्याग—रे जीवां।
वस्तर पिण राखे नहीं,
संग में न रहे महाभाग—रे जीवां, मो० ॥१०॥
निज हित में तत्पर रहे,
पर साधु रो न करे काज—रे जीवां
प्रत्येकबोधी मुनि तिके,
पर रो न बंछे साज—रे जीवां, मो० ॥११॥
या प्रत्येकबोधी रो नाम ले,
कोई मूर्ख करे एहवी थाप—रे जीवां।
जो कार्य नमीऋषि ना करे,
तिण में मोहतणो छे पाप—रे जीवां, मो० ॥१२॥

इण लेखे (तो) दीक्षा देण में,
वलि विविध करावण नेम — रे जीवां।
ते मोह पाप में ठहरसो,
तेने ज्ञानी तो माने केम रेजीवां, मो० ॥१३॥
दीक्षा, त्याग, व्यावच तणा,
याँ कार्य में दोष न कोय — रे जीवां।
तिम परजीव रक्षा में जाणज्यो,
थीवरकल्पीकरे सब कोय — रे० मो० ॥१४॥
जिणकल्पी प्रत्येकबोधि नो,
जिण कामाँ रो कल्प न होय रे जीवां।
त्याँरे देखा-देखी कोई ना करे,
निर्दयी समझो सोय - रेजीवां, मो० ॥१५॥
ठाणायंग में भाषियो,
करुणा तणो अधिकार - रे जीवां।
(वली) छती शक्ति व्यावच ना करे,
बाँधे महा मोहणी रो भार - रे० मो० ॥१६॥
थीवर कल्पी रा कल्प रो,
जिन एहवो भाख्यो मर्म रे जीवां।

(तेहीज) जिनकल्पी प्रत्येकबोधी ने,
प्रभु नाथ बतायो यो धर्म रेजीवां, मो० ॥१७॥
प्रत्येकबोधी नमी तणो,
झूठो उठायो नाम—रे जीवां।
अनुकम्पा उठायवा,
ए नहीं समदृष्टि रा काम—रे० मो० ॥१८॥

५—अधिकार नेमिनाथजी ने गज-सुकुमाल की अनुकम्पा नहीं की, ऐसा कहनेवालों को उत्तर

श्री नेमि जिनेश्वर जाणता,
मुनि गजसुकुमाल री घात—रे जीवां।
ए तो खेर खीरा माथे खमी,
मोक्ष जावसी इणहिज भाँत—रेजीवां, मो० ॥१॥
तेथी जिण दिन दीक्षा आदरी,
पड़िमा वहण चित चाय—रे जीवां।
आज्ञा माँगी जिणराज री,
श्रीमुख दीवी फुरमाय रेजीवां, मो० ॥२॥

शमसाणे काउसग्ग कियो,
सोगल आयो तिहाँ चाल रे जीवां
माथे पाल बाँधी माटी तणी,
माँहे घाल्या खीरा लाल रे जीवां, मो० ॥३॥
कष्ट सह्यो वेदना खमी,
मुनि मोक्ष गया तिणबार रे जीवां।
केई मंदमती तो इम कहे,
"नेम करुणा न करी लिगार* रे० मो० ॥४॥
पहले अनुकम्पा आणी नहीं,
और साधु न मेल्या साथ रे जीवां।

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—
कष्ट सह्यो वेदना अति घणी,
नेमी करुणा न आणी लिगार रे ॥ १८ ॥
श्री नेमि जिनेश्वर जाणता
होसी गजसुकुमाल री घात रे।
पहिले अणुकंपा आणी नहीं
और साधू न मेल्या साथ रे ॥ १९ ॥
(अनुकम्पा ढाल—३)

तेथी अनुकम्पा में पाप है,

इम बोले झूठ मिथ्यात–रे जीवां, मो० ॥५॥

(उत्तर) चर्म शरीरी जीव नो,

आयु टूटे नहीं लिगार–रे जीवां।

जिम बाँध्यो तिम भोगवे,

निरूपकर्मी तणो निरधार–रे० मो० ॥६॥

आगम बलिया केवली,

कल्पातीत त्रिकाल ना जाण–रे जीवां।

निश्चय जाणे तिम करे,

जारो नाम लेई करे ताण—रे० मो० ॥७॥

गजसुकुमाल री नो करी,

अनुकंपा श्री जिन नेम—रे जीवां।

ए वचन अनुकम्पा-द्वेष रा,

ज्ञानी तो समझे एम—-रे० मो० ॥८॥

सूत्र व्यवहारी मुनि तणो,

सूतर में चाल्यो धर्म–रेजीवां।

तिणने सुतर व्योहारी ना करे,

जारे माठा बन्धे कर्म—रेजीवां, मो० ॥९॥

ठाणायंग ठाणे तीसरे,

चौथे उद्देशे अधिकार - रे जीवां ।

तपसी, रोगी, नवदीक्ष नी,

कोई न करे सार-संभार—रेजीवां, मो०॥१०॥

ते बैरी अनुकम्पा तणा,

जिन श्रीमुख भाख्या आप—रेजीवां ।

तेथी तीनाँ री करणी चाकरी,

नहिं करियाँ थी लागे पाप—रे० मो० ॥११॥

गजसुकुमाल रो नाम ले,

अनुकम्पा में थापे पाप—रे जीवां ।

ते घातक मुनि ना जाणज्यो,

ज्यां दीना सूत्र उथाप—रे जीवां ।

मोह अनुकम्पा न जाणिये ॥१२॥

६—अधिकार वीरभगवानके उपसर्ग दूरकरनेमें पाप कहते हैं, उसका उत्तर।

श्री वीर जिनेन्द्र चौबीसमाँ,
कल्पातीत मोटा अणगार—रे जीवां।
ज्याँने देव, मनुज, तिर्यंचना,
उपसर्ग उपज्या अपार—रे जीवां ॥१॥
(कहे) "संगमदेव भगवान ने,
दुःख दीधा अनेक प्रकार—रे जीवां।
म्लेच्छ लोकाँ श्री वीर रे,
श्वानादिक दीना लार—रेजीवां,मो० ॥२॥
दुःख देताँ देखी वीर ने,
अलगा नहिं कीया आय—रे जीवां।
समदृष्टि देव हूँता घणा,
पिण किणही न कीधी साय—रे० मो० ॥३॥

अनुकम्पा आण बीच में पड्या,
यो तो जिन भाख्यो नहिं धर्म- रे जीवां।
ते थी उपसर्ग मेटणो पाप सें,"
मंदमती पाड़े इम भर्म—रेजीवा, मो० ॥४॥
हिवे उत्तर एनो साँभलो,
देव सेव्या छे उपसर्ग आय—रे जीवां।
अनुकम्पा रा द्वेष थी,
मंदमती वे दिया छिपाय—रे जीवां, मो० ॥५॥
जिण दिन दीक्षा आदरी,
कायोत्सर्ग रह्या वन माँय—रे जीवां।
पशुपाल वैल रे कारणे,
वीर ने मारण हाथ उठाय—रे० मो० ॥६॥
तव इन्द्र आय ने रोकियो,
भक्तिवन्त तो भक्ति चाय—रे जीवां।
(वली) सिधारथ देव श्रीवीर रा,
वहु उपसर्ग दीना मिटाय—रे०, मो० ॥७॥
कानाँ थी खीला काढ़िया,
भक्तिवन्त वैद्य हुलसाय—रे जीवां।

ते महाफल पायो धर्म नी,

मरणान्तिक कष्ट मिटाय----रे० मो० ॥८॥

इम बहु उपसर्ग मेटिया,

कल्पसूत्र कथा रे माँय---रे जीवां ।

तो पिण अनुकम्पा द्वेषी इम कहे,

कोई उपसर्ग टाल्यो नाँय—रे० मो० ॥९॥

(कहे) "कथा री वात मानाँ नहीं,"

तो संगम (देव) री मानो केम—रे जीवां ।

या कथा पिण "कल्पसूत्र" नी,

तुम साख देवो छो केम*----रे० मो० ॥१०॥

श्री वीर ना उपसर्ग मेटिया,

ठाम-ठाम कथा रे माँय·—रे जीवां ।

तुमे कहो किणही न मेटिया,*

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

संगम देवता भगवान ने

दुःख दीधा अनेक प्रकार रे ।

अनार्य लोकां श्रीवीररे

श्वानादिक दीधा लाररे

(अनु० ढाल—३ गा० २१)

झूठा बोलता सरमो नाय—रे० मो० ॥११॥
जब ज्वाब न आवे एहनो,
आड़ा-अवला गाल बजाय—रे जीवां ।
म्लेच्छ शस्त्र खुटा थका,
डूँगर थी टोल गुड़ाय—रेजीवां, मो० ॥१२॥
पार्श्व-प्रभु दीक्षा ग्रही,
काउसग्ग कियो बन माय—रे जीवां ।
जब कमठे मेह बरसावियो,
उपसर्ग दीनो आय—रेजीवाँ, मो० ॥१३॥
तब धरणेन्द्र पद्मावती,

~~अनार्य लोकां श्री वीर रे ।~~
~~स्नानादिक दीधा त्रास रे ॥~~
~~(अनु० ढा० ३ गा० २१)~~

* जैसा कि वे कहते हैं:—
दुःख देता देखो भगवान ने
अलगा न कोधा आय रे ।
समदृष्टि देव हूँता घणा
पिण किणहीं न कोधो सहाय रे ॥
(अनु० ढा० ३ गा० २३)

उपसर्ग दीनों मिटाय—रे जीवाँ।
तुम पिण मानो* या बारता,
हिवे बोलीने वदलो काँय—रे० मो० ॥१४॥
बलि कथा रे नामे तुमे,
ढालाँ जोड़ी विविध प्रकार—रे जीवां।
नवकार मन्त्र प्रभाव * थी,
उपसर्ग मेटण अधिकार—रे० मो० ॥१५॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं—
पार्श्वनाथजी घर छोड़ काउसग्ग कीधो
जब कमठ उपसर्ग कर वरसायो पाणी।
जब पद्मावती हेठे सिंहासन कीधो
धरणेन्द्र छत्र कियो सिर आणो ॥ ओ० मु० ॥
(गाथा २७)

* जैसे कि आराधना की दसवीं ढाल में वे कहते हैं—
पन्नग पुष्प नी माल थई;
नवकार प्रभावे कीरति लई।
सुख श्रीमति उभय भवे सारं
इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ७ ॥
अग्नि ठंडो किधी देवाँ

श्रीमती अमर कुमर वली,

भील सेठ आदिक नी बात— रेजीवां ।

देव साय करी (तुमे) मानो खरी,

विच पड़िया ये सक्षात्—रेजीवां मो० ॥१६॥

यह था सम-दृष्टि देवता,

जिन-धर्म दिपावणहार—रे जीवां ।

नवकार महिमा कारणे,

संकट मेट कियो उपकार—रे० मो० ॥१७॥

कियो कनक-सिंहासन ततखेवा ।

ऊपर अमर कुमर प्रति पैसारं,

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ८ ॥

वछड़ा चरावतो जिहवारं,

नदी पूर आयां गुण्यो नवकारं ।

थई ततखीण सरिता दोय डारं,

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥९॥

सेठ समुद्र में डूबतो,

नवकार गुण्यो धर चित्त शान्तो ।

सुर जहाज उठाय मेली पारं,

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥१०॥

तुम कहता सम-दृष्टि देवता,

बीच में नहिं पड़िया आय रे जीवां।

या बात थारी झूठी हुई,

बीच पड्या मान्या (थाँ) जोड़ माँय ॥१८॥

जहाज बचाई देवता,

यो तो धर्म तणो उपकार—रे जीवां।

जो खोटा जाणे समदृष्टि,

देवता किम करता सार—रे० मो० ॥१९॥

थें अनुकम्पा रा द्वेष थी (कह्यो)

धर्म होतो न करता ढील—रे जीवां।

* उपसर्ग तुरत मिटावता,

समदृष्टि देवाँ रो शील—रे० मो० ॥२०॥

(तो) नवकारक प्रभाव थी देवता,

---

* जैसे कि वे कहते हैं:—

धर्म हुँतो आयो न काड़ता,

वली वीर ने दुखिया जाण—रे जीवाँ।

परीषह देवण आया तेहने,

देय अलगा करता ताण—रे जीवाँ, मो० ॥ २५ ॥

(अनुकम्पा ढाल ३)

उपसर्ग मेल्या साक्षात—रे जीवां ।
तुम कथने पिण हुवो धर्म यो,
मान लेवो छोड़ मिथ्यात—रे० मो० ॥२१॥
"तो सब उपसर्ग वीरना,
देव केम न मेल्या आय"—रे जीवां ।
एवी शंका कोई करे,
जाँरे सुध-बुध हिरदे नाय—रे० मो० ॥२२॥
निश्चेवादी अवधिधरा,
मिटता देख्या निज ज्ञान—रे जीवां ।
(ते) विघन मेल्या देवाँ हर्ष सूँ,
धर्म सेवा रो दे शुभ ध्यान—रे० मो० ॥२३॥
जो होनहार टले नहीं,
ते देव न सके टार—रे जीवां ।
त्याँरो नाम लेई कहे मूढ़मती,
(उपसर्ग) मेट्याँ पाप अपार— रे०मो० ॥२४॥
सौ कोसाँ उपसर्ग ना होवे,
जिन महिमा सूतर साख—रे जीवां।
होनहार गोशाले वीर पे,

तेजू-लेस्या दीनी नाख—रे० मो० ॥२५॥
उपसर्ग मिटे प्रभु तेज थी,
यह तो प्रत्यक्ष आछो काम—रे जीवां।
भावी (होनहार) टले नहीं जो कदा,
(इणरो) मन्द आणे मुख नाम—रे० मो० ॥२६॥
(तिम) वीर उपसर्ग देवाँ मेटिया,
परतख धर्म रो काम—रे जीवां।
जो होनहार मिटे नहीं,
ज्ञानी नहिं लेवे तिण रो नाम—रे० ॥
मोह अनुकम्पा न जाणिये ॥२७॥

७—अधिकार द्वीप-समुद्रों की हिंसा देवता क्यों नहीं मेटे?-इसका उत्तर।

कोई मन्दमती इण पर कहे,
अनुकम्पा उठावण काज—रे जीवां।
इन्द्र मेटी न हिंसा समुद्र (द्वीप) री,
अचित वस्तु रो दई साज—रे० मो० ॥१॥

ज्याँने द्वेष घणो करुणा तणो,
उदय आयो मिथ्यात रो पाप—रे जीवां।
तेथी अनुकंपा में पाप छे,
एवी (कोई) मंद करे छे थाप—रे० मो० ॥२॥
त्याँने ज्ञानी कहे समझायवा,
इन्द्र जे-जे न करे काम—रे जीवां।
तिण में पाप कहो तो विचार लो,
केइ काम रा लेऊँ नाम—रे० मो० ॥३॥
श्रीकृष्ण नरेश्वर महामती,
जाँए पड़हो दीनो फिराय—रे जीवां।
जो दीक्षा लेवो श्री नेम पे,
मैं पिछला री करूँ सहाय—रे० मो० ॥४॥
सहस्र-पुरुष संयम लियो,
यो परतख महा-उपकार—रेजीवां।
पिण इन्द्र पड़हो फेर्‍यो नहीं,
तिणरो बुधवन्त करो विचार—रे० मो० ॥५॥
जो इन्द्र काम कियो नहीं,
तिणसूँ कृष्णने कहे (कोई) पाप—रेजीवां।

ते जिन धर्म रा अजाण छे,
खोटा हेतु री करे थाप—रे० मो० ॥६॥
सेणिक पड़हो फेराविथो,
साधु ने देवो स्थान—रे जीवां।
वलि जीवहिंसा करो मती,
सप्तम अङ्ग में धरो ध्यान—रे० मो० ॥७॥
यो काम इन्द्र कीधो नहीं,
सेणिक कीधो धर ध्यान--रे जीवां।
ते तो साँचो समदृष्टि हुँतो,
तुम धारो हिरदे ज्ञान—रे० मो० ॥८॥
श्रेणिक इम न विचारियो,
यो इन्द्र कर्‌यो नहीं काम—रेजीवां।
मुझ ने धर्म होसीके नहीं,
एवो शंका न आणी ताम—रे० मो० ॥९॥
तो पिण (कुमति) इन्द्र रो नाम ले,
अनुकम्पा में नाखे भर्म—रेजीवां।
पिण इन्द्र ज्ञान में देखे तिम करे,
अनुकम्पा तो आछो धर्म—रे० मो० ॥१०॥

सावद्य ने निरवद्य वली,
अनुकंपा रा भेद दोय—रे जीवां।
इन्द्र कया नहिं तुम भणो,
थें भाखो क्यों निर्बुध होय—रे० मो०॥११॥
तब नो झटके बोल दे,
म्हारे इन्द्र सूँ काँई काम—रे जीवां।
म्हें सूत्र से कराँ परूपणा,
म्हारा गुराँ रो राखाँ नाम—रे० मो० ॥१२॥
तो समझो रे समझो जरा,
अनुकम्पा न सावद्य होय—रेजीवां।
सूत्र में न भाखी केवली,
:वलि इन्द्र कह्यो नहिं तोय—रे० मो० ॥१३॥
अणहुँती बात उठायने,
मत करो अनुकम्पा री घात—रेजीवां।
इन्द्र रो नाम लेई-लेई,
मत कर्म बाँधो साक्षात—रे० मो० ॥१४॥

८—अधिकार कोणिक-चेडाका संग्राम मिटाने में पाप कहते हैं, इसका उत्तर।

केइक कुमती इम कहे,
संग्राम छुड़ाया पाप—रेजीवां।
पहली पिण नहिं वर्जणा,
युद्ध होता जाणी साफ—रे० मो० ॥१॥
*चेड़ो कोणिक री साख दे,
भोलाँ ने सिखावे वाद—रेजीवां।
"वीर अनुकम्पा आणी नहीं,
(पोते) न गया न मेल्या साध—रे० मो० ॥२॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:

चेड़ा ने कोणिक नी वारता,
निरयावलिका भगवती साख रे।
मानव मुआ दोय संग्राम में,
एक क्रोड़ ने अस्सी लाख—रेजीवाँ ॥ ३६ ॥
भगवंत अनुकम्पा आणी नहीं,
पोते न गया न मेल्या साधरे।
याँने पहिला पिण वर्ज्या नहीं,

यांने पेहला पिण वर्ज्यो नहीं,
जाणता था संग्राम में घात—रेजीवां।
युद्ध मिटाया पाप छे,
तेथी कहो न मेटण वात"—रे० मो० ॥३॥
(उत्तर) भोला भरमावण तणो,
यो तो परतख माँड्यो फन्द—रेजीवां।
ज्ञानी पूछे तेहने,
तब मुखड़ो हो जावे बन्द—रे० मो० ॥४॥
जो युद्ध मेटण वीर ना गया,

ते तो जीवाँ री जाणो विराध—रेजीवाँ ॥ ४० ॥
एमाँ अनुकम्पा जाणता,
तो वीर विचाले जायरे।
सगलाँ ने साता उपजावता,
यह तो थोड़े में देता मिटाय—रेजीवाँ ॥ ४१ ॥
कोणक भक्त भगवान रो,
चेड़ो बारह-व्रत धार रे
इन्द्र भीड़ आयो ते समकिती,
ते किण विध लोपता कार—रेजीवाँ ॥ ४२ ॥
(अनुकम्पा ढाल—२)

तेथी रण मेटण में पाप—रेजीवां
तो हिंसा मेटण वीर ना गया,
तेथी हिंसा मेटण में पाप ?—रे० मो०॥५॥
तब तो बोले उतावला,
हिंसा मेट्याँ तो होवे धर्म—रेजीवां।
(तो) वीर मेटण किम ना गया,
महा हिंसा रा घोर कर्म—रे० मो० ॥६॥
चवदेपूर्व चार ज्ञान ना,
गोतमादिक लब्धी धार—रे जीवां।
याँने हिंसा मेटण मेल्या नहीं,
कोई कारण कहो निरधार—रे० मो० ॥७॥
कोणिक भक्तो वीर नो,
चेड़ो बारा-व्रत नो धार—रेजीवां।
(याँने) उपदेश देना वीर जाय ने,
दोनों हिंसा देता टार—रे० मो० ॥८॥
तब तो बोले पाधरा,
"होणहार न मेटी जाय—रेजीवां।
(केवल) ज्ञान में देख्या थी ना गया,

घलि साधु न मेल्या साथ"—रे० मो० ॥९॥
तो इमहिज समजो भाव थी,
संग्राम मेटण में धर्म रे जीवां।
न्याय रीत समझाविया,
शान्ति हुए न बन्धे कर्म—रे० मो० ॥१०॥
सब जीव खेमंकर वीरजी,
"सुगडायँग" माँय देख---रे जीवां।
भय मेटे सब जीव रा,
अभयंकर विरुद विशेख—रे० मो० ॥११॥
भगवन्त विचरं देश में,
सौ-सौ कोसाँ रे माँय—रे जीवां।
मनुष्याँ रे उपद्रव ना रहे,
पिण होणो तो मिटे नाँय रे० मो० ॥१२
तिन चेड़ा-कोणिम संग्राम में,
न्याय मिटाया मोटो-धर्म रे जीवां।
मिटतो न देख्यो ज्ञान में,
प्रभु ना गया समझो मर्म—रे० मो० ॥१३॥
अनुकम्पा उठायवा,

मिथ्या माँड्यो थाँ परपंच रे जीवां।
चतुर विचारे न्याय ने,
त्याग देवे मिथ्या खंच रे० मो० ॥१४॥

६—अधिकार समुद्रपालजी ने चोर पर अनुकम्पा नहीं करी कहते हैं, उसके विषय में

पालित श्रावक गुणमणि,
प्रवचने पण्डित जाण रे जीवां।
समुद्रपाल सुत तेहनो
महल माँहे बैठो सुखमाण रे० मो० ॥१॥
फाँसी-योग एक पुरुष ने,
फाँसी रो पेरायो वेष रे जीवां।
तिणने मारण ले जावताँ,
समुद्रपाल देख्यो विशेष रे० मो० ॥२॥
करुणा उपजो अति घणी,
अहो-अहो कर्म-विपाक रे जीवां।

वैरागे संजम लियो,

मोक्ष गया करम कर खाक रे० मो० ॥३॥

(कहे) "अनुकम्पा न आणी चोर री":

एवो कुमति काढ़े वाँय रे जीवां।

अनुकम्पा रो धर्म उथापवा,

भोला ने दिया भरमाय—रे० मो० ॥४॥

दुःखी देख कोई जीव ने,

करुणा उपजे मन माँय—रे जीवां।

कोमल-भाव करुणा कही,

दुःख मेटण भाव कहाय—रे० मो० ॥५॥

शक्ति अवसर पाय ने,

पर-जीवाँ रा मेटे दुःख रे जीवां।

सफल करे निज भावने,

करुणा रे हो सन्मुख—रे० मो० ॥६॥

जो शक्ति अवसर ना हुवे,

अनुकम्पा रहे मन माँय—रे जीवां।

ते भावे करुणा जिन कही,

व्यवहारे नाय दिखाय—रे० मो० ॥७॥

जिम 'जीरण' भाई भावना,
वीर रो नहिं मिलियो जोग—रे जीवां।
तिरियो निर्मल भाव थी,
व्यवहारे रयो वियोग—रे॰ मो॰ ॥८॥
तिम मरता पुरुष देखने,
करुणा उपजो मन माँय—रे जीवां।
सरूप जाण संसार नो,
समुदपाल नी धूजो काय—रे॰ मो॰ ॥९॥
चोर अपराधो राय नो,
ते राख्यो कहो किम जाय—रे जीवां।
व्यवहार नहीं यह जगत नो,
राखण री शक्ति नाय—रे॰ मो॰ ॥१०॥
तेहथी छोड़ाई ना सक्या,
पिण छोड्यो संसार—रे जीवां।
भावाँ करुणा आदरी,
तेथी पाया भव नो पार—रे॰ मो॰ ॥११॥
समुद्पाल नो नाम ले,
करुणा उठावण काज—रे जीवां।

ते वैरी अनुकम्पा तणा,
झूठ बोलण री नहिं लाज—रे० मो० ॥१२॥
भवजीव हिरदा में धारजो,
निश्चय करुणा रा भाव—रे जीवां।
शक्ति सारू सफळो करे,
जय मिले व्यवहार रो दाव—रे० मो० ॥१३॥
साधु श्रावक दोनों तणा,
करुणा रा भाव सुहाय—रे० जीवां।
परवरती जुई-जुई,
तुमे जुवो सूत्र रो न्याय—रे० मो० ॥१४॥
जिनकल्पी थीवर कल्पीनो,
प्रवृति एक न होय—रे जीवां।
एक करघा प्राछित हुवे,
दूजे नहिं करवा थी जोय—रे० मो० ॥१५॥
निम श्रावक साधू तणी,
भिन्न-भिन्न छे मर्याद—रे जीवां।
गेही (गृहस्थ) न करे पापी हुवे,
ते ही करवो न कल्पे साध—रे० मो० ॥१६॥

भूखा राखे भोजन ना दिये,
श्रावक होवे दया हीण—रे जीवां।
साधु आहार न देवे गृहस्थ ने,
ते तो कल्प राखण परवीण—रे० मो०॥१७॥
"साधु-श्रावक दोनों तणी,
अनुकम्पा प्रवृति एक"—रे जीवां।
एवो (केई) करे प्ररूपणा,
उत्तर पूछ्याँ पलटता देख—रे० मो०॥१८॥
साधु उपधि में उलझिया,
उंदरादिक जीव जाण— रे जीवां।
(साधु) अनुकम्पा आणी ने छोड़ दे,
नहिं छोड्या थी होवे हाण—रे०मो०॥१९॥
गेही (गृहस्थ) रे रस्सीमें उलझिया
गायादिक प्राणी जाण—रे जीवां।
गेही दयासे छोड़ दे,
नहिं छोड्यां थी होवे हाण—रे० मो०॥२०॥
धर्म बतावे साधने,
गेहीने बतावे पाप—रे जीवां।

फर्क पड्यो किण कारणे

खोटी श्रद्धा दीखे साफ—रे० मो० ॥२१॥

"साधु श्रावक री एक रीत छे"

मूंढा थी बोलो एम—रे जीवां ।

दोनों सरीखा काममें

तुमे फर्क बतावो केम—रे० मो० ॥२२॥

जीव मरे साधु योग थी,

गृहस्थ बताया धर्म—रे जीवां ।

गेही गेही ने जीव बताय दे

तिणमें तो बतावो अधर्म—रे० मो० ॥२३॥

जीव बच्या दोनों जगा

दोनों रा टलिया पाप—रे जीवां ।

इन दोनों सरिखा काममें

उलट पलट करे खोटी थाप—रे० मो०॥२४॥

धर्म बतावे एकमें

दूजामें केवे पाप—रे जीवां ।

यो कुटिल-पन्थ कुगुरां तणो

खोटी श्रद्धा दीशे साफ—रे० मो० ॥२५॥

चौथी ढाल।

(कहें) "नाड़ो भरियो हो डेंडक माछला,
तिण पर भैंस्यो आयो चलाय हो भविकजन ॥
तिणने हंकाल्या दुःख थो मरे,
नहीं हंकाल्या मरे तसकाय हो भविकजन ॥
करो परिक्षा सत धर्म री ॥१॥

"धर्मी छोड़ावे केहने
कर्म करी दुख पाय हो भविकजन ।
लाय लागी संसारमें,
बीचे पड़िया पाप बंधाय हो" भ० करो० ॥२॥

(उत्तर) इम भोलांने भरमायवा,
खोटा लगाया न्याय हो भ० ।
ज्ञानी कहे हिवे सांभलो,
इण भरमने देवां मिटाय हो भ० करो ॥३॥

भैंस्याने जातां देखने
दयावन्त दया लाय हो भ० ।

॥ मछली मेढ़कवाली तलैया में जाती भैंस ॥

ढाल चौथी गाथा, ४, ५, ६ का भाव चित्र।
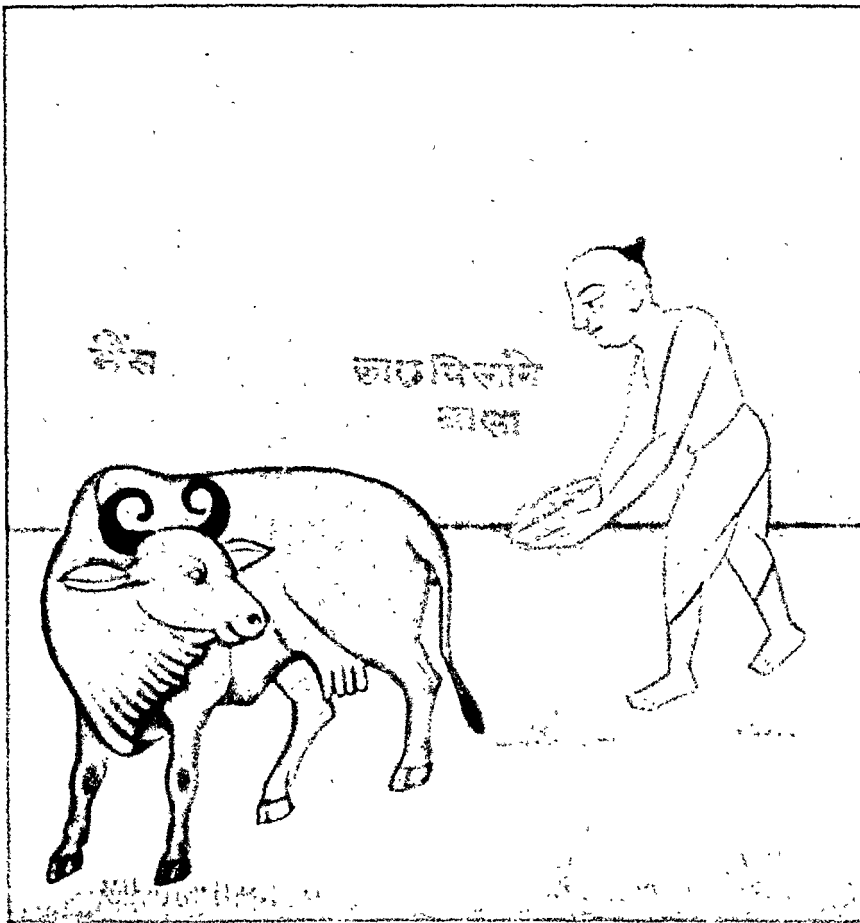
भैंस्याने जाताँ देखने, दयावन्त दयालाय हो ॥ भ० ॥
छाछ पाय संतोषियो, तिरखा दिवी मिटाय हो ॥ भ० ॥ ४ ॥
हिंसा न लागी भैंस्या भणी, जीवाँरी टल गई घात हो ॥ भ० ॥
दया शान्ति दोयाँ तणी, धर्म तणी या बात हो ॥ भ० ॥ ५ ॥
जो पाप बतावो थें एहमें, तो मोटो थारो पक्षपात हो ॥ भ० ॥
(तलाई) नाडा भैंसा रो मामलो, करुणारी बरणया बात हो ॥भ०॥६॥

छाछ पाय सन्तोषियो,
तिरखा दिवी मिटाय हो भ० करो० ॥४॥
हिंसा न लागी भैंस्या भणी,
जीवां री टलगई घात हो भ० ।
दया शान्ति दोयाँ तणी ,
धर्म तणी या बात हो भ० करो० ॥५॥
जो पाप बतावो थें एह में,
तो खोटो थारो पक्षपात हो भ० ।
(तलाई) नाड़ा भैंसाँ रो नाम ले,
थें करुणा री कर द्या घात हो भ०करो०॥६॥
(कहे) "साधु छाछ पावे नहीं,
तिण थी बतावाँ पाप हो भ० ।
जो इनमें साधु धर्म मानता,
तो झटपट करता आप हो भ० करो०" ॥७॥
(उत्तर) साधु गेही रा कल्परो,
ज्याँ रे घट में घोर अन्धार हो भ० ।
तेथी साधु रो नाम ले (गृहस्थ री):
दया छुड़ावे धिकार हो भ० करो०॥८॥

जिन कल्पी आदरता त्यागियो,
थीवरकल्पी ने देणो आहार हो भ० ।
ते परिचय टालण कारणे,
यो कल्पतणो व्यवहार हो भ० करो० ॥९॥
थीवरकल्पी दीक्षा समय,
गृहस्थ ने देणो आहार हो भ० ।
त्याग्यो परिचय टालवा,
यो मुनि रो आचार हो भ० करो० ॥१०॥
तेथी साधु न दे गेही ने,
ते कल्प रो मोटो काम हो भ० ।
गेही देवे पाप छुड़ायवा,
ते कल्पे सुध परिणाम हो भ० करो० ॥११॥
इम सुलिया-श्वान रो नाम ले,
लटाँ, इल्याँ रो न्याय हो भ० ।
काचा-पाणी ने कन्द रो,
तीम ऊकरड़ी मुख लाय हो भ० करो०॥१२॥
"इल्या लटां सुल्याधानपे
एक बकरी खावण जाय हो ॥भ०॥

॥ च ॥

॥ सुखे धान पर जाती बकरी ॥

ढाल चौथी गाथा १३, १४ का भाव चित्र।
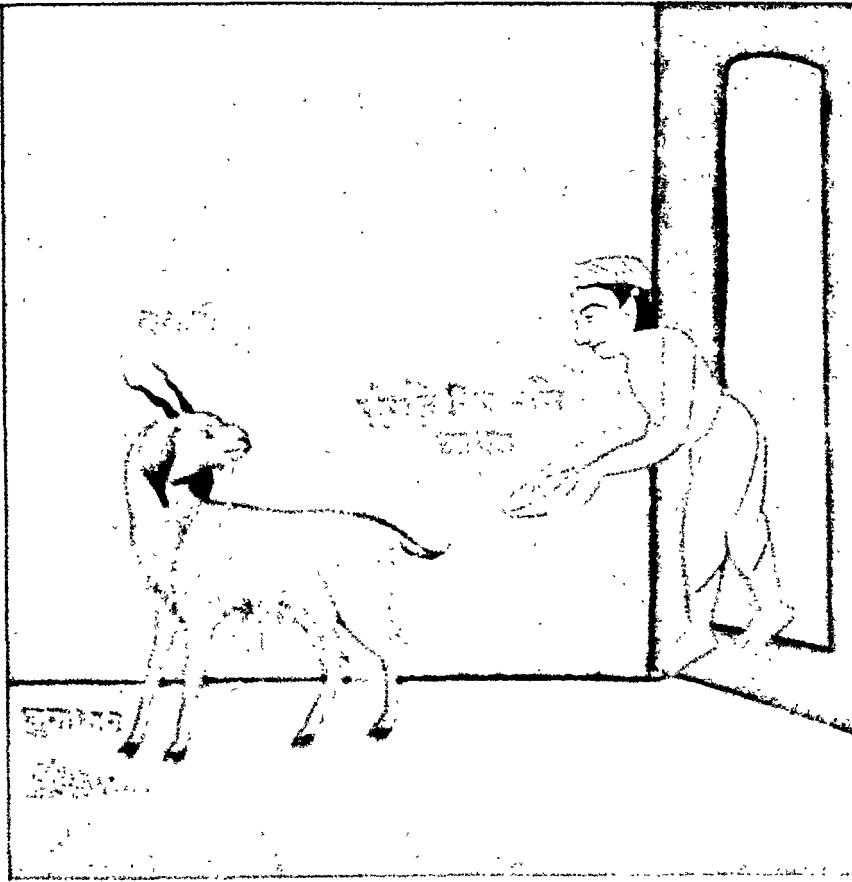
"हल्या जठाँ सुक्या धानपे, एक बकरी आयण जायवा ॥ भ० ॥
दयावंते मुंगड़ा न्याखने, लीया दोनोंने बचायवा ॥ भ० ॥ १३ ॥
हिंसा टली हल्याँ तणी, बकरी रो मिट्यो संताप हो ॥ भ० ॥
भाँरी धरमाँ फलो, धन्न मुनोके पाप हो ॥ भ० ॥ १४ ॥

दयावंते श्रृंगडा खवायने
लीया दोनोंने बचाय हो ॥भ० करो० ॥१३॥
हिंसा टली इल्यातणी
बकरी रो मिट्यो संताप हो ॥भ०॥ करो०॥
थाँरी श्रद्धा थी कहो
धरम हुवोके पाप हो ॥भ० करो० १४॥
खाड़ामें पाणी थोड़को
जीव घणा तिणमाय हो ॥भ०करो०॥
भरिया डेंडक माछला
पाणी पिवण आईगाय हो ॥भ०करो०॥१५॥
करुणावंते धोवन धानको
गायने दीदोपाय हो ॥भ०॥
पाप टाल्या दोनांतणी
इनमें धरम हुवोके नांय ॥भ० करो० ॥१६॥
चूहा ने बिल्ली तणा
मारवी मारवा चित्राम हो भ० ।
दया काढण कुगुरु किया,
खोटा जारा परिणाम हो भ० क० ॥१७॥

"चूहा मारण बिल्ली चली

दयावन्त दया लाय हो ॥भ०॥

रक्षाकरी चूवातणी

पयमिनकीने दीनोपाय हो ॥भ०॥१८॥

प्राण बच्या चूवातणा

मिन्नी रो मिटायो पाप हो ॥भ०॥

थारी श्रद्धासे कहो

धरम हुवोके पाप हो ॥भ०॥१९॥

(उत्तर) ज्ञानी पुरुष हुआ घणा,

सूत्र रच्या तंतसार हो भ० ।

जीव रक्षा रे कारणे,

देखो "संवरद्वार" हो भ० करो०॥२०॥

जिण न्याय हेतु दृष्टान्त थी,

कोमल हूवे चित्त हो भ० ।

दया अनुकम्पा ऊपजे,

॥ ङ ॥

॥ जल जंतु रक्षा ॥

ढाल चौथी गाथा १५, १६ का भाव चित्र।

खाड़ा में पाणी थोड़को, जीव घणा तिण माय हो ॥ भ० ॥
भखिया डेंडक माछला. पाणी पिवणआई गाय हो ॥ भ० ॥ १५ ॥
करुणावन्ते धोवन धानको, गायने दीयो पाय हो ॥ भ० ॥
पाप टाल्या दोनां तणा, इनमें धरम हुवो के नाय हो ॥ भ० ॥ १६ ॥

॥ क ॥

॥ चूहों की रक्षा ॥

ढाल चौथी गाथा १८, १९ का भाव चित्र।

"चूहा मारण मिन्की चली, दयावंत दयाल्याय हो ॥ म० ॥
रक्षा करी चूवा तणी, पयमिनकी नै दीनो पाय हो ॥ म० ॥ १८ ॥
प्राण बच्या चूवा तणा, मिनकी रो मिटायो पाप हो ॥ म० ॥
भाँति भलासे पूछो, धरम हुवो के पाप हो ॥ म० ॥ १९ ॥

ते सत-शास्त्र *री रीत हो ॥ भ० करो ॥२१॥
जिण न्याय हेतु दृष्टान्त थी,
दया भाव उठ जाय हो भ० ।
ते कुहेतू जाणजो,
(थो) सांचो समझो न्याय हो भ० क० ॥२२॥
अल्प पाप बहु-पाप रा,
ज्ञानी बताया काम हो भ० ।
बुधवन्त समझे ज्ञान सूं,
ओलखे सुध परिणाम हो भ० करो० ॥२३॥
जे कारज करता थकां,
भारी टलजावे पाप हो भ० ।
आपनो परनो बेहु नो,
करमां ने नाखे काप हो भ० करो० ॥२४॥
ज्ञान दर्शन होवे निर्मला,
पाप टालण परिणाम हो भ० ।

* जं सुच्चा पडिवज्जन्ति, तवं खंतिमहिंसयं ॥
(उ० अ० ३)
अर्थात्-जिसके श्रवण से तप, क्षमा और अहिंसा, इन गुणों की प्राप्ति हो, वह सच्चा शास्त्र है ।

संवर निरजरा दीपती,

सद्गुण रो होवे धाम हो भ० करो० ॥२५॥

पेला रो पाप छुड़ावियो,

ते पिण पावे ज्ञान हो भ० ।

तो पथिक होवे ते मोक्ष रो,

गुणां रो ध्यावे ध्यान हो भ० करो० ॥२६॥

जो ज्ञान पावण शक्ति नहीं,

तो पिण टलियो पाप हो भ० ।

तीव्र आरत रुकवा थकी,

मिटे महा सन्ताप हो भ० करो० ॥२७॥

(पिण) कुगुरु कथन खोटा किया,

पाप मेटणमें पाप हो भ० ।

भोलांने भरमायवा,

खोटी कर रया थाप हो भ० करो० ॥२८॥

महापाप टलावे पारका,

तन धन ममत उतार हो भ० ।

साय करे सन्तोष दे,

विविध करे उपकार हो भ० करो० ॥२९॥

ज्ञान दया शुध भाव सूं,

टाले पर रो पाप हो भ० ।

तीव्र-वेदना छुड़ाय दे,

अरु मेटे सन्ताप हो भ० करो० ॥३०॥

उलटी मति रा मानवी,

दुःख मेटणमें पाप हो भ० ।

धर्म अंश श्रद्धे नहीं,

खोटो जारो जाप हो भ० करो० ॥३१॥

दुःख दियां हिंसा हुवे,

सुख अनुकम्पा जाण हो भ० ।

घूघू ने सूझे नहीं,

परगट ऊगो भान हो भ० करो० ॥३२॥

पापो ने धर्मी करे,

देइ दान सन्माने हो भ० ।

कीधो मिथ्याती रो समकिती,

करि वहलो सन्मान हो भ० करो० ॥३३॥

इत्यादि पर उपकारमें,

एकान्त थापे पाप हो भ० ।

सूत्र वचन उत्थापने,

या खोटी श्रद्धा साफ हो भ० करो० ॥३४॥

पिछलां री साल संभाल सूं,
पुरुषां एक हजार हो भ० ॥
कृष्ण दलाली थी हुवा,
निर्मल संजम धार हो भ० करो० ॥३५॥
खेत्र अखेत्र वासी समा,
दाता कह्या जिणराज हो भ० ।
पात्र अपात्रे दान दे,
जिन धर्म दिपावण काज हो भ० करो० ॥ ३६॥
शंका होवे तो देख लो,
"ठाणायंग" रे माय हो भ० ।
चौथा ठाणे जिन कह्यो,
समझ सरधा पाय हो भ० करो० ॥३७॥
कहि कहि ने कितनो कहूं;
शुध भावे पर उपकार हो भ० ।
धर्म पुण्य शुद्ध ऊपजे;
पावे सुख श्रीकार हो भ० करो० ॥३८॥
बीदासर मांहि भली;
जोड़ करी धर ध्यान हो भ० ।
पूनमचन्दजी री हाटमें
छयांसी साल दरम्यान हो भ० करो० ॥३९॥
चौथी ढाल समाप्तम्

दोहा

अनुकम्पा उत्थापवा, देवे तीन दृष्टान्त ।
यथायोग खण्डन करू, ते सुणजो मन शान्त॥१॥

पांचवीं-ढाल

(तर्ज-सहेल्याँ ए आंबो मोरियो)

केई कुहेतु इम कथे,
(वली) देखाड़े हो कांकरा चित्राम।
"एक चोर चोरे धन पारको,
एक मारे हो पंचेन्द्री ने ठाम॥"
शुद्ध श्रद्धा ने ओलखो॥१॥

(भवि) शुद्ध श्रद्धाने ओलखो,
किणविध री हो रची माया जाल।
करुणा ने उत्थापवा,
भोला ने हो नाख्या भ्रमजाल॥शुद्ध०॥२॥

"एक लम्पट पर-नार नो,
यां तीनां रे हो कर्म नो बन्ध होय।

(यां) तीनां ने साधु मिल्या,
प्रतिबोध्या हो कर्म बन्ध न होय ॥शु०॥३॥
याँ तीनो ने (मुनि) समझाविया,
तीना रा हो टाल्या महा-पाप।
चोर चोरी छोड़्या थका,
धन रह्या हो टल्यो धनि सन्ताप॥शु०॥४॥
हिंसक हिंसा छोड़ दी,
जीव बचिया हो धर्म प्रेमानुराग।
पर-नारी त्यागी तिण पुरुष री,
पड़ी कूवे हो जारणी उणरे राग ॥शु०॥५॥
धन, जीव रया नारी मुई,
जां रे काजे हो नहीं दां * उपदेश।

* जैसा कि वे कहते हैं:—
चोर तीनो ही समज्यां थकां;
धन रह्यो हो धनी रो कुशल क्षेम।
हिंसक तीनों ही प्रतिबोधिया,
जीव बचिया हो किया मारण रा नेम॥
भव्य-जीवां तुमे जिन-धर्म ओलखो ॥७॥
जे शील आदरियो तेहनो,

चोर हिंसक लम्पट तणा
पाप छोड़ावां हो मारी श्रद्धा री रेश'' ॥शु०॥६॥

इसड़ा कुहेतु केलवे,
जीवरक्षा में हो बतावे पाप ।
उत्तर इणरो सांभलो,
तेथी मिटे हो मिथ्या सन्ताप ॥शु०॥७॥

चोर अदत्त ले पारको,
ते धन ने हो दुःख-सुख नवी कोय ।
धन रा धणी ने दुःख ऊपजे,
इष्ट वियोगे हो आरत बहु होय ॥शु०॥८॥

तेथी अदत्त-पाप प्रभु भाखियो,
धनहर ने हो मुनि दे उपदेश ।

स्त्री हो पड़ी कुवां माँही जाय ।
यांरो पाप-धर्म नहिं साधुने,
बाला मूवा हो तीनों अव्रत मांय ॥अ०॥८॥

धन रो धणी राजी हुवो धन गयो,
जीव बचिया तें पिण हर्षित थाय ।
साधु तरण तारण नहीं तेहना,
मारीने हो पिण नहीं डुबोवे आप ॥अ०॥९॥

(अनुकम्पा ढाल—५)

पर-धन परना (बाह्य) प्राण छे,
ते हरता हो दुःख पावे विशेष ॥ शु०॥९॥
चोर ने मुनि प्रतिबोध दे,
तिण नर ना हो माठा टालन पाप ।
धन धणो ने आरत तणों,
पाप दुःख नो हो मेटण सन्ताप ॥शु०॥१०॥
इम पाप छुड़ावे बेहू ना,
बेहू नरना हो वलि टलिया दुःख ।
कर्मबन्ध टल्या मोटका,
दोनाँ रे हो हवो शान्ति नो सुख॥शु०॥११॥
केई साहूकार रा पूत रो,
देवे हेतू हो दया काढ़न काज
"एक ऋण लेवे कोई पारको,
ऋण मेटे हो दूजो धरि लाज ॥शु०॥१२॥
ऋण लेता ने बरज दे,
ऋण-मेटण हो नहिं रोके बाप ।
तिम हिंसक बकरा नित हणे,
करज करता हो बाँधे बहु पाप॥शु०॥१३॥

तेथी हल्का करम भारी हुवे,
मन्द-रस ना हो तीव्र-रस पहिचान॥शु०॥१७॥
अल्पस्थिति महास्थिति करे,
पाप भोगतां हो बांधे माठा कर्म ।
एवी करकश-वेदनी वेदता,
अरड़ावे हो ज्ञानी जाणे मर्म ॥शु०॥१८॥

सांभलजो सुखकार ॥ ६ ॥
साहुकार रे दोय सुत
एक कपूत अवधार ।
ऋण करड़ी जांगा तणुं,
माथे करे अपार ॥ ७ ॥
दूजो सुत जग दीपतो,
यश संसार मझार ।
करड़ी जागाँ रो करज,
उतारे तिण वार ॥ ८ ॥
कहो केहने वरजे पिता
दोय पुत्र में देख ।
वर्जे कर्ज करे तसु,
के ऋण-मेटत पेख ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३२ मीं ॥
(समता रस विरला ए देशी)

एवा कर्मबन्ध ना काम में,

कर्म-छूटण हो लेवे मिथ्या नाम ।

न्याय अन्याय तोले नहीं,

परतख दीखे हो माठा परिणाम ॥१९॥

सो बकरा कसाई हणता थका,

मुनिवरजी हो तिहां दे उपदेश ।

कर्ज माथे सुत अधिक करंतो ।

बार बार पिता बरजंतोरे, समझू नर विरला ॥

करड़ा जागां रा माथे कांय कीजे,

प्रत्यक्ष दुख पामीजे रे ॥ समम० ॥ १ ॥

अधिक माथा रो कर्ज उतारे,

जनक तास नहि वारे रे ॥

पिता समान साधु पिछाणो,

बकरो रजपूत वे सुत माणो रे ॥ समम० ॥ २ ॥

कर्म रूप ऋण माथे कुण करतो,

आगला कर्म कुण अपहरतो रे ॥ समम० ॥

कर्म ऋण रजपूत माथे करे छै,

पहला संचित-कर्म भोगवे छै रे ॥ ३ ॥

साधु रजपूत ने बर्जे सुहाय,

कर्म करत करे कांय रे ॥ समम० ॥

ते घात टालण बकरा तणी,
कसाई रा हो मेटण पाप कलेश ॥२०॥
करकश वेदना ऊपज्यां,
बकरा ध्यावे हो महा आरत ध्यान।
वलि रुद्र-ध्यान पिण ऊपजे,
"ठाणाअँग" (में) हो जोवो धरध्यान॥२१॥
पूर्व कर्म दोनों भोगवे,
नवा बांधे हो दोनों वैराणुबन्ध ।
मुनि उपकारी बेहूना,
उपदेशे हो टाले बेहूना द्वन्द ॥२२॥
(कहे) "हिंसक पाप छुड़ायवा,
में तो देवाँ हो धर्म रो उपदेश ।

कार्म बंध्या घणा गोता खासी,
पर-भव में दुख पासी रे ॥ ४ ॥
सरवर पणे तिण ने समझायो,
तिणरो तिरणो वंछ्यो मुनिरायो रे ॥ सम० ॥
बकरा जीवण नहीं दे उपदेश,
रूड़ो ओलख बुद्धिवन्त रेस रे ॥ ५ ॥
(भिक्षुजश रसायण)

मुनी का कसाई को उपदेश देने से लाभ।

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं।

ढाल पांचवीं गाथा २०, २१ का भाव चित्र।

सो बकरा कसाई हनता थका,
मुनिवरजी हो तिहाँ दे उपदेश ॥
ते घात टालण बकरा तणी,
कसाईरा हो मेटण पाप क्लेश ॥ २० ॥

करकश वेदना ऊपज्याँ,
बकरा ध्यावे हो महा आरत ध्यान ॥
वलि रुद्र ध्यान पिण ऊपजे,
"ठाणा अंग" (में) हो जोवो धर ध्यान ॥२१॥

वकरा, धन एक सारखा,

तिणरे कारण हो नहिं दां उपदेश" ॥२३॥

(उत्तर) एवो करे केई थापणा,

विकल हुआ हो अनुकम्पा रे द्वेष।

पाणानुकम्पा प्रभु कही,

नहीं पैसा नी हो(अनुकम्पा)जरा समझो रेस॥२४॥

(धन धणी) धनिक री अनुकम्पा होवे,

प्राणधणी हो वकरा री पिछाण।

पैसा ने दुख-सुख नहीं,

किम होवे हो दया चतुर सुजाण ॥२५॥

आरत-रुद्र वकरा तणो,

मुनि मेटण हो देवे उपदेश।

पैसा रे ध्यान-लेश्या नहीं.

सुख-दुख रो हो नहिं तिणरे क्लेश ॥२६॥

प्राणी अनुकम्पा मुनि करे,

जड़-धन में हो नहिं करुणा रो लेश।

जो जीव जड़ एकसा गिणे,

निर्दयता हो जागी घट में विशेष ॥शु०॥२७॥

हिंसक पाप मेंटण कह्यो,
बकरा रो हो मेट्यां कह्यो दोष ।
चूक पड़ी इण में किसी,
थारो दीखे हो बकरा पर रोष ॥शु०॥२८॥
इम पाप छुटा बेहू तणा,
बेहू जीव ना हो वलि टलिया दुःख ।
कर्मबन्धन टल्या मोटका,
दोनाँ रे, हो हुवो शान्ति नो सुख ॥२९॥
कदा खोटी पख खांचो कहो,
"मरता (जीव) काजे हो नहिं दां उपदेश
तिणरे निज्जरा होती बन्द हुवे,
म्हारी सरधारी हो या ऊंडी रेस" ॥३०॥
(उत्तर) इण लेखे तो हिंसक भणी,
उपदेश देणो हो थांरे पाप रे मांय ।
हिंसा छोड्यां बकरो बचे,
तदा निज्जरा हो होती रुक जाय ॥३१॥
इम अटके श्रद्धा थाहरी,
खोटी माँडो हो तुमे माया जाल ।

इण मिथ्या-पख ने छोड़ दो,
सत्-श्रद्धा रो हो मन आणो ख्याल ॥३२॥
निज्जरा भर्म मिटायवा,
एक हेतू हो सुनो चतुर सुजाण।
मास-खमण रे पारणे,
गोचरी आया हो मुनिजो गुणखाण ॥३३॥
कोई मूरख मन में चिन्तवे,
आहार वेराया हो निज्जरा मन्द होय।
नहिं वेरायां निज्जरा घणी,
तप वधसी हो मुनिने गुण जोय ॥शु०॥३४॥
जिण सुपात्रदान न ओलख्यो,
ते मूढ़-मति हो एवो करे विचार।
मुनि जांचे छे आहार ने,
देवगवाला ने हो हुवे लाभ अपार॥शु०॥३५॥
कदा आहार मुनि ने मिले नहीं,
समभावे हो निज्जरा बहु होय।
त्यांने पिण आहार आपनां,
दाता रे हो धर्म रो फल जोय ॥शु०॥३६॥

मुनि दान मांगे दाता दिये,
दोनां रे हो धर्म रो फल होय।
अन्तरा नहिं निज्जरा तणी,
योईं न्याय हो बकरा रो जोय ॥शु०॥३७॥
बकरो चावे निज प्राण ने,
मरण-भय थी हो छोड़ावे (मुझ) कोय।
जो छोड़ावे अभयदानो कह्यो,
दाता रे हो फल मोटको होय ॥शु०॥३८॥
(जिम) भयभ्रान्त हुवो राय संजती,
ते जांचे हो मुनि थी कर जोड़।
अभयदान दो मुझ भणी,
मृगमारण हो अपराध थी छोड़ ॥शु०॥३९॥
तव ध्यान खोल मुनिराय जी,
अभय (दान) दीनोहो भय मेटण जोय।
तिम मरता (जीव) भय पामता,
ते निर्भय हो अभयदान थी होय॥शु०॥४०॥
तिण अभयदान ने पाप में,
जे थापे हो ते मूढ़ गिर्वार।

॥ संयती राजा और मुनी ॥

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं ।

ढाल पांचवों गाथा ३६, ४० का भाव चित्र ।

(जिम) भय भ्रान्त हुवो राय संजती,
तेजाँचे हो मुनि थी कर जोड़

अभय दान दो मुझभणी.
मृगमारण हो अपराध थी छोड़ ॥शु०॥३६॥

तव ध्यान खोल मुनिरायजी,
अभय (दान) दीनो हो भय मेटण जोय ॥

तिम मरता (जीव) भय पामता,
ते निर्भय हो अभयदान थी होय ॥शु०॥४०॥
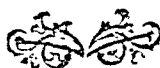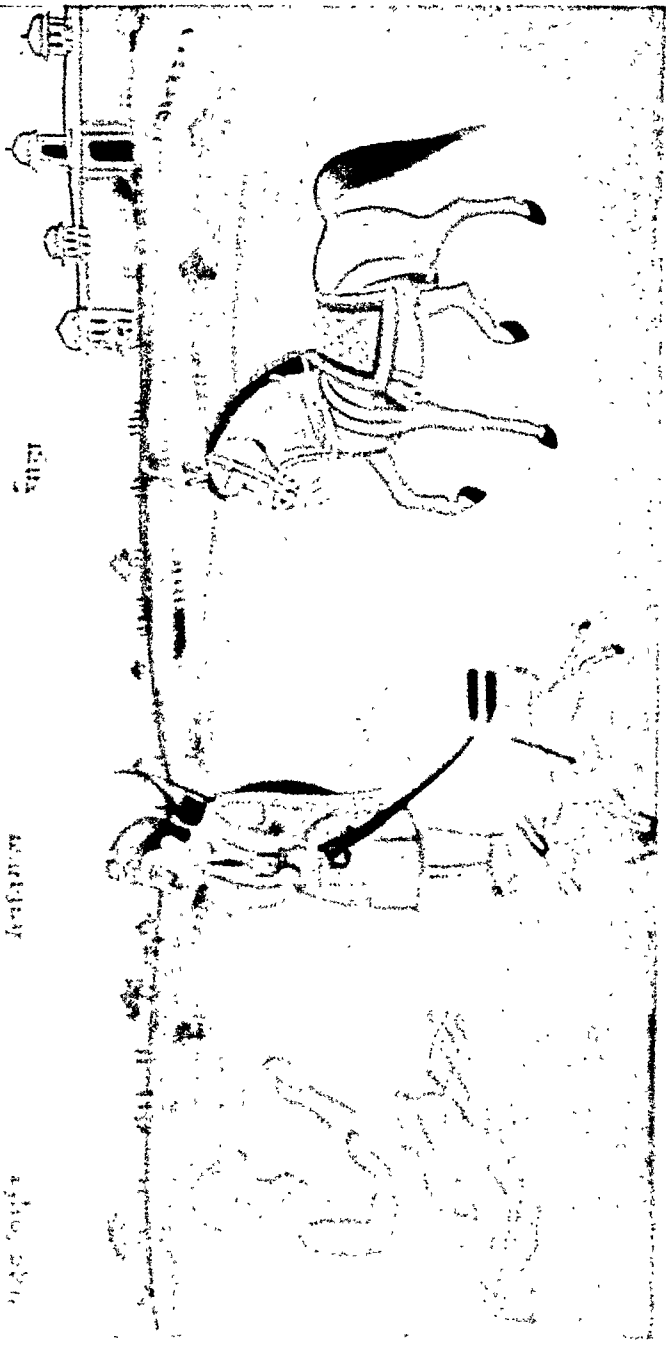
भय मेट्यां अभयदान छे,
समदृष्टि हो लेवे हिरदामें धार ॥शु०॥४१॥
(पिण) समभाव बकरी रे नहीं,
तिणरे निज्जराहो कहो किणविध होय ।
आर्त्त-रुद्र परिणाम थी,
मोटा पाप रो हो बन्ध कर रयो सोय॥४२॥
तेथी तिणने बचाया गुण होवे,
निज्जरा री हो अन्तराय न कोय ।
भय मिटियो, गुण नीपज्यो,
मेटणहारो हो अभयदाणी होय ॥४३॥
वलि सत्य-हेतु एक सांभलो,
तिन वाण्या री हो चाली जलमें पान ।
एक लाभ लेई घर आवियो,
बीजो लाग्यो हो धन मूल ज साथ॥शु०॥४४॥
तीजे मूल गमावियो,
ई दृष्टान्ते हो जाणो दया रो काम ।
एक जीव बचाया उपदेशे,
लाभ बहुलो हो होवे शुभ परिणाम ॥४५॥

मौन रहे बोले नही,

मूल-पूंजो रो हो ते राखणहार ।

मार कहे तीजो पापियो;

मूल पूंजो रो हो ते तो खोवणहार।।शु०॥४६॥

केई कुतरकी इम कहे;

जीव बचिया हो बधे पाप री वेल ।

खोटा न्याय बहुविधि कथे,

तुमे सुणजो हो खोटी सरधारो खेल॥४७॥

(कहे) 'परस्त्री-पापी एक पुरुष ना,

उपदेशे हो मुनि मेट्या पाप ।

'पर-नारी जाई कूवे पड़ी,

तिणरो मुनिने हो नहिं पाप-सन्ताप ॥४८॥

बकरा बच्या नारी मुई,

में तो समझां हो दोनों एक समान ।

बकरा बच्या दया नही,

नारी मुआ हो नहिं हिंसा स्थान॥शु०॥४९॥

बकरा बच्या धर्म सरधसी,

तिणरी सरधामें हो नारी मुआ रो पाप ।'

एवा कुहेतू केलवी,

भोला आगे हो करे मत री थाप ॥शु०॥५०॥

(उत्तर) हिवे ज्ञानी कहे भवि सांभलो,

बचियां-मरिया री हो सरखी नहीं बात।

बकरा री रक्षा कारणे,

उपदेशे हो मुनिजी साक्षात् ॥शुद्ध०॥५१॥

नारी मारण (मुनि) कामी नहीं,

मारण में हो नहीं पर-उपकार।

आत्मघात करे (कोई) पापिणी,

महा मोहवश हो मरे ते नार ॥शु०॥५२॥

त्याग हेते स्त्री मरे नहीं,

मोह कारण हो या मरे मन-लीण।

तिणरी पिण घात छुड़ायवा,

उपदेशे हो मुनि धर्म-प्रवीण ॥शुद्ध॥५३॥

सुण उपदेश (कदा) घच गई,

तेथी टलिया हो महा-मोहनीकर्म

आत्महन्या टल गई,

गुण निपज्यो हो यो धर्म रो मर्म॥शु०॥५४॥

बकरो नारी बचिया थका,
गुण निपजे हो टले पाप विकार ।
स्वघाते गुण नहिं नीपजे,
सुधमत थी हो करो जरा विचार ॥५५॥
मरणो बचावणो एक है,
एतो जाणो हो विकलां रा वेण ।
जारे भान नहीं धर्म-पाप रो,
जारा फूटा हो हिया रा नेण ॥शुद्ध०॥५६॥
मुनि उपकारी बेहूना,
बेहू जण ना हो मेट्या माठा कर्म ।
जो श्रद्धा पामे ते बेहू,
तो पामे हो संवरनो-धर्म ॥शुद्ध०॥५७॥
आरत-रूद्र टले बेहुना,
श्रद्धा योगे हो धर्म-ध्यानो होय ।
इम तिरण-तारण मुनि बेहुना,
उपकारी हो मुनि बेहूना जोय ॥शु०॥५८॥
कदि कर्म-उदय बेहू जणा,
संवर श्रद्धा हो पामे नहिं दोय ।

॥ ज ॥

चित्र देखने के लिये है वन्दना के लिये नहीं।

॥ व्यभिचारनी स्त्रीको उपदेश ॥

ढाल पांचवीं गाथा ५४ का भाव चित्र।

"गुण उपदेश कह्यो तिन मांई, तेणेछल्योंथाहो महामोहनी कर्म ॥
पालव-दरबा टल गई, गुण निपज्योंहो यो धर्म रो मर्म ॥ ५४ ॥

तो भारी-पाप वेहू ना टले,
आरत पिण हो हलको बहु होय ॥५९॥
(कदा) उपदेश वेहू माने नहीं,
(तो पिण) साधु रे हो उपदेश रो धर्म ।
(कदा) एक माने एक माने नहीं,
जो माने हो तिणरा टलिया कर्म॥शु०॥६०॥
किणरी शक्ति नहीं समझण तणो,
तिणरो पिण हो मुनि वंछयो हित ।
तेथी वच्छल छहु-काया तणा,
परतख प्रेखे हो हितकारी चित॥शु०॥६१॥
"सरदह तलाव" फोड़न तणा,
त्याग कराया हो मुनि मेट्या कर्म ।
सरदह तलाव जीवां तणा,
दुख टलियो हो जिन भाख्यो धर्म ॥६२॥
नीम्ब आम्बादिक वृक्ष ना,
कराया हो मुनि काटण नेम ।
ते हितकारी वेहू तणा,
सगलने हो मुनि कीनो क्षेम ॥शु०॥६३॥

उपकार समझ शक्ती नहीं,
विकलेन्द्री हो जीवां री जाण।
मुनि जाणे तस वेदना,
उपदेशे हो हितकारी वखाण ॥शुद्ध०॥६४॥
दव देई गांव जलावता,
उपदेशे हो कराया नेम।
ते दाहक ग्राम बेहू तणो,
पाप टाली हो उपजावो क्षेम ॥शुद्ध०॥६५॥
इम मांसादि खावा तणा,
सुख करावे हो मेटण तस पाप।
वलि मांसे मरता जीव रा,
हितकारी हो मुनि मेटे सन्ताप ॥शुद्ध॥६६॥
सूत्र भगोती शतक सातमें,
इम भाख्यो हो श्री दीनदयाल।
निर्दोषण मुनि भोगवे,
छकाया नो हो वांछक करुणाल ॥शु०॥६७॥
जौं जीवां रा शरीर रो आहार ले,
त्यां जीवा ना मुनि वंछक होय।

(तिम) हिंसा छूट्या बच्या जीवड़ा,
उपकारी हो मुनि रक्षक जोय ॥शुद्ध०॥६८॥

जीव मारण में हिंसा कही,
नहीं मारे हो दया रा परिणाम ।
मरता जीव बचाविया
मनसा वाचा हो दया रो काम ॥शुद्ध०॥६९॥

* केइक इणमें इम कहे,
"जीवाँ काजे हो नहिं दाँ उपदेश ।
एक हिंसक समझावने,
नहिं मेटाँ हो घणा जीवां रा क्लेश" ॥७०॥

* जैसा कि वे कहते हैं —
केइक अज्ञानी इम कहे,
छः काया काजे हो देवां धर्म उपदेश ।
एकण जीव ने समझावियां,
मिट जावे हो घणा जीवां रा क्लेश ॥
[illegible] जीवां तुम जिन धर्म ओलख्यो ॥[illegible]॥
छः काय घरे शान्ति हुवे,
एहवो भाखे हो अन्य-तीर्थी धर्म ।
त्यांरो भेद न पायो जिन धर्म रो,
ते तो भूल्या हो उदय आया अशुभ कर्म ॥[illegible]
(अनुकम्पा ढाल —[illegible])

सब जीवाँ रे शान्ति होवे,
एहवो भाखे हो दयाधर्मों धर्म।
कुगुरु तेने पापी कहे,
(वलि) बतावे हो मिथ्यात रो भर्म ॥७१॥
हिवे सदगुरु कहे तुम साँभलो,
सूतर सूँ हो निरणो लेवो जोय।
छः काया रे शान्ति कारणे,
उपदेशो हो दयाधर्म ते होय ॥शुद्ध०॥७२॥
सुगड़ाँग श्रुतस्कन्ध दूसरे,
अध्ययन छठे हो भाख्यो पाठ रे माय।
त्रस थावर (जीव) खेमंकर वीरजी,
धर्म भाखे हो मत हणो तस वाय ॥७३॥
त्रस थावर (रे) शान्ति कारणे,
करुणा कही हो दशमा-अंग रे माँय।
ये सह्नु (सूत्र) पाठ उथापने,
मिथ्यामति हो बोले झूठा वाय ॥शु०॥७४॥
"शान्ति न होवे * छः काय रे"

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—
आगे अरिहन्त अनन्ता हुवा;

एवा अनघड़ हो घड़ड़ावे ढोल ।
मिथ्या-उदय जे जीवरे,
तेना मुख थी हो एवा निकले बोल ॥७५॥
व्यवहार शान्ति परजीव ने,
निश्चे थी हो निज री ते होय ।
व्यवहार शान्ति उथापता,
निश्चे पिग हो खोय बैठा सोय ॥शु०॥७६॥
आगे जिन अनन्ता हुवा,
छः काया रा हो शान्ति करतार ।
दुःख मेटण उपदेश थी,
जगवच्छल हो जग ना सुखकार ॥शु०॥७७॥
जगनाथ, जगबन्धू कह्या,
नन्दी-सूत्रे हो गाथा प्रथम माँय ।
सब जीव राखण उपदेश थी,
सुख थापे हो बन्धू पद पाय ॥शुद्ध०॥७८॥

कहता २ हो नहीं आवे त्यांरो पार ।
ते आप तर्या और तारिया,
छःकाया रे हो शान्ति न हुई लिगार ॥२॥
(अनुकम्पा ढाल— ५)

शान्तिनाथ प्रभु ओलखाँ,
शान्तिकरता हो सब लोक रे माँय।
उत्तराध्येन में देखलो,
गणधरजी हो गुण जारा गाय ॥शु०॥७९॥
कही-कही ने कितना कहूँ,
छः काया रे हो शान्तिकरता रा नाम।
जो शान्ति न होती छः काय रे,
शान्तिकरता हो किम होता श्याम॥८०॥
मिथ्या हेतू खण्डवा,
वलि भाखूँ हो सूत्र री साख।
सत्य-स्वरूप ने ओलखो,
भव्य छोड़ो हो मिथ्या रो पाख ॥शु०॥८१॥
चउनाणी श्रुत केवली,
जगतारक हो केसी गुरुराय।
सितंवका रा बाग में,
धर्मदेशना हो दीनी सुखदाय ॥शु०॥८२॥
चित श्रावक सुण हर्षियो,
करे वीनती हो सुनिजे गुरुराय।

परदेशी अति पापियो,
पाप करने हो अति हर्षित थाय ॥शु०॥८३॥
अधर्मी यो राजवी,
अधर्म नी हो करे निशदिन थाप ।
रुधिर नीर एक समगिणे,
गाढ़ा-गाढ़ा हो स्वामी कर रयो पाप ॥८४॥
घो तो नर पशु पंखो ने,
(भिक्षु आदि की) वृत्ति आदी हो छेदो हर्षाय ।
विनय-भाव तिणमें नहीं,
तेथी गुरुजन (मात पिता आदि)
हो आदर नहिं पाय ॥ शुद्ध० ॥८५॥
देश दुःखो इण राय थो,
करड़ा लेवे हो हासिल दुःख दाय ।
तेने धर्म सुनाविया,
बहु गुणकर हो होसी मुनिराय ॥शु०॥८६॥
गुण होसी परदेशी राय ने,
पशु-पंखी हो नर ने गुण थाय ।
श्रमण महाण भीखारी ने,

बहु गुणतर हो होसी सुखदाय ॥शु०॥८७॥
देश रे बहु गुण उपजसी,
होजासी हो कराड़ा हाँसिल दूर।
राय १, जीव २, भिक्षु ३, देश ४ रे,
गुण हेते हो धर्म भाखो सनूर ॥शु०॥८८॥
जीव मारण परिणाम थी,
राजा रे हो मोटा लागे पाप।
(ते) उपदेश थी टल जावसी,
गुण पासो हो परदेशी आप ॥शु०॥८९॥
राय उपद्रव ना कोप थी,
मनुष्यादिक ने उपजे घणा क्लेश।
तेथी पापकर्म संचो करे,
राजा ऊपर हो घणे उपजे द्वेष ॥९०॥
यॉं रो पाप क्लेश मिट जावसी,
राजा ऊपर हो मिट जासी द्वेष।
(तेथी) जीवाँ ने बहुगुण होवसी,
मुनिसरजी हो थारे उपदेश ॥शु०॥ ९१॥
नृप वृत्तिछेद करड़ी करे,

राजा परदेशी, चित्तप्रधान और केशी श्रमण ।

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं ।

ढाल पांचवीं गाथा ८६, ६० का भाव चित्र ।

"तं जइणं देवाणुप्पिया पदेसिस्सरणो धम्ममाइक्खेज्जा वहु-गुणत्तरं खलु होज्जा पदेसिस्सरणो तेसिणं वहूणय दुपय चउप्पय मिग पसु पक्खि सरीसिवाणं ।"

"जीव मारण परिणामथी,
राजारे हो माठा लागे पाप ॥

(ते) उपदेशथी टल जावसी,
गुणपासी हो परदेशी आप ॥शु०॥८६॥

राय उपद्रव ना कोप थी,
मनुष्यादिक ने उपजे घणा क्लेश ॥

तेथी पाप कर्म संचोकरे,
राजा ऊपरहो घणो उपजे द्वेष ॥ शु० ॥६०॥
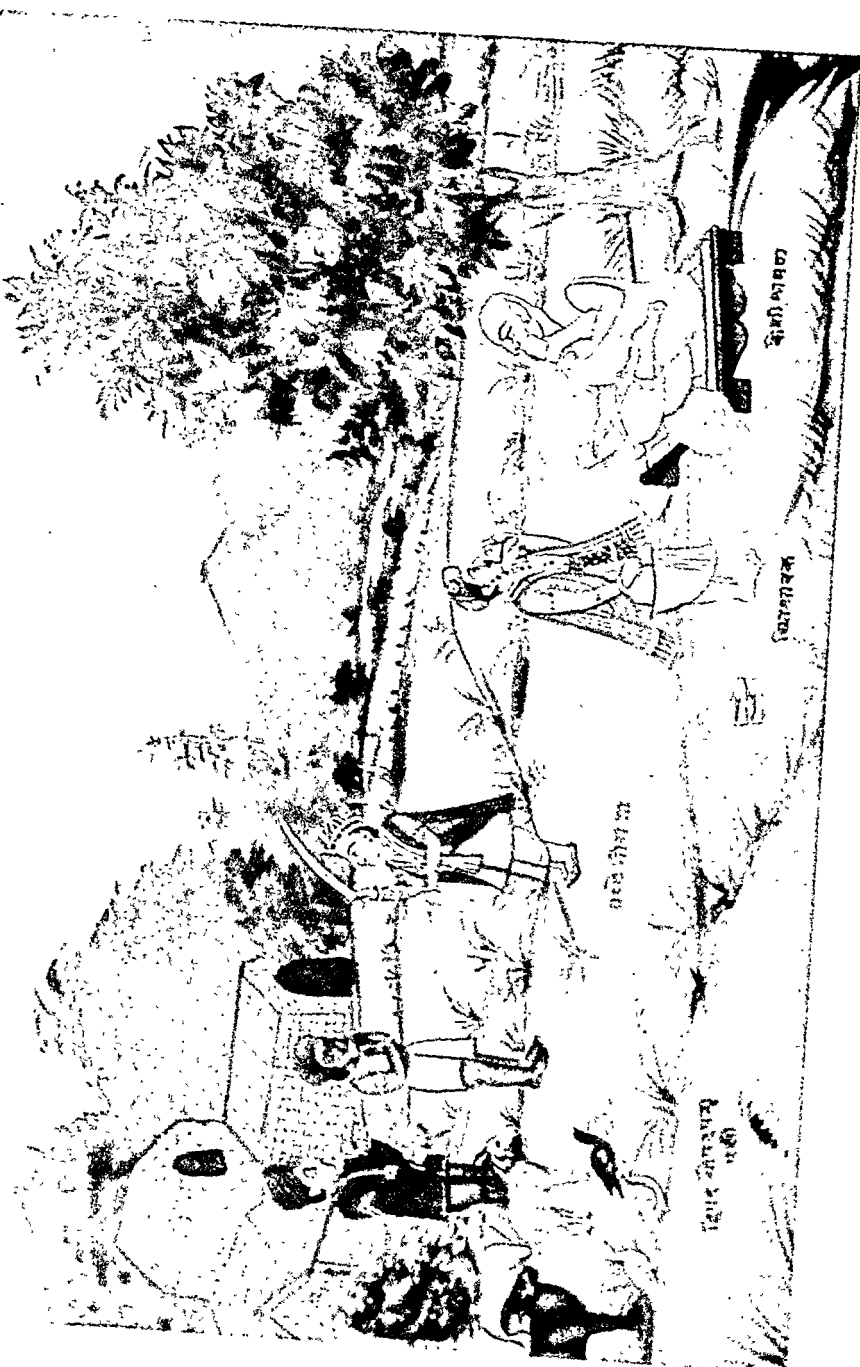
तेथी बांधे हो मैला पाप-कर्म ।
वृत्ति-छेद राय छोड़सी,
उपदेशो हो स्वामी निर्मलधर्म ॥शु०।०२॥
वृत्ति-तूटा दुखिया थका,
श्रमणादि हो करे हाय-विलाप ।
निशदिन कोपे राय पे,
खोटो लेश्या हो खोटा बाँधे पाप ॥०३॥
ते सगला ही शान्ती पावसी,
मिट जासी हो खोटा परिणाम ।
तेथी महागुण श्रमण-महाण रे,
भीखारी रे हो होसी गुण रो धाम ॥०४॥
देश दुःखी राजा कियो,
करड़ा-हाँसिल हो बांधे करड़ा पाप ।
ते छोड़ देशो उपदेश थी,
तेथी टलसो हो तेना पाप-सन्ताप ॥शु०॥०५॥
देशवासी राजा थकी,
नित्य पावे हो गाढ़ा सन्ताप ।
राजा पर कोपे घणा,

तेथी बन्धे हो घणा गाढ़ा पाप ॥शु॥९६॥
देश कलह मिट जावसी,
टलज़ासी हो मेला पाप विचार।
देश ने बहुगुण निपजसी,
तुमे करो हो स्वामी धर्म्म उच्चार ॥९७॥
चित विनती करी शुध-भाव थी,
शुध श्रद्धा री हो तुमे करो पिछाण।
(यो) व्रतधारी-श्रावक मोटको,
समकित धर हो गुण रत्नाँ री खाण ॥९८॥
जो जीव, भिखारी, देश री,
करुणा में हो नहिं श्रद्धतो धर्म।
(तो) अधर्म अर्ज तिण किम करी,
जिन वचनां रो हो ते तो जाणतो मर्म ॥९९॥
जीव बचावण कारणे,
उपदेशे हो चित श्रद्धतो पाप!
चौनाणी गुरु आगले,
विनती करता हो इणविध ते साफ ॥१००॥
स्वामी! हिंसा छोड़ावो रायरी,

केशी श्रमण, चित्त प्रधान, परदेशी राजा तथा श्रमण माहण।

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं।

ढाल पांचवीं गाथा ६२, ६३, ६४ का भाव चित्र।

"तं जइणं देवाणुप्पिया! पदेसिस्सरणो धम्ममाइक्खेज्जा वहुगुणत्तरं फलं होज्जा तेसिणं वहूणं समण माहण भिक्खुयाणं।"

"नृपवृत्ति छेद् करड़ी करे,
तेथी बाँधे हो मेला पाप कर्म॥
वृत्ति छेद राय छोड़सी,
उपदेशो हो स्वामी निर्मल धर्म॥शु०॥६२॥
वृत्ति टूटा दुखिया थका,
श्रमणादि हो करे हाय विलाप।
निशिदिन कोपे रायपे,
खोटी लेश्या हो खोटा बाँधे पाप॥शु०॥६३॥
तेसगला ही शान्ती पावसी,
मिटजासी हो खोटा परिणाम॥
तेथी महागुण श्रमण माहणरे,
भोखारी रो हो होसी गुणरो धाम॥शु०॥६४॥

केशी श्रमण

चित्र श्रावक

परदेशीराजा

श्रमण – ब्राह्मण

केशी श्रमण, चित्त प्रधान, परदेशी राजा तथा देश।

चित्र देखने के लिए हैं वंदने के लिए नहीं।

ढाल पांचवीं गाथा ६५, ६६, ६७ का भाव चित्र।

"तं जइणं देवाणुप्पिया! पदेसिस्स वहुगुणत्तरं होत्था सयस्स वियणं जणवयस्स।"

"देशदुखी राजा कियो,
करड़ा हांसिल हो बांधे करड़ा पाप॥
ते छोड़ देशी उपदेशथी,
तेथी टलसी हो तेना पाप-संताप॥शु०॥६५॥
"देशवासी राजा थकी,
नित्य पावे हो गाढ़ा संताप॥
राजा पर कोपे घणा,
तेथी बंधे हो घणागाढ़ा पाप॥शु०॥६६॥
"देशकलह मिट जावसी,
टल जासी हो मेला पाप विचार॥
देशने वहु गुण निपजसी,
तुमे करो हो स्वामी धर्म उचार॥शु०॥६७॥

देश
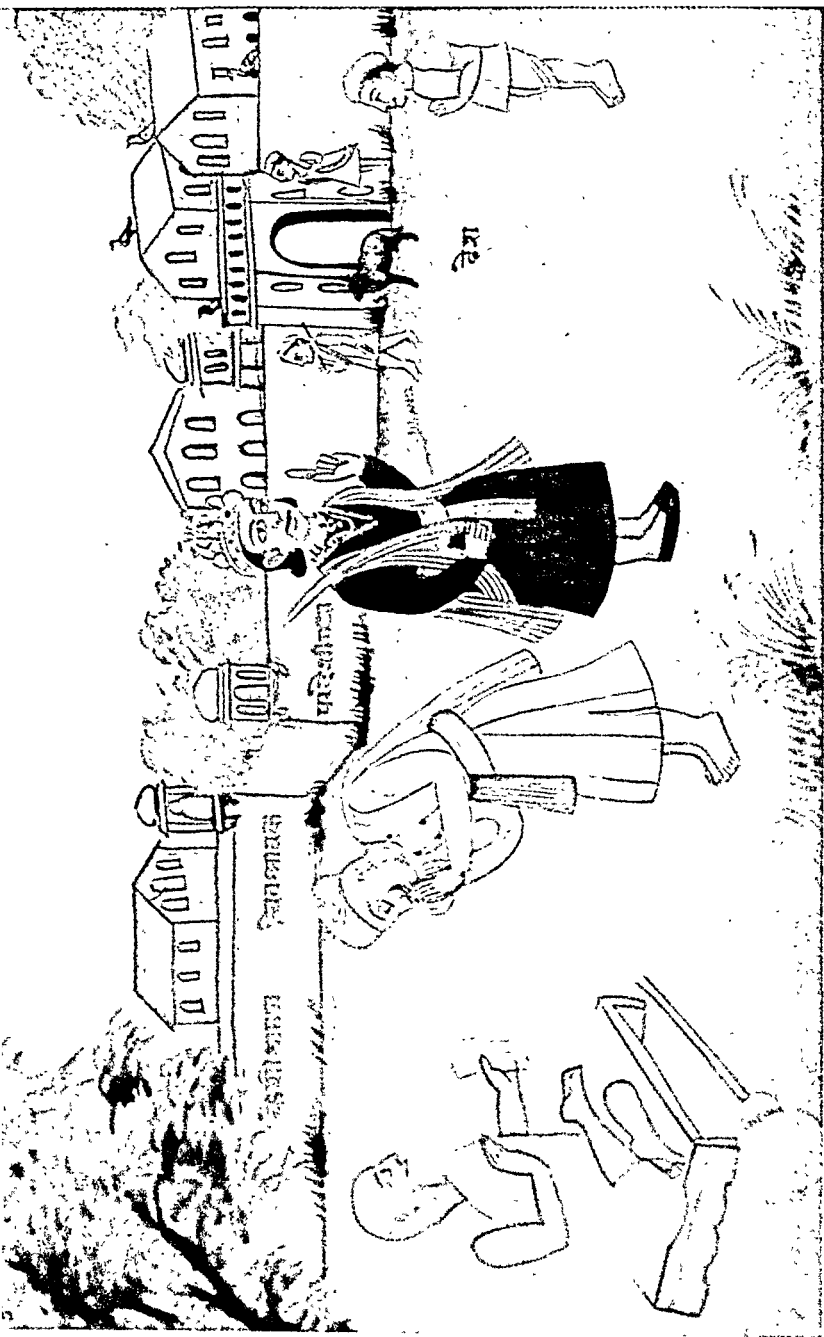
परदेशी हो होसी गुण रो धार।
जोव बचे मरता थकाँ,
त्याँ जीवां रे हो गुण नाहीं लिगार ॥१०१॥
तिस श्रमण, भिखारी देश रे,
गुण श्रद्धया हो स्वामी लागे मिथ्यात।
केवल राय ने तारणो,
या श्रद्धा हो स्वामी परम विख्यात ॥१०२॥
पिण चित इम नहिं भाषियो,
ते तो श्रद्धतो हो जीव बचियासें धर्म।
तेथी विनती करी गुरुराय ने,
(मरता) जीवाँरे हो कह्यो गुण रो मर्म॥१०३।
जीव बचावे ते पाप में,
या श्रद्धा हो श्रावक री नाय।
जीव बचे त्यांने गुण होवे,
या श्रद्धा हो चित री सुखदाय॥गु०॥१०४॥
जीव बचावणो धर्म में,
दुखिया री हो ते तो जाणतो मर्म।
सगलाँ रे गुण रे कारणे,

कीधी विनती हो उपदेशो धर्म ॥१०५॥

जो कसर होती इण कथन में,

केसी सामी हो केता तिणवार।

जीव, भिखारी, देश रे,

गुण श्रद्धां हो में तो नाहीं लिगार ॥१०६॥

सगलां रे गुण रे कारणे,

विनती कीधी हो समकित गुण जाय।

थारे श्रद्धा में दूषण ऊपनो,

आलोवो हो जिनधर्म रे न्याय ॥१०७॥

पिण चित श्रावक जिम श्रद्धता,

तिम श्रद्धता हो श्री केशी स्वाम।

दोनां री श्रद्धा एक थी,

तेथी नहिं लीनो हो निषेध रो नाम ॥१०८॥

मुनि, जीव, भिखारी, देश रे,

गुण हेते हो उपदेशे धर्म।

या श्रद्धा चित शुध जाणता;

विनती कीधी हो जैनधर्म रे मर्म ॥१०९॥

केशी श्रमण गुरुराज री,

चितजो री हो श्रद्धा थी एक।
(तेथी) विनतो मानी भाव थी,
चार बातां रो हो बताग्यो लेख ॥शु०॥११०॥
छोड़ो रे छोड़ो मिथ्यात ने,
जीवरक्षा रो हो तुमे श्रद्धो धर्म।
त्यागो कथन कुगुरु तणो,
खोटो घाल्यो हो अनुकम्पा में भर्म ॥१११॥
कोई पतिव्रता सती तणो,
एक पापी हो खण्डे शील विशेष।
देहत्याग मांड्यो सती,
तोहां मुनिजन हो दीनो उपदेश ॥११२॥
प्रबोध पापी पामियो,
सती नार ना हो रह्या शील ने प्राण।
मुनि उपकारी बेहुना,
तुमे समझो हो समझो नि सुजांण ॥११३॥
एक मौनव्रती मुनिराज री,
कोई पापी हो करतो थो घात।
(तिणने) उपदेश देई समझावियो,

रक्षा कीधी हो मुनि नो विख्यात ॥११४॥

जो बकरो बच्या पाप शृद्धसी,

तिणरे लेखे हो मुनि बचिया रो पाप।

जो मुनि बच्या करुणा कहो,

तो बकरो बचिया हो दया-धर्म है साफ॥११५॥

खोटा कुहेतु खण्डणो,

ढाल जोड़ी हो राजलदेसर मांय।

सांचे मन शुद्ध श्रद्धता,

श्रद्धा नो हो निरमल गुण पाय ॥११६॥

इति पञ्चम-ढाल सम्पूर्णम्

दोहा

साधु जीव मारे नहीं, पर ने न कहे मार ।
भलो न जाणे मारिया, त्रिकरण शुद्ध विचार ॥१॥
हणे, हणावे, भल गणे, परजीवां रा प्राण ।
तीन करण हिंसा कही, श्री जिन बचन प्रमाण ॥२॥
बोले, बोलावे, भल कहे, सावद्य कूड़ा वेण ।
तीनों करणे झूठ है, खोलो अन्तर नेण ॥३॥
जिम सत बोले साधुजी, पर ने कहे तू बोल ।
भल जाणे सत बोलियां, तीनों करण अमोल ॥४॥
तिम साधु बचावे जीव ने, पर ने कहे बचाय ।
बचिया अनुमोदन करे, त्रिकरण शुद्ध कहाय ॥५॥
(कहे) 'सावज-सत्य न बोलणो, तिम न बचाणो जीव
अनुकम्पा सावज हुवे," या कुगुरां री नींव ॥६॥
(उत्तर) सावद्य-निरवद्य सूत्रमें, सत्य रा भाख्या भेद
पिण अनुकम्पा रा नहीं, तज दो खोटो खेद ॥७॥
जिण बोले परजीव ने; दुख उपजे सुख नांय ।
ते सत ने सावज कह्यो, सुगड़ायंग रे मांय ॥८॥
पर पीड़ाकारी नहीं, हितकारी सुखदाय ।

ते सत निरवद्य जाणज्यो, जिन सासन रे मांय॥९॥
अनुकम्पा पर-जीव ना, प्राण बचावण हार ।
दुःख तिण थी उपजे नहीं,निरवद्य निश्चे धार ॥१०॥
भय मेट्यो परजीव नो, दान अभय प्रभु गाय ।
तिण में पाप बतावियो, जैनी नाम धराय ॥११॥
अभयदान नहिं ओलख्यो, दोनी दया उठाय ।
भोला ने भरमायवा, कूड़ा चोज लगाय ॥१२॥
(कहे) "जीवबचावे मुनि नहीं, पर ने न कहे बचाव
भलो न जाणे बचाविया" इम खोटा खेले दाव ॥१३॥

—*—
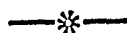
ढाल-छठी

(तर्ज—चतुर नर छोड़ो कुगुरु नो संग)

इण साधां रा भेख में जो,

बोले एहवी वाय

"छकाय रक्षा ना करांजी,

जीव बचावां नाय" ॥

चतुर नर समझो ज्ञान विचार॥१॥

एहवी करे परूपणा जी,

पिण बोले बन्ध न होय।

बदल जाय पूछ्यां थका जो,

ते भोला ने खबर न कोय ॥चतुर०॥२॥

थारे पाणी रे पानरे जो,

माखां पड़िया आय।

दुःख पावे अति तड़फड़े जो,

जूदा होवे जीव काय ॥चतुर०॥३॥

साधु देखे तिण अवसरे जो,

कहो काढ़े के नांय ?
तब तो कहे "झट काढ़णाजी,
नहिं काढ्यां अनरथ थाय ॥चतुर०॥ ॥४॥
(कदा) मूर्छाणी होवे माखियांजी,
जतना से मूर्छा जाय।
(तो) कपड़ादिक में बांधने जी,
मूर्छा देवां मिटाय" ॥चतुर०॥५॥
प्राणी नांय बचावणाजी,
थे' कहता एहवो वाय।
परतख माखा बचावियाजी,
थारी बोली में बन्धन काय ? ॥चतुर०॥ ६॥
कहे "जीव बचायां पाप छे जो,
किंचित नाहीं धर्म"।
तो सौ माखा बचाविया,
थारी श्रद्धा रो निकल्यो भर्म ॥चतुर०॥७॥
(इम चिड़िया) मूषादिक थारे पातरेजी,
पड़िया ने काढ़ो बार।
मुख सों कहो न बचावणाजी,
यो कूड़ो थारो व्यवहार ॥चतुर०॥८॥

पृष्ट १७६ क

वीर गोसालो बचावियो जी,
तिण में बतावो पाप ।
पोते उंदिर आदि बचायलो जी
थांरो खोटो श्रद्धा साफ ॥चतुर०॥१॥

(जो) पाप कह्यो भगवान ने जी,
(तो) पोते कां छोड़ो रीति ?
उन्दिर मारवा बचाविया (जो)
थारी कूग माने परतीत ॥चतुर०॥१०॥
गोसालाने बचायवा में,
पाप कह्यो साक्षात ।
(सो) मारवां मरता देखने जो,
क्यों काढ़ो निज हाथ ॥चतुर०॥११॥
इम कह्यां जाव न ऊपजे जो,
जब खोटी काढ़े वाय ।
(कहें) "उपधि हम साधु तणी जो,
जामें जीव कोई मर जाय ॥चतुर०॥१२॥
तो हिंसा लागे साध ने जी,
(ते) टालण बचावां जीव ।
दूजा नाय बचावणा जी,
या मारी श्रद्धा री नींव" ॥चतुर०॥१३॥
(उत्तर) (थारी) नेसराय री भूमि में जी,
(थारा) पाटा रे निकट में आय ।

(तपसी) श्रावक काउसग्ग कियो जी,

पड़ियो मरगी झोलो खाय ॥चतुर०॥१४॥

(थारा) पाटा रे ऊपर ढह पड्यो जी,

गल भागे जीव जाय ।

बोओ नहिं तिहां मानीवींजो,

थें बेठो करो के नांय ? ॥चतुर० ॥१५॥

तब तो कहे "म्हें साध छां जी,

(श्रावक) बेठो करां केम ।

म्हारे काम के ई गेही से जी"

बोले पाधरा एम ॥चतुर० ॥ १६ ॥

(थारा) पाटा पर श्रावक मरे जी,

तिण ने बचावो नांय ।

ऊंदरा-चिड़िया बंचायलोजी,

पड़े जो पातर मांय ॥चतुर० ॥ १७॥

ऊंदरा चिड़िया बंचायलेजी,

श्रावक उठावे नांय ।

देखो (पूरो) अन्धेरो एहने जी,

ए पड़िया भरम रे मांय ॥ चतुर० ॥१८॥

उन्दर चिड़िया बचावतां जी,
शंके नाहीं लिगार ।
श्रावक ने वेठो किया में,
पाप री करे पुकार ॥ चतुर० ॥ १९ ॥
इतरी समज पड़े नहीं,
त्यामे समकित पावे केम
छकिया मोह मिथ्यात में जी,
बोले मतवाला जेम ॥ चतुर० ॥२०॥
(कहे) "साधां ने उन्दर काढ़णों जी,
पातरादिक थी वार ।
पाछा पर श्रावक मरे जी,
(तो) वेठो न करां लिगार" ॥चतुर०॥२१॥
(उत्तर) श्रावक वेठो ना करोजी,
उँदर काढ़ो जाय ।
आ खोटी श्रद्धा ताहरी जी,
मिले न थारो न्याय ॥ चतुर० ॥२२॥
(या) परतख बात मिले नहीं जी,
तावड़ा छांहड़ी जेम ।

न्यायमार्ग ज्यां ओलख्यो जी,
ते विकलां री माने केम ॥चतुर०॥२३॥
(कहे) "पेट दुखे सो श्रावकां जी,
जुदा होवे जीव काय।
(थें) हाथ फेरो पेट ऊपरे जी,
सो श्रावक बच जाय ॥चतुर० ॥२४॥
(जो) जीव बचाया में धर्म छे तो,
साधु ने फेरणो हात।
(जो) हाथ साधु फेरे नहीं,
तो मिथ्या थांरी बात" ॥चतुर०॥२५॥
(उत्तर) साधु कहे हिवे सांभलो जी,
इण कुयुक्ति रो न्याय।
(जो) हाथ फेर्‍या निज जीव बचे,
(तो) निज रो फेर बच जाय ॥चतुर०॥२६॥
हाथ फेरन रो साधु ने जी,
श्रावक केसी केम।
हठवादी समझे नहीं जी,
श्रावक जाणे (धर्म रो) नेम ॥चतुर०॥२७॥

(कहे) "लब्धि आमोसहो साधुरेजी,
फरस्यां दुःख मिट जाय" ।
(उत्तर) तो (वह) चरण मुनि रा फरससी जो,
ततक्षण चोखो थाय ॥ चतुर० ॥ २८ ॥
चरण साधु रा फरसणा जो,
श्रावक रो आचार ।
हाथ फेरण रो कहे नहीं जो,
थें झूठ करो उच्चार ॥ चतुर० ॥ २९ ॥
लब्धि मुनीरी देह में जो,
जो फरसे मुनि काय ।
(तो) रोग मिटे साता होवे जो,
मुनि ने दोष न थाय ॥ चतुर० ॥ ३० ॥
(जो) चरण फरस दुखड़ो मिटेजो,
या जिन आज्ञा रे मांय ।
तिहाँ हाथ फेरण कारण नहीं जो,
थारा मन ने लो समझाय ॥
(थें झूठी उठाई वाय) ॥ चतुर० ॥ ३[illegible]
कुयुक्त्यां बहु केलवो जो,

भोलां दो भरमाय।
ज्ञानी न्याय बताय दे जब,
भरम तुरत मिट जाय ॥ चतुर० ॥ ३२ ॥
(कहे) "उंदिर नांय छोड़ावणो जी,
मिन्नी मारण धाय"
एवो कर-कर थापना जी,
भोलो दिया फंसाय ॥ चतुर० ॥ ३३ ॥
(उत्तर) आवश्यक-सूत्र देखलो जी
ध्यान आगारा रे मांय।
उन्दरादिक ने मारवा जी,
बिल्ली झपटो आय ॥ चतुर० ॥ ३४ ॥
आगे सरक बचावतां जी,
काउसग भागे नाय।
(वलि) टीका ने निर्युक्ति में जी,
परगट दियो बताय ॥ चतुर० ॥ ३५ ॥
हजारॉं वर्षा तणी जी,
निर्युक्ति निरधार।
चवदा सौ वर्षां तणी जी,

(यो) टीका में विस्तार ॥ चतुर० ॥ ३६ ॥

आचारजआगे हुआ जी,

ज्ञान गुणां रा धार।

इंद्रादिक बचायवा में,

पाप न कह्यो लिगार ॥ चतुर० ॥ ३७ ॥

पाट सताविस तुमे कहो जी,

प्रभु आज्ञा रा धार।

तेनी कथी निर्युक्ति में जी,

यो भाख्यो निरधार ॥ चतुर० ॥ ३८ ॥

ध्यान में जीव बचायताँ जी,

काउसग भंग न होय।

आवश्यक निर्युक्ति तणो जी,

निरणो लेओ जोय ॥ चतुर० ॥ ३९ ॥

अठारे से संवत पूरवे जी,

जीव बचावन माँय।

कोई आचारज नहीं कह्यो जी,

पाप करम बन्धाय ॥ चतुर० ॥ ४० ॥

अपुठो इम भाषियो मितो,

करे चुवा री घात ।
ध्यान खोल बचावताँ जी,
दोष नहीं तिलमात ॥ चतुर० ॥ ४१ ॥
(कहे) "मूसादिक ने बचायलो जी,
मिनकी ने छुछुकाय ।
श्रावक मरे मुख आगले जी,
तिणने बचावो के नाय" ॥ तुर० ॥४२॥
(उत्तर) मरतो जाण बचाविया जी,
दोष मुनि ने न कोय ।
निशिथ अर्थ में देखलो जी,
भरम हिया रो खोय ॥ चतुर० ॥ ४३ ॥
श्रावक बचाया धर्म छे जी,
साधु भी लेवे बचाय।
अवसर ठाम-कुठाम नो जी
कल्प रो ध्यान लगाय ॥ चतुर० ॥४४॥
धर्म देशना (देना) धर्म में जी,
पिण देवे कल्पते ठाम ।
(तिम) जीव बचावणों धर्म में पिण,

करे कल्प थो काम ॥ चतुर० ॥४५॥

चिड़ियो मुओ थारा स्थान में जी,

थारे अटक्यो सज्झाय रो काम।

परठो के परठो नहीं जी,

तब उत्तर देवे नाम ॥ चतुर० ॥ ४६ ॥

"चिड़ियाँ ने ता परठदाँ जी,

जाणो धर्म रो साय।"

(तो) कुत्तो मर्‌यो थारा थान में जी,

तेने परठो के नाय ? ॥ चतुर० ॥ ४७ ॥

"साधू वाजाँ म्हें जैन रा जी,

कुत्ता घोसाँ केम ?"

(तो) कुत्ता ने ि ड़िया तणो थारे,

रयो न सरखो नेम ॥ चतुर० ४८॥

(तिम) जीव वचावा में जाणज्यो जी,

ज्ञान से न्याय विचार।

अवमर अण-अवसर तणो जी,

साधु तणो आचार ॥ चतुर० ॥ ४९ ॥

(कहे) "गाड़ा हेठे मरे डावड़ोजी,

तुमे साधू लेवो उठाय ।
श्रावक मरतो जाण ने जी,
तिण ने उठावो के नाय" ॥ चतुर० ॥५०॥
(उत्तर) म्हे तो जीव बचायवा में,
धर्म रो श्रद्धाँ काम ।
श्रावक ने लड़का तणो जी,
म्हारे न भेद रो ठाम ॥ चतुर० ॥ ५१ ॥
(कहे) "लट, गजार्यां, कातरा जी,
ढांढा थी चींथी जाय ।
त्याँ ने बचावा तणो मुनि,
क्यों नहिं करे उपाय ॥ चतुर० ॥ ५२ ॥
जो लड़काने बचावसी जी,
सो लटादि लेसी बचाय
(जो) लट गजाई रक्षा न करे जी,
तो लड़को बचावे काय" ॥ चतुर० ॥५३॥
(उत्तर) दोनों बचाया धर्म छे जी,
थें झूठा रच्या तोफान ।
मिथ्या पंथ चलायवा जी,

भूल गया थें भान ॥ चतुर० ॥ ५४ ॥

(वलि) लड़का, लट, गजाय, नो जी,

सरखो नहीं छे न्याय।

लड़को सन्नी पंचेन्द्री ते,

लट सम कहो किम थाय ॥ चतुर० ॥ ५५ ॥

शक्य होवे तो बचायले जी,

कीड़ा मकोड़ा रा प्राण।

अशक्य बचाई ना सके,

जांरी मूर्ख करे कोई ताण ।चतुर० ॥५६ ॥

द्रव्य-क्षेत्र ना अवसरे जी,

उपदेश दे मुनिराय।

बिन अवसर तो ना दिये जी,

(तेथी) उपदेश अधर्म में नांय ॥चतुर० ॥५७॥

(तिम) अवसर होवे साध रो जी,

जीवां ने लेवे बचाय।

बिन अवसर रक्षा न हुवे तो,

रक्षामें पाप न थाय ॥ चतुर० ॥ ५८ ॥

उपदेश १, रक्षा २, धर्म में जी,

दोयां में शुध परिणाम ।
पिण अवसर होवे जद सदे जी,
श्रद्धे आछो काम ॥ चतुर० ॥ ५९ ॥
उपदेश बतावे धर्म में जी,
जीव बचायां पाप ।
[या] खोटी श्रद्धा तेहनी जी,
ज्ञानी जाणे साफ ॥ चतुर० ॥ ६० ॥
लड़का लट सरिखा कहे जी,
(ते) मूरख, मूढ़ गवाँर ।
जैनी नाम धरायने जी,
भ्रष्ट किया नरनार ॥ चतुर० ॥ ६१ ॥
कीड़ा, मकोड़ा, मनुज नी जी,
सरखो बतावे बात ।
[ते) भेष लई भारी हुआ जी,
धर्म री कर रया घात ॥ चतुर० ॥ ६२ ॥
चउनाणी शुध संयमी जी,
वीर जगत गुरु राय ।
गोसालाने बचावियो जी,

अनुकम्पा दिल लाय ॥ चतुर० ॥ ६३ ॥
(जो) जीव बचावणो पाप में जो
गोसालो बचायो केम।
उत्तर न आयो एहनो जी,
तब झूठ बोल्या तज नेम ॥ चतुर० ॥ ६४ ॥
(कहे) "गोसाला ने बचावियो जी,
चूक गया महावीर।
पाप लागो श्री वीर ने,
म्हारी श्रद्धा बड़ी गंभीर" ॥ चतुर० ॥६५॥
(वलि कहे) "साधां ने लब्धि न फोड़णी जी,
सूत्र भगोती रे मांय।
लब्धी फोड़ बचावियो जी,
तेथी पाप कर्म बन्धाय" ॥ चतुर० ॥ ६६ ॥
(उत्तर) उपदेशे जीव बचावले जी,
लब्धि फोड़े नाय।
ते पिण पाप एकंत में,
थारी श्रद्धा रे मांय ॥ चतुर० ॥ ६७ ॥
(तेथी) झूठा बोज लगावियो जी,

लब्धि केरे नाम ।
अनुकम्पा उठायवा जी,
यो मिथ्या-मत रो काम ॥ चातुर० ॥ ६८ ॥
[इम] समुचाय लब्धि रा नाम ले जी,
भोलाँ ने दे भरमाय ।
पिण सांची कोई मत जाणज्यो जी,
भेद सुणो चित लाय ॥ चातुर० ॥ ६९ ॥
शीतल लेश्या लब्धि नो जी,
दोष न सूतर मांय ।
सुखदाई दुख ना होवे जी,
(एथी) जीव-हिंसा नहिं थाय ॥चातुर०॥७०
अंग उपाङ्ग ग्रन्थ में इण,
लब्धी रो दोष न कोय ।
तो पिण पाप बताइयो जी,
यो कपट कुगुरु रो जोय ॥ चातुर० ॥ ७१ ॥
दोष होवे जे लब्धि थी ते,
प्रकट बताया नाम ।
इणरो नाम न चालियो ये,

तजो कपट रो काम ॥ चातुर० ॥ ७२ ॥
[कहे] "उष्ण ने शीतल एक छेजी,
तेजू लब्धि रा भेद"
मद छकिया इम ऊचरे जी,
[ते] सुणताँ उपजे खेद ॥ चातुर० ॥ ७३ ॥
(उत्तर) शीतल थी शान्ति होवे जी,
जीव न विणसे कोय।
उष्ण थी जीव मरे घणा जी,
एक किसो विध होय ॥ चातुर० ॥ ७४ ॥
(कहे) "अग्नि पाणी भेला होवे जी,
जीव घणा मर जाय।
[तिम] तेजू शीतल लब्धि मिल्याँ जी,
घात जीवाँ री थाय" ॥चातुर०॥ ७५ ॥
[उत्तर] तेजू लेश्या पुद्गल भीण जी।
अचित्त कह्या जिनराय।
सूत्र भगोती में देखलो जी,
खोटा लगावो न्याय ॥चतुर०॥७६॥
हिंसादी कुकर्म थी जी,

खोटो-लेश्या थाय।
जीव रक्षा रा भावमें जो,
भली लेश्या सुखदाय ॥चतुर०॥७७॥
मीठो-लेश्यासें ना कह्यो जो,
जीव रक्षा रो काम।
उतराध्येन चोंतिस में जो,
लक्षण द्वार रे ठाम ॥चातुर०॥७८॥
सदा शुद्ध-लेश्या वीर में जी,
पाप कहो किम होय।
आचारंगे देखलो जो,
प्रभु पाप न कीनो कोय ॥चातुर ०॥७९॥
[कहे] "राग हुंतो तब वीर में जो,
लियो गोशाल बचाय।
'छद्मस्थपणे चूकिया' म्हें,
पाप केवां इण न्याय" ॥चातुर०॥८०॥
[उत्तर] छद्मस्थ राग रो नाम लेने,
पड़िया पाप रे कूप
अरिहन्त आसातना करी जो,

हुवा मिथ्यात रा भूप ॥ चतुर० ॥ ८१ ॥
पंचम-गुणठाणा घणी जी,
(वलि) सराग संजमी जोय।
संयम पाले राग से जो,
जामें दोष न कोय ॥ चतुर० ॥ ८२ ॥
संजम-राग न दोष में जी।
असंजम-राग में दोष।
धरमाचारज (रा) राग से जी,
मुनि होवे निरदोष ॥ चतुर० ॥ ८३ ॥
धर्म-राग रत्ता कया जी,
श्रावक रा गुण माँय।
धर्म-राग करता थकां जी,
शुक्ल-लेश्या पिण पाय ॥ चतुर० ॥ ८४ ॥
दया एक रस भाव से जी,
लियो गोसालो बचाय।
ते राग प्रशस्त प्रभु तणो जी,
धर्म लेश्या रे माँय ॥ चतुर० ॥ ८५ ॥

गोसालाने बचावियो जी,
धाप जाणता श्याम।
तो सर्व साधां ने वर्जता जी,
इसड़ो न करजो काम ॥ चतुर० ॥ ८६ ॥
केवल ज्ञान में प्रभु कयो जो,
अनुकम्पा रो धर्म।
गोसालाने बचावियो प्रभु,
प्रकट कर्‍यो यो मर्म ॥ चतुर० ॥८७॥
दोष न लेश प्रभु कयोजी,
गोसाल बचाया माँय।
वीतराग गोपे नहीं जी,
प्रकट देवे फुरमाय ॥ चतुर० ॥ ८८ ॥
गोतमने प्रभुजी कयोजी,
आनन्द लेवो खमाय।
प्राछित ले निर्मल हुवो ज्यूं,
दोष थाँरो मिट जाय ॥ चतुर० ॥ ८९ ॥
गोतम दोष मिटायवा जी,
प्रकट कयो प्रभु आप।

निज नो केम छिपावता जो,
(तुम) तज दो खोटो थाप ॥ चतुर० ॥९०॥
यो प्रकट न्याय न ओलखे जी,
जारे माँय मूल मिथ्यात ।
अरिहँत वचन उथाप दे ते,
निन्हव कह्या जगनाथ ॥ चतुर० ॥ ९१ ॥
(कहे) "गोसाला ने बचावियो तो,
बधियो घणो मिथ्यात ।
(तेथी) पाप लागो श्री वीर ने जी,"
एवी मन में राखे बात ॥ चतुर० ॥ ९२ ॥
(उत्तर) गोसाला ने बचावियो जी,
हूवो समकित धार ।
श्रीमुख निरणो जिन कियो जी,
जासी मोक्ष मंझार ॥ चतुर० ॥ ९३ ॥
साधू गोशाला तणा जी,
वीर रे शरणे आय ।
तिरिया घणा संसार थी जी,
भाख्यो सूतर मांय ॥ चतुर० ॥ ९४ ॥

श्रावक शरणे आवियो जी,
गोसाला ने छोड़ ।
साधु-श्रावक श्री वीर रा न,
सक्यो गोसालो मोड़ ॥ चतुर० ॥ ९५ ॥
मिथ्याती मिथ्यात में जी,
हुआ गोशाला रा शीष ।
मिथ्यात वधियो किण तरेजी,
खोटी थांरी रीश ॥ चतुर० ॥ ९६ ॥
श्रावक गोसाला तणा जी,
त्रस री नहि करे घात ।
कन्द मूल पिण ना भखे जी
या सूत्र-भगोती में वात ॥ चतुर० ॥ ९७ ॥
तप तो सराहो तेहनो तुम,
खोटी करवा थाप ।
अनुकम्पा रा द्वेष थी (तुमे) बोलो,
जीव बचावा में पाप ॥ चतुर० ॥ ९८ ॥
बलि कपट करो कुगुरु कहे,
"दो साधु बचाया नांय ।"

खोटा न्याय लगावता जो,
कह्या कठा लग जाय ॥ चतुर० ॥ ९९ ॥
(उत्तर) आयुष आयो तेहनो जो,
देख्यो श्री जिनराज ।
निश्चय टाल्यो न टल्यो (जो),
इयां सार्‍या आतम काज ॥ चतुर० ॥१००॥
(कहे) "गोतमादिक गणधर हुंताजो,
छद्मस्थ लब्धि ना धार ।
ज्यायें क्यों न बचाविया जो,
शीतल लेश्यां निकार" ॥ चतुर० ॥ १०१ ॥
(उत्तर) जिन नहिं जिन समा कह्या जो,
गोतमादि गुणधार ।
जाणे आयु सर्व नो जी,
वलि होनहार निरधार ॥ चतुर० ॥ १०२ ॥
धर्मघोष मुनि जाणियो जी,
धर्म रुची विरतन्त ।
सर्वार्थ-सिद्ध में देखियो वे,
पूरवधर था महन्त ॥ चतुर० ॥ १०३ ॥

आयुष मुनि रो जाणता जो
गोतमादि गुण धार।
बिहार मुन्याँ ने करावता जी,
(थारेंपिण) जामें दोष न एक लिगार ॥१०४॥
(मुनि) निश्चे देख्यो ज्ञान में जी,
ते किम टारयो जाय।
ते जाणी ज्ञानी-मुनी जी,
न सक्या त्यां ने बचाय ॥ चतुर० ॥१०५॥
सो कोसां वेर न ऊपजे जी,
अरिहंत अतिशय विशेष।
समवसरण में ऊपनो ते,
होणहार री रेष ॥ चतुर० ॥ १०६ ॥
निश्चय होण रा नाम से जी,
गोशाल बचाया में पाप,
उलटा न्याय लगायने जी,
थें कर रया खोटी थाप ॥ चतुर० ॥ १०७ ॥
सत हेतु सुण समझसो जी,
जामें शुद्ध विवेक।

पक्षपात तज पाममी जी,
निरमल समकित एक ॥ चतुर० ॥ १०८ ॥

मिथ्या-खण्डण ने करी जी,
जोड़ जुगत धर न्याय ।

शुद्ध भावे श्रद्धया थका जी,
आनन्द मंगल थाय ॥ चतुर० ॥ १०९ ॥

संवत उगणोसे तणे जो,
छोयाँसी रे साल ।

आषाढ़ शुक्ला पंचमी जो,
वरते मंगल माल ॥ चतुर० ॥ ११० ॥

छठो ढाल सम्पूर्णम्

दोहा

सबल निबल ने मारता, देख्या दीन दयाल।
हितकर धर्म परूपियो, जीव दया प्रतिपाल ॥१॥
निरबल जीव बचायवा, सबलां ने समझाय।
त्यामें पाप बतावियो, केइक कुमति चलाय ॥२॥
मांसादिक छुड़ाय दे, अचित वस्तु रे साय।
एकान्त पाप तिणमें कहे, केइ कुबुद्धि उठाय ॥३॥
कहे मिश्र श्रद्धाँ नहीं, श्रद्धयां हो मिथ्यात।
धर्म पाप एकान्त है, यो खोटो पखपात ॥४॥
अल्प-पाप बहु-निर्जरा, सूत्र भगोती देख।
मूलपाठ प्रभु भाखियो, (तेथी) कूड़ोथारोलेख॥५॥
द्वेष अनुकम्पा-दान रो, ज्याँरे है घट माँय।
तिणने सत-पथ लायवा, ज्ञानी इम समझाय ॥६॥
ऋतु चौमासो आवियो, वर्षा वर्षे जोर।
लट गजाई डेंडका, उपन्या लाख किरोर ॥७॥

एक वेश्या एक साधुरा, भक्त नो मन हुलसाय ।
तिण वेलामें नीसर्‌या, बेठा गाड़ी मांय ॥८॥
साधुभक्त तो साधुरा, दर्शन केरे काम ।
वेश्या अभिलाषी तिको, जावे वेश्या धाम ॥९॥
गाड़ी चलता चग दिया, जीव अनन्ता जाय ।
इतनामें विजली पड़ी, दोइ मुवा ते मांय ॥१०॥
धर्मी पापी कोण छे, इण दोणां रे मांय ।
हिंसा थाने सारखी, देवो अर्थ बताय ॥११॥
तब तो ते चट ऊचरे, मारा दर्शन काम ।
आता रस्तामें मुआ, तिणरा शुभ परिणाम ॥१२॥
धर्म लाभ तिणने हुवो, हिंसा तणो तो पाप ।
गाड़ी आरंभ थी हुवो, यूं बोले ते साफ ॥१३॥
वेश्या अर्थे नीकल्यो, तिण में धर्म न कोय ।
एकान्त-पाप रो काम ए, यो साँचो लो जोय ॥१४॥
वेश्या अर्थी जाणज्यो, एकान्त-पाप रे मांय ।
दर्श(न) अर्थि गाड़ी चढ्यो, धर्म-पाप बेहु थाय ॥१५॥
मन्दमति यों बोलिया, तब ज्ञानी कहे एम ।
मिश्र तुमे नहिं मानता, (हिवे) बोली बदलो केम ॥१६॥
तब पाछा ते यों कहे, दर्शन धर्म रो काम ।
गाड़ी चढ़नो पाप में, इम जूदा बेहु ठाम ॥१७॥

तो इमही तुम जाणलो, अनुकम्पा(धर्म)रो काम।
आरंभ समझो पाप में, इम जूदा बेहूठाम॥१८॥
अणसरते आरंभ हुवे, दर्शन केरे काम।
विन आरंभ दर्शन करे, तो चढ़ता परिणाम॥१९॥
अणसरते आरंभ हुवे, अनुकम्पा रे काम।
विन अरंभ करुणा करे, तो चढ़ता परिणाम॥२०॥
अनुकम्पा ऊठाय ने, दर्शन थापे धर्म।
जो या श्रद्धा धारसो, जाड़ा बंधसी कर्म॥२१॥
कीदा कराया भल जाणिया, दर्शन शुध परिणाम।
कीदाकराया भलजाणिया, करुणा आछो काम॥२२॥
यो तो न्याय न जाणियो, पड्या टेक अनजाण।
करण जोग विगाड़िया, मिथ्यामति अयाण॥२३॥
कूड़ा हेतु लगावने, मिथ्यामत थापन्त।
ते खंडन करूं जुगतसे, सुणज्योधरमतिखंत॥२४॥
सात दृष्टान्त तेने दिया, मिथ्या थापण पन्थ।
म्लेच्छ वचनमुख आणिया, नाम धरायोसंत॥२५॥
लज्जा उपजे म्लेच्छ ने, एवा खोटा न्याय।
ते तो कथता ना डरया, जैनी नाम धराय॥२६॥
ज्यांरी बुद्धि निरमला, ते सुण दे धिक्कार।
मूरख सुण मोहित हुआ, डूबा कालो धार॥२७॥
हिवे खण्डन सातो तणा, कहूँ वहुले विस्तार।
भविगण भावधरीसुणो, ज्ञान-दृष्टि दिलधार॥२८॥

ढाल-सातवीं
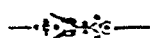
(तर्ज -वीर सुणो म्हारी वीनती)

कन्दमूल भखे एक मानवी,
भूख दुखड़ो हो सह्यो नहिं जाय।
समझू तेने छोड़ाविया,
अचित वस्तु थी हो देवी भूख मिटाय॥
भवियण जिनधर्म ओलखो ॥ १ ॥

कन्दमूल (और) भूखा पुरुष री,
करुणा में हो बतावे पाप।
या श्रद्धा मन्दां तणी,
खोटी दीसे हो ज्ञानी ने साफ॥ भ० ॥२॥

इम एकान्त पाप परूपना,
नहिं शङ्के हो कुगुरु काला नाग।
इण श्रद्धा रो प्रश्न पूछिया,
चर्चा में हो जावे दूरा भाग ॥ भ० ॥३॥

भोलाजन भेला करी,
खोटा हेतू हो थोथा गाल बजाय।
घर में घुस घुरकाय ने,
इण विध थो हो रया पन्थ चलाय ॥भ०॥४॥
सुणो दृष्टान्त हिवे तेहना,
किणविध बोले हो ते आल-पंपाल।
बुद्धवन्त बुद्ध थो परख ले,
निरबुद्धी हो फंसे माया जाल ॥ भ० ॥५॥
(कहे) "सो मनुष्य ने मरता राखिया,
मूला गाजर हो जमीकन्द खवाय।
(वले) मरता राखिया सो मानवी,
काचो पाणी हो त्यांने अणगलपाय" ॥भ०॥६।
इम भोलां (ने) भरमायवा,
गाजर मूलां रो हो मुख आणे नाम।
वली होको, मांस, मुरदा तणो,
नाम लेवे हो भ्रम घालण काम ॥भ०॥७॥
फासु-अन्न थी मरता राखिया,
तिण रो तो हो छिपावे नाम।

जाणे खोटी-श्रद्धा चोड़े पड़े,

जद विगड़े हो ऊंधा-पन्थ रो काम॥भ०॥८॥

कोई जीव मारे पंचेन्द्री,

भूख दुखड़ो हो मिटावण काम।

(तिणने) समझाय अचित अन्न से,

पाप मिटायो हो कोई शुध परिणाम॥भ०॥९॥

जीव वचायो पंचेन्द्री,

तिण रो टलियो हो दुःख आरत पाप।

मारणवाला ने टल्यो,

हिंसाकारी हो मोटो कर्म सन्ताप॥भ०॥१०॥

इम मारतां ने मारणहार रे,

शान्ति करता हो सायक बुद्धिमान।

एकान्त-पाप तिण में कहे,

ते तो भूल्या हो जिन-धर्म रो भान॥भ०॥११॥

जीव बचे आरंभ मिटे,

तिण में पिण हो बतावे पाप।

ते जीव बचे आरंभ हुवे,

(एवा) प्रश्न पूछे हो खोटो नीयत साफ॥१२॥

जो पूनम-चन्द्र माने नहीं,
आठम चन्द्र री हो पूछे ते बात ।
चतुर चेतावे तेहने,
पूछण जोगो हो तू रह्यो किण भांत॥१३॥
जो वर्णमाला माने नहीं,
शुद्धा-शुद्ध तो हो पूछे शास्त्र उचार ।
ते मूरख छे संसार में,
मिथ्या-भाषी हो तिणरे नाहीं विचार॥१४॥
इण दृष्टान्ते जाणज्यो,
कूतरकी हो मिथ्यावादी अतोल ।
जीव बचिया पुन्न (धर्म) माने नहीं,
आरँभ ना हो मुख आणे बोल ॥१५॥
जीव बचे आरम्भ मिटे,
पुन्य-धरम हो तिण में श्रद्धे नाय
आरम्भ थी जीव ऊगरे,
एवा प्रश्न ते हो पूछे किण न्याय ॥१६॥
अग्नि, पाणी, होका नो बली,
त्रस-मांस ना हो मन्द दृष्टान्त गाय ।

॥ ८ ॥

॥ बकरी और भूखे की रक्षा ॥

ढाल सातवीं गाथा, ९, १० का भाव चित्र।

"कोई जीव मारे पंचेन्द्री, भूख दुखड़ा हो मिटावण काज

(तिणने) समझाय अचित अन्न सें, पाप मिटायो तो कोई शुद्ध परिणाम

जीव बचाया पंचेन्द्री, तिणरा टलिया तो दुःख आगन पाप ॥

मारणवालाने टल्या, हिंसाकारी तो मोटो फल संताप ॥ १० ॥

मुरदा खवाया* रो नाम ले,
नहिं लाजे हो जैनी नाम धराय ॥१७॥
पेट दुख थो होको पीवता
अचित औषधे हो दीनो होको छोड़ाय ॥
आरंभ टल्यो छहुकायनो
इणकाममें हो हुवो धर्मके नाय ॥१८॥
"दारू पीना देखने
छुड़ायो हो कोई दूध पिलाय।
थांरी श्रद्धासे कहो
इणमे तुम हो धर्मश्रद्धोके नांय ॥१९॥
"एक मुर्दा रो मांस खवायने
भूखारो हो मेटतो थो भूख।
दयावंत दया दिल आणीने
रोटो देई हो मेट दियो दुख ॥२०॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

पेट दुःखे तड़फड़ करे,
जीव दीन हो करे हाय-विलाय।
शान्ति उपजाई नीं उणा,
मरता मरता हो ज्यां ने होको पाय॥
भविष्य जिन-धर्म लोकगी ॥३॥

अभक्ष छुडायो भक्ष थी
नर्क निमित्त हो टलाया कर्म।
थांरो श्रद्धा थी कह्यो
इण काममें हो हुवोके नहि धर्म ॥२१॥
(वलि) नर मार मनुष्य बचाविया,
मंमाई नो हो एम हेतु लगाय।
एवा कूदृष्टान्त मेलवे
ते सुणने हो ज्ञानी लज्जा पाय ॥२२॥

सौ जणा दुर्भिक्षकाल में,
अन्न विना हो मरे उजाड़ मांय।
कोइक मारे त्रस-काय ने,
सौ जणां ने हो मरता राख्या जिमाय ॥भवि०॥८॥
किणहिक काले अन्न विना,
सौ जणां रा हो जुदा होवे जीव काय।
सहजे कलेवर मुवो पडियो,
कुशले राख्या हो त्यां ने तेह खुवाय ॥ भवि० ॥६॥
वले मरता देखी सौ रोगला,
मंमाई विना हो ते साजा न थाय।
कोई मंमाई करे एक मनुष्य री,
सौ जणां रे हो शान्ति किधि वचाय ॥ भवि० ॥ १० ॥

(अनुकम्पा ढाल ७)

॥ छ ॥

॥ हुक्का छुड़ाना ॥

ढाल सातवीं गाथा १८ का भाव चित्र ।

पेट दुख थी होको पीवता, अचित औषधे हो दोनों होको छोड़ाय ।
आरंभ टल्यो लहु फायदो, इण कामनें हो कुण धर्म केवाय ॥ १८ ॥

॥ घ ॥
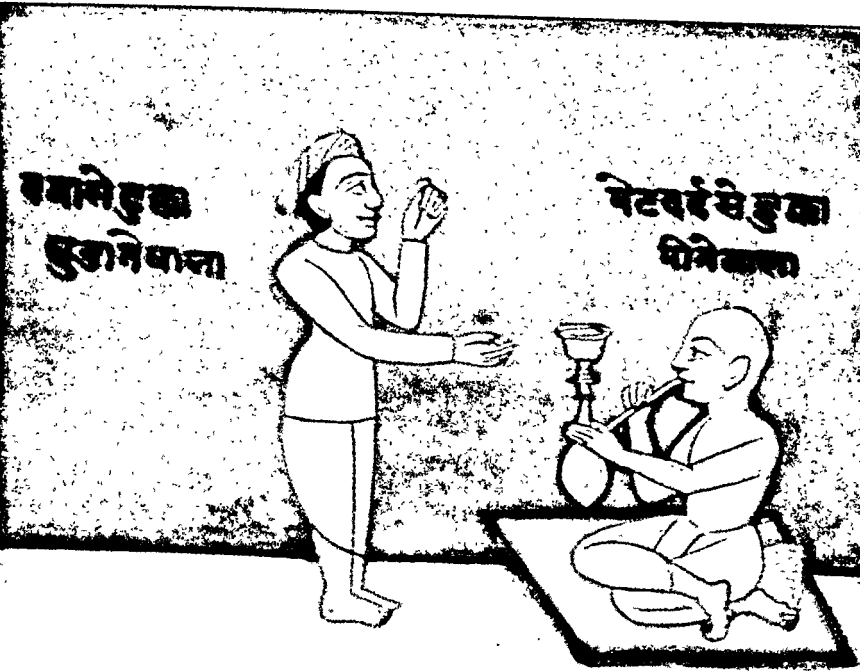
॥ शराब छुड़ाना ॥

ढाल सातवीं गाथा १६ का भावचित्र ।

"दारू पीता देखने, छुड़ावे हो कोइ दूध पिलाय ॥
थांरो धरम से काढ़ो, इणनें कुण हो धर्मधरतोपैनाय ॥ १६ ॥

॥ श्र ॥
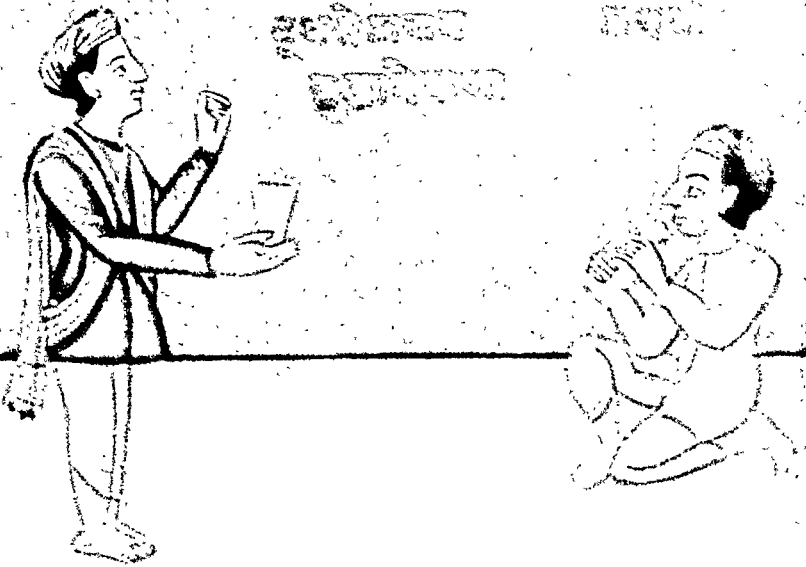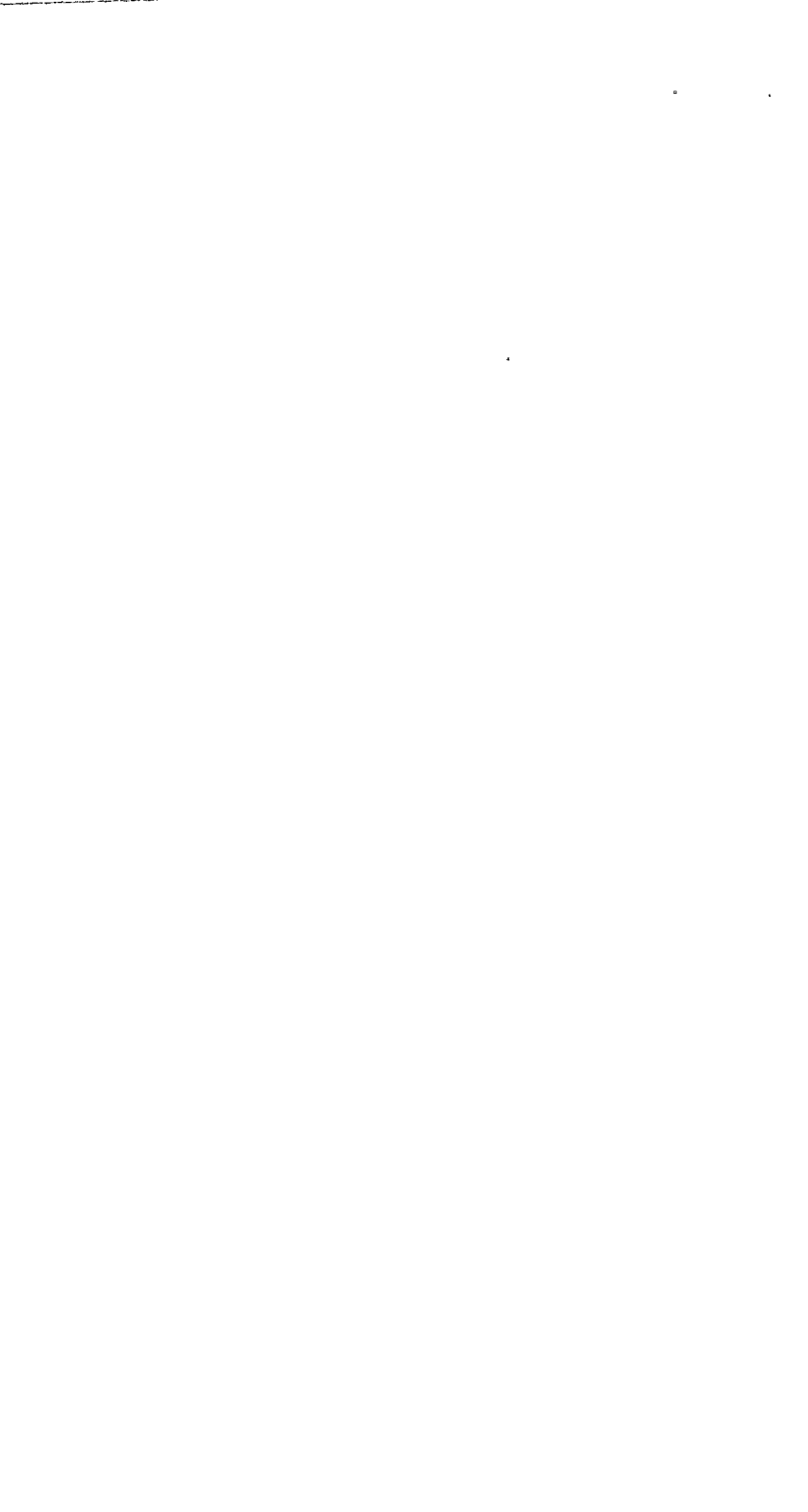
॥ मांस भक्षण छुड़ाना ॥

(ढाल सातवीं गाथा २०, २१ का भाव चित्र।

"एक मुर्दांरो मांस खवायने, भूखारो हो मेटतो थो भूख ॥
दयावंत दया दिल आणने, रोटी देई हो मेट दियो दुःख ॥ २० ॥
अनख छुड़ायो भखणो, नवे निमित्त हो टलायो कर्म ॥
थांरे श्रद्धा थी कहो, इण काम में हो हुवो के नहिं धर्म ॥ २१ ॥

कोई ज्ञानी पूछे तेहने
 एक रोगी होरयो अति दुखपाय।
तिण आयो वैद्य चलायने
 मंमाई पाड़यारीतिणरे चितमें चाय ॥२३॥
दयावंते सेज उपाय थी
 रोगी ना हो दीना रोग मिटाय ॥
मंमाई थी मरतो नर बच्यो
 पाप धर्म रो हो देवो भेद बताय ॥२४॥
(कोई) भद्रिक अनुकम्पा करे,
 अल्पार भी हो हलुकर्मी जीव।
महारम्भी महा-परिग्रही,
 तिणरे घट में हो करुणा किम होय ॥२५॥
मोटी हिंसा त्रस-काय नी,
 थावर नी हो छोटी सूत्र में जाय।
आवश्यक, उपासक दशा,
 भगोती में हो प्रभु भाखी म्हांय ॥ २६॥
मोटी हिंसा झूठ चोरी री,
 श्रावक रे हो ध्रम री मर्याद।

(तेथी) अल्पारम्भी श्रावक कह्या,
आंख खोली हो देखो संवाद ॥२७॥भवि०॥

दया भाव दिल आणने,
सो मनखां रा हो बचावसी प्राण ।
ते अल्पारम्भी जाणज्यो,
अनुकम्पा रो हो घो मर्म पिछाण ॥२८॥

अल्पारंभी नर हुवे,
त्रसजीव ने हो ते मारे केम ।
अनुकम्पा उठावण कारणे,
थां तजियो हो बोलण रो नेम ॥२९॥

एकेन्द्री पंचेन्द्री सारीखा,
एवा बोले हो कुगुरु कूड़ा बोल ।
पाणी, मांस सरीखो कहे,
चर्चा कीधा हो खुल जावे पोल ॥३०॥

पाणी अचित पीवो तुम्हें,
मांस अचित हो खावो के नाँय ।
तब कहे "म्हें खावां नहीं,
माँस आहारे हो महा कर्म बँधाय ॥३१॥

(तेथी) अल्पारम्भी श्रावक कह्या,
आंख खोली हो देखो संवाद ॥२७॥भवि०॥

दया भाव दिल आणने,
सो मनखां रा हो बचावसी प्राण ।
ते अल्पारम्भी जाणज्यो,
अनुकम्पा रो हो थो मर्म पिछाण ॥२८॥

अल्पारंभी नर हुवे,
त्रसजीव ने हो ते मारे केम ।
अनुकम्पा उठावण कारणे,
थां तजियो हो बोलण रो नेम ॥२९॥

एकेन्द्री पंचेन्द्री सारीखा,
एवा बोले हो कुगुरु कूड़ा बोल ।
पाणी, मांस सरीखो कहे,
चर्चा कीधा हो खुल जावे पोल ॥३०॥

पाणी अचित पीवो तुम्हें,
मांस अचित हो खावो के नाँय ।
तब कहे "म्हें खावां नहीं,
माँस आहारे हो महा कर्म बँधाय ॥३१॥

मांस आहार नरक (रो) हेतु है,
ठाणाअंग हो उवाई रे माँय।
म्हें साधू बाजां जैन रा,
मांस खादे हो साधुता उठ जाय" ॥३२॥

मांस पाणी एक सरीखा,
मूंडा थी हो तुम्हें कहता एम।
(पोते) काम पड़्यो जद बदलिया,
परतीतो हो थारो आवे केम ॥भवि०॥३३॥

पाणी, मांस अचित बेहू,
पाणी पीवो हो मांस खावो नाय।
तो सरखा हिवे ना रह्या,
किम भोलाँ ने हो नाख्या भर्म रे मांय ॥३४॥

पाणी पीवे संजम पले,
मांस खादे हो साधू नरक में जाय।
(तेथी) सानां दृष्टान्त सरिखा नहीं,
योग्य-अयोग्य हो त्यां में अन्तर थाय ॥३५॥

जो सम परणामी साधु रे,
पाणी मांस में हो घणुं अन्तर होय।

तो गृहस्थ रे सरिखा किम हूवे,
पक्ष छोड़ी हो ज्ञान-नयने जोय ॥३६॥

जो मांस पाणी सरिखा कहो,
(तो) बेहु खाधा हो होसो मुनि रे धर्म ॥
(थारे) बेहू अचित एक सारखा,
थारे लेखे हो नहीं राखणो भर्म ॥३७॥

जो साधु रे सरिखा कहे नहीं,
(तो) कोन माने हो तव वचन प्रतीत ।
आप थापी आप उथाप दी,
थारी श्रद्धा हो परतख विपरीत ॥३८॥

जो साधु रे बेहू सरिखा कहे,
तो लोकां में हो धुर-धुर बहु थाय ।
तब मांस-पाणी जुदा कहे,
झूठा बोला री हो कुण पक्ष बँधाय ॥भ०॥३९॥

मांस-पाणी सरीखा कहे,
साधाँ रे हो केता लाजे मूढ़ ।
एहवो उलटो-पंथ तो जालियो,
त्यारे केई हो बूड़े कर-कर रूढ़ ॥४०॥

मांस न खावे साधुजी,
　　फासुक पिण हो जाणे नरक रो स्थान ।
अन्न, मांस सरीखो नहीं,
　　साधु श्रावक हो करे अन्न-जल पान ॥४१॥

जो श्रावक मांस खावे नहीं,
　　दूजा ने हो खवावे केम ।
अनुकम्पा उठायवा,
　　अणहूंतो हो घो घाल्यो वेम ॥४२॥

अचित तो वेहू सारखा,
　　मांस खाधा हो होवे संजम रो घात ।
पाणी पीधा संजम पले,
　　(तो) उत्थप गई हो सातों हेतु री घात ॥४३॥

ए खोटा दृष्टान्त कुगुरु तणा,
　　ते दीधा हो मेटण दया धर्म ।
ते समदृष्टि श्रद्धे नहीं,
　　कोई जाणे हो खोटी श्रद्धा रो मर्म ॥४ ॥

जीवां री रक्षा जो करे,
　　मिट जावे हो तेना राग ने द्वेष ।

श्री मुख प्रभु इम भाखियो,
शंका होवे तो हो दशमों अंग देख ॥४५॥
रत्न अमोलक देख ने,
मूरख नर हो जाणे तस कांच ।
जवरी मिल्या तेने पारखु,
अमोलक हो तब जाण्यो साँच ॥४६॥
धर्म है जीव बचाविया,
या श्रद्धा हो शुध रतन अमोल ।
कुगुरु काँच सरखी कहे,
न्याय न सूजे हो मिथ्या उदय अतोल ॥४७॥
सत बोल ने जीव बचाय ले,
चोरी तज ने हो पर-जीव बचाय ।
वलि करे सुकारज एहवो,
जीव बचावे हो व्यभिचार छुड़ाय ॥४८॥
धन तज राखे पर-प्राण ने,
(इम) क्रोधादिक हो अठारा ही त्याग ।
छोड़े छोड़ावे भल जाण ने,
परजीवाँ ने हो मरता राखे सुभाग ॥४९॥

भूख मरतो हणे पंचेन्द्री,
करुणा कर हो तेने दे समझाय ।
फासुक सूँ खड़ो देय ने,
जीव-रक्षा हो इणविध पिण थाय ॥८०॥

माहण माहण उपदेश थी,
बचाया हो पर-जीवां रा प्राण ।
या सत्य-वचन आराधना,
जीवरक्षा हो हुई परधान ॥भवि०॥८१॥

चोर लूटे धन पारको,
धन धणी हो मरणे-मारणं धाय ।
समझाय चोरी छोड़ाय दी,
दोनां री हो रक्षा हुई इण न्याय ॥८२॥

शील खण्डे एक लम्पटी,
शीलवती हो खण्डन लागी काय ।
लम्पट ने समझावियो,
प्राण बचिया हो सती रा धर्म रे साथ ॥८३॥

धन अर्थे हणे एक सेठ ने,
धन धणी हो दीनों परिग्रहो त्याग ।

प्राण बच्या परिग्रह छुट्यो,

रक्षा हुई हो सतमारग लाग ॥भवि०॥५४॥

क्रोधवसे हणे जीव ने,

क्रोध छोड़ायो हो जीवरक्षा रे नाम ।

इम मान, मायादो पाप ने,

छोड़ाया हो जीवरक्षा रे काम ॥भ०॥५५॥

यां सगला में जीवरक्षा हुई,

स्व-परना हो वली छूटा पाप ।

इण भांती जीव बचाविया,

मोह अनुकम्पा हो कहै अज्ञानो साफ ॥५६॥

विन हिंसा जोव बचाविया,

तिण में श्रद्धो हो तुम पाप–एकान्त ।

(तो) सत्यादिक थी छोड़ाविया,

सगले ठामे हो थांरे पाप रो पन्थ ॥५७॥

हिंसा तजी, झूठ छोड़ने,

चोरी तज ने हो परजोव बचाय ।

नरतो राख्या मैथुन तजी,

ते अनुकम्पा हो थांरे पाप रे माय ॥५८॥

झूठ चोरी व्यभिचार*रो,
नाम लेकर हो तुमे घालो भर्म ।
झूठा हेतु लगाय ने,
छोड़ दीनी हो तुमे लाज रु शर्म ॥५९॥
जीवदया-द्वेषी कहे,
मरता राखे हो मैथुन सेवाय ।
तिणरो उत्तर होवे सांभलो,
मिट जावे हो थांरी बकवाय ॥भ०॥६०॥
एक विधवा थारा पन्थ री,
निज पूजजी रा हो दर्शन री चाय ।
चोरा पूज्य रह्या परगाम में,
खरची बिन हो दर्शन नहिं पाय ॥६१॥
व्यभिचार थी पैसो जोड़ने,
दर्शन काजे हो आई पूज्यजी रे पास ।
भावना भाई (माल) वेराबियो,

---

* जैसा कि वे कहते हैं :—
जीव मारे झूठ बोलने, चोरी करनेकां परजीव बचाय ।
वले करे अकारज पहनो, मरता राखे हो मैथुन सेवाय ॥२१॥
(अनुकम्पा ढाल—७)

कारज निपज्यो हो व्यभिचार थी खास ॥६२॥
(बीजो) विधवा गरीब उद्यमवती,
घट्टी पीसे हो पैसा जोड़न काज ।
दर्शन कर (आहार) बेराविग्यो,
कारज निपज्यो हो घट्टी रे साज ॥६३॥

पहेली कुकर्म कीधो आकरो,
दूजी रे हो आरम्भ आश्रव माय ।
दर्शन कीधा बेहू जणी,
दान दीधो हो थाने अति हर्षाय ॥६४॥

यामें उत्तम अधम कोण है,
अथवा सरीखी हो थारी श्रद्धा रे मांय ।
न्याय विचारी ने कहो,
विवेके हो हिरदा रे मांय ॥भवि०॥ ६५ ॥

(कहे) "पेली नारी महा-पापिणी,
दान दर्शन हो तिणारा लेखामें नाय ।
पन्थ लजायो हम तणो,
कुकर्मी हो धक्का जगत में खाय ॥ ६६ ॥

दूजी विवेकी गुण भरी,

दर्शन दान रे हो तिणरे धर्म रो धाम ।
घट्टी आरम्भ आश्रव सही,
तिण बिना हो तिणरो किम चले काम" ६७

(उत्तर) तो समझो इण दृष्टान्त थी,
मैथुन सेवे हो जीव रक्षा रे काज ।
ते परथम नारी सारखी,
नहिं विवेक हो नहीं तिण रे लाज ॥ ६८ ॥

कोई जीव बचावे गुण भरी,
घट्टी आदिक हो मेनत रे साथ ।
अनुकम्पा तस निरमलो,
आरम्भ तो हो अणसरते कराय ॥ ३९ ॥

व्यभिचार घट्टी सरोखो नहीं,
इम समझी हो सब कर्म कुकर्म ।
समझे विवेकी विवेक में,
अणसमझू रे हीं उपजे अति भर्म ॥ ७० ॥

शील खण्ड दर्शण कहो कुण करे,
तो जीव बचावे हो कुण मैथुन सेव ।
कुहेतु कुगुरु रा काटवा;

उपनथ जोड़्यो हो मेटण कुदेव ॥ ७१ ॥

जोवरक्षा जिन धर्म है,

सूत्तर में हो श्री जिनजी रा वयन ।

तिण में पाप बतावियो,

शुद्ध-बुद्ध नाहीं हो फूटा अन्तर-नयन ॥७२॥

कोई क्रूर कसाई समझाय ने,

मरता राख्या हो दीन-जीव अनेक ।

तिण में पाप बतावता,

त्याँराबिगड़्या हो श्रद्धा ने विवेक ॥७३॥

पहेला ने उपदेश दे,

पाप छोड़ाया हो धर्म रो फल जोय ।

तो पाप मिट्या मरता जीव रा,

धर्म तेहमें हो कहो किम नहीं होय ॥७४॥

कहे "पाप छोड़ाया धर्म है,

मरता जीवाँ राहो आरत(रुद्र)मेटण पाप ।"

खिण थापे खिण में फिरे,

खोटी श्रद्धा हो या दीखे साफ ॥ ७५ ॥

देवलध्वज तेहनी परे,

फिर जावे हो न रहै एक ठाम।
दया-धर्म उत्थाप ने,
झगड़ो झाल्यो हो नहिं चर्चा रो काम ॥७६॥
*सिंह कसाई रो नाम ले,
राख्या मारया रो हो झूठ रचे परपंच।
बिन मारया जीव बचाविया,
पाप श्रद्धे हो मूढ़ कर-कर खंच ॥ ७७ ॥
जीव बचाया रा द्वेष थी,
दया उठे हो एवी बोले वाय।
हणता जीव ने रोकता,
तिणमाए हो मन्द पाप बताय ॥ ७८ ॥
पहला संवरद्वार में,
अमाघाओ हो दया रो नाम।
वीर प्रभू उपदेशियो,

---

* जैसा कि वे कहते हैं:---

कोई नाहर कसाई ने मारने,
मरता राख्या हो घणा जीव अनेक।
जो गिने दोयां ने सारखा,
त्यांरी बिगड़ी हो श्रद्धा बात विवेक ॥ २७ ॥
(अनुकम्पा ढाल-६

श्रेणिक राजादि हो सुणियो सुखधाम॥७९॥

दया-भाव दिल उपज्यो,

'अमाघाए' हो घोषणा दी सुनाय।

जीव कोई हणो मती,

सप्तम अंगे हो मूलपाठ रे माँय ॥८०॥

सप्तम दशम अंग रो,

एक सारीखो हो पाठ सूतर माँय।

जे कारज वीर बखाणियो,

श्रेणिक नृप हो दियो सबने सुनाय ॥८१॥

(निज) श्रद्धा उठती जाण ने,

सूतर रा हो दीना पाठ उठाय।

(कहें) "पाप हुवो श्रेणिक भणो,"

एवी बोले हो अणहूंती बाय ॥ ८२ ॥

श्रेणिक समदृष्टी हूंतो,

हिंसा रोकी हो सूतर रे माँय।

माहणो माहणो प्रभु कहे,

मत मारो हो श्रेणिक दियो सुणाय ॥ ८३ ॥

हिंसा छुड़ाई रायजी,

मन्दमति हो सुण ने दुःख पाय ।
जीव दया रा द्वेषिया,
ऊंधी मति थी हो दुरगत में जाय ॥ ८४ ॥
मतिमारो*आज्ञा राय (श्रेणिक) री,
या भाखी हो सूतर में वात ।
पाप कहे श्रेणिक भणी,
ते तो बोले हो चोड़े झूठ मिथ्यात ॥ ८५ ॥
"अमारी" धर्म जिन भाषियो,
नृप पाल्यो हो पलायो जग (देश) मांय ।
तेमां पाप कहे ते पापिया,
भोलां ने हो नाख्यां फन्द रे मांय ॥ ८६ ॥
(कहे) वीरजी नाय सिखावियो,
पड़हो फेरजे हो थारा राज रे मांय ।

---

* जैसा कि वे कहते हैं:——
श्रेणिकराय पड़हो फिरावियो,
यह तो जाणो हो मोटा राजाँ री रीत ।
भगवन्त न सराह्यो तेहने,
तो किमि आवे हो तिण री प्रतीत ॥ ३७ ॥
(अनुकम्पा ढाल-●

तो श्रेणिक सीख्यो किण कने,"
(इम) भ्रम घाले हो कुगुरु मन माय ॥ ८७ ॥
(कहे) "आज्ञा न दीनी वीरजी,
उदघोषणा हो करो राज रे मांय ।
तो धर्म सेणिक रे किम हुवे,
पाप शूद्धां हो तुम्हें तो मन रे मांय ॥ ८८ ॥
मोटा-मोटा हूं ता राजवी,
समदृष्टि हो जिन-धर्म रा जाण ।
त्यां हिंसा छोड़ावण कारणे,
नहिं घोषणा हो कीधी सूत्र प्रमाण" ॥८९॥
(उत्तर) एवि तर्क करे केई मन्दमती,
नहिं सूझे हो फूटा अन्तर-नयन ।
जीव बचावण द्वेष थी,
अणहूंता हो मुख काढ़े वयन ॥ ९० ॥
न्याय सुणो हिवे भाव सूं,
श्रेणिक री हो सूतर में बात ।
निज नोकर बुलाय ने,
आज्ञा दीनी हो इणविध साक्षात् ॥ ९१ ॥
स्थान-धणी ने चेताय दो,
जागा दीजो हो वीर-प्रभु जब आय ।

यो हुक्म राजा श्रेणिक तणो,
आज्ञाकारी हो सुणायो जाय ॥९२॥
श्रेणिक ने प्रभु ना कह्यो,
घोषण करजे हो म्हारा स्थान रे काज।
तो पाप हुवो तुम कथन थी,
सेजा रो हो वीर ने दीनो साज ॥९३॥
वलि मोटा होता राजवी,
स्थान घोषणा (री) हो नहीं चाली बात।
तो श्रेणिक घोषणा किम करी,
न्याय तोलो हो हिरदे साक्षात ॥९४॥
श्रीकृष्ण करी उद्घोषणा,
दीक्षा लेवो हो श्री नेम रे पास।
साय करूं पिछला तणी,
ज्ञात में हो यो पाठ है खास ॥९५॥
आज्ञा न दीवी श्री नेमजी,
उद्घोषणा हो करी नगरी मंझार।
(तो) थारे लेखे पाप हुवो घणो,
दीक्षा दलाली (में)हो नहीं धर्म लिगार ॥९६॥
अन्य नृप री चाली नहीं,

उद्‌घोषणा हो दीक्षा रे सहाय।
इण कारण श्रीकृष्ण ने,
पाप कहणो हो थारी श्रद्धा रे माँय ॥९७॥
कोणिक भगतो वीर रो,
नित्यप्रते हो कुशल-बात मंगाय।
प्रेम धरी सुणे भाव सुं,
इण काजे हो देवे नर ने साय ॥९८॥
वीरजी नाय सिखावियो,
मुझ वारता हो नित लीजे मंगाय।
(तो) प्रभु नाम गोत्र सुणवा तणा,
पाप लागो हो थारी श्रद्धा रे माँय ॥९९॥
तब तो कुगुरु इण पर कहे,
"स्थान घोषणा हो करी श्रेणिक राय।
दीक्षा घोषणा थी कृष्णजी,
प्रभु वारता हो कोणिकजी मंगाय ॥१००॥
श्रेणिक अरु श्रीकृष्णजी,
धर्मदलाली हो कीधी शुध-भाव।
कोणिक भक्ती रस पियो,
धर्म भाव रो हो चित में अतिचाव ॥१०१॥

श्रेणिक ने प्रभु नहिं कह्यो,
  घोषण कीजे हो म्हारे स्थान रे काम।
आव-जाव कार्य करण रो,
  गृहस्थो ने हो केणो वर्ज्यो श्याम ॥१०२॥
समदृष्टि निर्मल भाव थी,
  स्थान-दलाली हो कीधी श्रेणिक राय।
तिणरे विवेक अति निरमलो,
  कारण काज हो समझे मन माँय ॥१०३॥
उद्घोषण आज्ञा में नहीं,
  दीक्षा-दलाली हो निर्मल परिणाम।
धर्म-दलाली नीपजी,
  समदृष्टी हो करे एहवा काम ॥१०४॥
नाम गोत्र सुणे साधु रो,
  अति फल कह्यो हो सूतर रे माँय।
कोणिक सुणतो (प्रभु) वारता,
  भक्ती रो हो फल मोटो पाय ॥१०५॥
वारजो नाय सिखावियो
  मुझ वार्ता हो नित लीजे मंगाय।
वली न जणाई आमना,

ते तो समझो हो निजबुद्धि लगाय ॥१०६॥
बीजा राजा री चालो नहीं,
उद्घोषण हो स्थान दीक्षा रे काज।
पिण निषेध दीसे नहीं,
कीधी होवे हो जाणे जिन राज ॥१०७॥
(आजपिण) पत्र भेजण साधु कहै नहीं,
श्रावक भेजे हो वन्दणा विविध प्रकार।
वन्दना रे तिण ने लाभ छे,
पत्र प्रेषण हो आरम्भ निरधार ॥१०८॥
पत्र प्रेषणसाधु न सीखवे,
श्रावक भेजे हो निज ज्ञान विचार।
वन्दन-भाव तो निर्मला,
साधु रो हो नहीं कहण आचार" ॥१०९॥
इम सुधा ते बोलिया,
तव ज्ञानी हो तेने कहे समझाय।
इणहिज विध तुम श्रद्ध लो,
उद्घोषण हो मति मारया रोन्याय ॥११०॥
घोषणाकर प्रभु ना कहे,
पूछ्या थी हो कदा न देवे ज्वाव।

'स्थान' 'दीक्षा' 'अमरी' तणो,

सरखी घोषणहो तुम्हें समझो मितावं ॥१११॥

'स्थान' 'दीक्षा' 'अमरी' तणा,

कारज चोखा हो प्रभु दीना बताय ।

समदृष्टिकीना भाव सूँ,

धर्म दलाली हो धर्म नो फल पाय ॥११२॥

'अमाघाओ' नाम दया तणो,

वीरो भाष्यो हो प्रथम संवरद्वार ।

ते घोषणा श्रेणिक करी,

मतिमारो हो घोषणा रो सार ॥११३॥

पर ने कह्यो स्थान देवजो,

दीक्षा लेवो हो पर ने कह्यो ताम ।

मतिमारो तिम पर ने कह्यो,

एक सरिखा हो तीनों ये काम ॥११४॥

दो में धर्म केवो तुम्हें,

तीजा में हो बतावो पाप ।

खोटी श्रद्धा छे तुम तणी,

मिथ्यावादी हो तुमे दीसो छो साफ॥११५॥

(कहे) "मतिमार थी नरक रुकी नहीं",

(तो) स्थान दलाली थी रुको नहिं केम।

(यदि कहो) आगे एना फल पामसो,

मतिमार रा हो तुम्हे जाणो एम ॥११६॥

जो नरक जावा रा नाम थी,

मतिमार में हो बताओ पाप।

तो श्रेणिक भक्ती बहु करी,

थारे लेखे हो ते सगली कलाप ॥११७॥

जो भक्ति आदि किया थकी,

तीर्थंकर हो होसी श्रेणिकराय।

(तो) मतमार दलाली धर्म री,

पद तीर्थंकर हो अभयदान रे साथ ॥११८॥

मतिमार घोषणा राय री,

थें बनावो हो मोटा राजा री रीत *।

शास्त्र विरुद्ध तुम या कथी,

कुण माने हो थांरी परतीत ॥११९॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

श्रेणिकराय पटहो फिरावियो,

यह तो जाणो हो मोटा राजा री रीति ॥३०॥

(अनुकम्पा ढाल—७)

तीर्थंकर चक्री मोटका,
ज्याँरे नामे हो थां कियो पखपात ।
मतिमार घोषणा नहीं करी,
थारा मुख थी हो (थारी) उत्थप गईबात ॥१२०॥
जो रीत मोटा राजा तणी,
तो चक्री हो पाली नहीं केम ।
अनुकम्पा रा द्वेष थी,
नहिं सूजे हो निज बोल्या रो नेम ॥१२१॥
'मतिमारो' ने 'दीक्षा' री घोषणा,
राज-रीती हो केवल ते नांय ।
समदृष्टी राजा तणी,
कृष्ण, श्रेणिक हो कोधी सूत्र रे माँय।१२२।
दीक्षा री उद्घोषणा,
कृष्ण छोड़ी हो दूजा राजा री नाय ।
(पिण) निषेध नहीं इग घात री,
करो होसी हो कोई समदृष्टिराय॥१२३॥
ब्रह्मदत्त चक्री भणी,
चित मुनि हो समझावण आय ।
आरज कर्म ने आदरो,

परजा री हो अनुकम्पा लाय ॥१२४॥
पिण भारी- कर्मी रायजी,
जीवरक्षा रो हो नहीं कीनो उपाय ।
तुमे अनुकम्पा रा द्वेष थो,
मतिमारमें हो (श्रेणिक ने)देवो पाप बताय।१२५।
लाज तजी बके भांड ज्यूं,
वेश्या रा हो देवे दृष्टान्त कूढ़ ।
कुकर्मी अनुकम्पा किम करे,
तो पिण खोटी हो कुगुरु ताणेरूढ़ ॥१२६॥
(कहे) "दो वेश्या कसाइवाड़े गई,
करता देखी हो जीवां रा संहार ।
दोनो जणी मतो करो,
मरता राख्या हो जीव दोय हजार ॥१२७॥
एक गहणो देई आपणो,
तिण छोड़ाया हो जीव एक हजार ।
दूजी छोड़ाया इण विधे,
एक दोय सूँ हो चोथो आश्रव सेवाड़" ॥१२८॥
इम कही पूछे साध ने,
धर्म पाप हो कहो किण ने होय ।

जीव बेहू छोड़ाविया,

*संख्या सरखी हो फरक नहिं कोय॥१२९॥

(उत्तर) भोला ने भड़काविया,

दृष्टान्त नो हो रची मायाजाल।

(हिवे) करड़ो उत्तर बिन दिया,

नहीं कटे हो थांरी जाल कराल ॥१३०॥

काँटा थी कांटो काढ़णो,

तेथी सुणने हो मत करज्यो रीस।

कुहेतु शल्य उधारवा,

करड़ा दृष्टान्त हो देऊं विश्वा वीस ॥१३१॥

दो बायां अनुरागण तुम तणी,

पूज्य दर्शण हो गई रेल रे मांय।

किणविध आई बायां तुम्हें,

पूज्य पूछ्या हो बायां कह्यो सुणाय ॥१३२॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

एकण सेवायो आश्रव पांचमो,

तो उण दूजी हो चोथो आश्रव सेवाय।

फेर पड़यो तोई ते इण पाप में,

धर्म हांसी हो ते तो सरिखो थाय ॥८०॥५४॥

(अनु० ढाल—७)

(एक) गेणो वेंच्यो म्हें आपणो,
  रोक रुपैया हो कीना दर्शन काज।
खरची गांठे बांध ने,
  तुम दर्शन हो आई महाराज ॥१३३॥
(छे महिना) सेवा करसूँ थाहरी,
  खरचो खासूं हो थाने वेरास्यूं माल।
दूजी कहे मुझ सांभलो,
  इणविध से हो में आई चाल ॥१३४॥
खरचो नहीं थी मुज कने,
  आवण री हो तुम पासे चाय।
एक दोय सेठ री जाय ने,
खरची लीधी हो चोथो आश्रव सेवाय ॥१३५॥
तुम दर्शन खरचो कारणे,
  चोथो आश्रव हो (स्वामी) सेव्यो चित चाय।
खासूं ने माल वेरावस्यूं,
  इम बोली हो पूज्य (रो) भगता वाय ॥१३६॥
(एक) समदृष्टी सुणियो तिहां,
  वांरा (वायां रा) पूज्यने हो पूछ्यो प्रश्न एक।
(यामें) धर्मणी पापणी कोण छे,

बतावो हो थाँरी श्रद्धा ने देख ॥१३७॥
सेव्यो आश्रव एक पाँचमो,
तो दूजी आई हो चोथो आश्रव सेव।
दोयां रो भेद बताय दो,
आश्रव सरखा हो थारे केवा रा टेव ॥१३८॥
सुण घबराया पूज्यजी,
उत्तर देता हो ऊठे श्रद्धा री टेक।
(दोनो) सरीखी कह्यां शोभे नहीं,
लोक निन्दे हो (लागे) कलंक री रेख ॥१३९॥
डरता इणविध बोलिया,
गणा वेंची हो क्रोधा दर्शन सार।
तिणरी बुद्धि तो निरमलो,
तेने हुवो हो धर्मफल अपार ॥१४०॥
बीजी कुलक्षणी नार है,
दर्शन काजे हो चोथो आश्रवद्वार।
सेव्यो तो महापापणी,
(विवेक)विकलणी रे हो धर्म नाहीं लिगार॥१४१॥
तव बोल्यो तिहां समकिती,
थारो श्रद्धा हो थारे कथने कूड़।

आश्रव सेव्या बिहुजणी,
फर्क भाख्यो हो तुमें तज ने रूढ़ ॥१४२॥
दर्शन, सेवा, वांरा सारीखो,
फेर पड़ियो हो क्यों थांरे मांय।
एक धर्मी एक पापिणी,
किम होवे हो थारा मत रे मांय ॥१४३॥
एक सेव्यो आश्रव पांचमों,
चोथो आश्रव हो दूजो सेवी ने आय।
फेर पड्यो इण पाप में,
धर्म होसो हो ते तो सरिखो थाय ॥१४४॥
तब सिद्धा ते बोलिया,
"दोनां री हो मति एक सो नाय।
गेणा बेच्या व्रत जावे नहीं,
पाप मोटको हो ते नाय गिणाय ॥१४५॥
(वलि) लोभ छोड्यो सिणगार रो,
ममता मारी हो समता दिल धार।
(तेथी) पेलो हुवे धर्मातमा,
ज्ञानदृष्टि हो इम करणो विचार ॥१४६॥
दूजी दुरगुणो थी भरी,

दर्शन रा हो भाव किण विध होय।
बात असम्भवती दिसे,
दृष्टान्ते हो कदा मानां सोय ॥१४७॥
तो मति खोटी तेहनी,
कुकर्मिणी हो मोटो कीनो अन्याय।
पाप सेव्यो अति मोटको,
फिट-फिट हो हुवे जगत रे माय ॥१४८॥
(वलि) लोभ मिट्यो नहिं तेहनो,
तीव्र वधियो हो तिणरे मोह जंजाल।
तेथी पापणी दूजी नार है,
दर्शन रो हो थोथो आल-पंपाल" ॥१४९॥
न्यायपक्षी तब बोलियो,
सेवारो हो थारे दीखे राग।
तेथी सिद्धा बोलिया,
(पिण) जीवरक्षा में हो दोनो सत्य ने त्याग॥१५०॥
कथन विचारो तुम तणो,
दो वेश्या रा हो थां लीनो नाम।
गेणाने व्यभिचार थी,
जीवरक्षा रा हो त्यां कीदो काम ॥१५१॥

वेश्या रक्षा किम करे,
अनुकम्पा हो तेने किम होय।
कूकर्मी महापापिणी,
दयाद्वेषणी हो नरकगामिणी जोय ॥१५२॥
शोचाचारी 'कागला',
धनरक्षक हो कहे 'चोर' ने कोय।
पतिव्रता 'व्यभिचारिणी',
जो भाखे हो मूरख नर सोय ॥१५३॥
(तिम) वेश्या दयालू थाप ने,
जीव बचाया हो दोनां रे हात।
लोकां ने भड़कायवा,
अणहोती हो थां थापी बात ॥१५४॥
(कदा) गणिका हलूकर्मी होवे,
धर्मीजन री हो वा संगत पाय।
छोड़े कुकर्म आपणा,
दया प्रकटे हो वीरा दिलरे मांय ॥१५५॥
तदा गेणा ममता उतार ने,
बकरा रा हो देवे प्राण बचाय।
आरजकर्म रा साय से,

हिंसक नी हो दीनी हिंसा छोड़ाय ॥१५६॥
तिण रे विवेक अति निरमलो,
जीवरक्षा हो तिणरे घट मांय ।
लोभ छोड़्यो सिणगार नो,
धन री तो हो दीनी ममता घटाय ॥१५७॥
(ते) प्रथम बाई सम जाणवी,
धर्मकर्ता हो ते गुण री खाण ।
धर्म लाभ तिण ने हुवो,
गुण निपज्यो हो अनुकम्पा प्रमाण ॥१५८॥
दूजो वेश्या दुष्टणी,
निशदिन जावे हो व्यभिचार रे मांय ।
तिण रे अनुकम्पा किम हुवे,
अग्नि में हो किम कमल उगाय ॥१५९॥
गणिका बकरा बचाविया,
व्यभिचार ने हो सेव्यो रक्षा रे काज ।
या परतख झूठी बात है,
थांने बोलता हो नहीं आवे लाज ॥१६०॥
कदा हेतू मानाँ तुम तणो,
तदा उत्तम हो तुम्हें समझो एम ।

वेश्या हुवे व्यभिचारणी,
खोटीमति री हो करणी शुद्ध केम ॥१६१॥
विपरीत-मति थी जे करे,
तेनी करणी हो विपरीत ही जोय।
तिणरा पक्ष री थापना,
जे करे हो ते मिथ्याती होय ॥१६२॥
मिथ्यातणी व्यभिचारणी,
तेनी करणी हो नहीं धर्म रे मांय।
कर्मबन्ध फल जेहने,
तेनो प्रश्न हो पूछो किण न्याय ॥१६३॥
हाथी ना स्नान सारखी,
मिथ्यामति री हो करणी शुध नांय।
अल्प सो पाप उतार ने,
महापाप ने हो ते तो बांधे प्राय ॥१६४॥
मिथ्यामति व्यभिचारणी,
तेनी करणी हो श्रद्धूं धर्म रे मांय।
ते उत्तर तुमने दिये,
में तो श्रद्धां हो तेने धर्म में नाय ॥१६५॥
वेश्या-वेश्या मुख वसी,

लज्जा छोड़ी हो देवे दृष्टान्त कूड़ ।
जीवां री रक्षा उठायवा,
खोटी कथनी री हो मांडो अति रूढ़ ॥१६६॥
(कहे) "एक वेश्या सावज कृत (काम) करी,
सहस्र नाणो हो ले वलि घर मांय ।
दूजो कर्त्तव्य करी आपणो,
मरता राख्या हो सहस्र जीव छोड़ाय ॥१६७॥
धन आण्यो खोटा कर्त्तव्य करी,
तिण रे लाग्या हो दोनों विध कर्म ।
तो दूजो छुड़ाया तेहने,
ज्यों लखे हो हुवो पापने धर्म" ॥१६८॥
एवो खोटो न्याय लगाय ने,
आप मते हो करे खोटो थाप ।
विहु विध पाप पेली किन्ो,
दूजी रे हो कहो धर्म ने पाप ॥१६९॥
होवे कथन हमारो सांभलो,
में (तो) नहीं करां हो धर्म-पाप री थाप ।
मिथ्याहेतु मिथ्यामति कथे,
तेने उत्तर हो म्हें देवाँ साफ ॥१७०॥

(एक) नारी कुकर्म सेव ने,
सहस्र नाणो हो लाई घर मांय ।
दूजी सेवी व्यभिचार ने,
द्रव्य खरचे हो साधु सेवा रे मांय ॥१७१॥
धन आणो खोटा कृत करी,
तिण रे लग्या हो दोनों विध कर्म ।
तो दूजी सेवा करी थांहरी,
थारे लेखे हो हुवो पाप ने धर्म ॥१७२॥
पाप गिणे व्यभिचार में,
उणरी सेवा में हो ते न गिणे धर्म ।
पोते श्रद्धा री खबर पोते नहीं,
दया उठावा हो बांधे भारी-कर्म ॥१७३॥
इम कह्या ज्वाव न ऊपजे,
चर्चा में हो अटके ठामोठाम ।
तो पिण निर्णय ना करे,
जीवरक्षा में हो लेवे पाप रो नाम ॥१७४॥
जीव, द्रव्य, अनादी शासतो,
प्राण-प्रजा हो पलटे बारंबार ।
ते प्राणाँ री घात हिंसा कही,

रक्षा ने हो दया कही सुखकार ॥१७५॥

ते रक्षा करे समभाव थी,

समदृष्टि हो संवर गुण पाय।

मोक्षमार्ग रक्षा कही,

मोक्ष-अर्थी हो करे अति हर्षाय ॥१७६॥

पृथव्यादिक छहुं काय ना,

प्राणरक्षा में हो कहे पाप अजाण।

जाँ हिंसा-रक्षा जाणी नहीं,

खोटी कर रया हो निजमत नी ताण ॥१७७॥

(वलि) त्रसथावर नहीं सारखा,

जांरा प्राणां में हो कह्यो फरक अपार।

तेथी हिंसा माहीं फरक छे,

स्थूल सूक्षम हो सूत्तर निरधार ॥१७८॥

तिम शक्य अशक्य रा भेद ने,

हिंसा रक्षा में हो समझो चतुर सुजाण।

(केई) समुच्चय नाम बताय ने,

शक्य छोड़ने हो करे अशक्य (री) ताण ॥१७९॥

थावर रक्षा करी ना सके,

त्रस जीवाँ री हो करे देइ ने माय।

(एक) लारो कुकर्म सेव ने,
सहस्र नाणो हो लाई घर मांय।
दूजी सेवी व्यभिचार ने,
द्रव्य खरचे हो साधु सेवा रे मांय ॥१७१॥
धन आणो खोटा कृत करी,
तिण रे लग्या हो दोनों विध कर्म।
तो दूजी सेवा करी थांहरी,
थारे लेखे हो हुवो पाप ने धर्म ॥१७२॥
पाप गिणे व्यभिचार में,
उणरी सेवा में हो ते न गिणे धर्म।
पोते श्रद्धा री खबर पोते नहीं,
दया उठावा हो बांधे भारी-कर्म ॥१७३॥
इम कह्या ज्वाब न ऊपजे,
चर्चा में हो अटके ठामोठाम।
तो पिण निर्णय ना करे,
जीवरक्षा में हो लेवे पाप रो नाम ॥१७४॥
जीव, द्रव्य, अनादी शासतो,
प्राण-प्रजा हो पलटे वारंवार।
ते प्राणों री घात हिंसा कही,

रक्षा ने हो दया कही सुखकार ॥१७५॥
ते रक्षा करे समभाव थी,
समदृष्टि हो संवर गुण पाय ।
मोक्षमार्ग रक्षा कही,
मोक्ष-अर्थी हो करे अति हर्षाय ॥१७६॥
पृथव्यादिक छहुं काय ना,
प्राणरक्षा में हो कहे पाप अजाण ।
जाँ हिंसा-रक्षा जाणी नहीं,
खोटी कर रया हो निजमत नी ताण ॥१७७॥
(वलि) त्रसथावर नहीं सारखा,
जांरा प्राणां में हो कह्यो फरक अपार ।
तेथी हिंसा माहीं फरक छे,
स्थूल सूक्षम हो सूत्तर निरधार ॥१७८॥
तिम शक्य अशक्य रा भेद ने,
हिंसा रक्षा में हो समझो चतुर सुजाण ।
(केई) समुच्चय नाम बताय ने,
शक्य छोड़ने हो करे अशक्य (री)ताण॥१७९॥
थावर रक्षा करी ना सके,
त्रस जीवाँ री हो करे देह ने माय ।

तिण में पाप रो भर्म घुलाविधो,

रक्षा रो हो द्वेष घणो घट माय ॥१८०॥

त्रिविध जीव रक्षा करे,

परिग्रह री हो ममता ने हटाय ।

तेने मोल रा धर्म रो नाम ले,

पाप बतावे हो कुबुद्धि चलाय ॥१८१॥

ममता उतारयां धर्म (हुवे) मोलरो,

इम बोले हो तेने पूछणो एम ।

वस्त्र ममता परिग्रह गृस्थ रो,

साधु (ने) दियां हो धर्म होवे केम ॥१८२॥

(कहे) ममता उतारयां धर्म है,

अमोलक हो मोल रो नहिं थाय ।

तो जीवरक्षा रे कारणे,

(परिग्रह)धन ममता हो मेटे मोल में नाँय॥१८३॥

भगवती अठारवें शतके,

परिग्रह उपधि रो भिन्न-भिन्न न एक ।

ममता थी परिग्रह कह्यो,

उपकारे हो उपधि ने लेख ॥१८४॥

उपकार ममता एक है,

इम बोले हो कुगुरु निशंक।
सूत्र वचन उत्थाप ने,
मिथ्यात रा हो मारे माठा-डंक ॥१८५॥
दान, शीयल, तप भावना,
मोक्षमारग हो चारों सुखकार।
अभयदान भय मेटे कह्यो,
जो देवे हो पावे भवपार ॥१८६॥
अनुकम्पा अर्थ प्रकाशिनी,
ढाल जोड़ी हो चूरू शहर मँजार।
उगणीसे छियांसी तणे,
श्रावण सप्तमी हो सुखदायी वार ॥१८७॥

सातवीं ढाल सम्पूर्णम्।

दोहा

न हणे हणावे जीव (छकाय) ने, स्वदया कही जिनराय
औरॉं री रक्षा करे, ते पर-दया कहाय ॥१॥
न हणे तेने दया कहे, रक्षा ने कहे पाप।
एह वचन कुगुरु तणा, दी पर-दया उत्थाप ॥२॥
स्व-दया पर-दया विहु कही, ठाणाअंग रे मांय।
चोथे ठाणे देखलो, मिथ्या तिमिर मिटाय ॥३॥
वेषधारी भर्म्या घणा, मिथ्या उदय विशेष।
भोलां ने भरमाविया, काढ़ दया री रेष ॥४॥
पर-दया उठायवा, पड़पंच रच्या अनेक।
सूत्र-न्याय (सूँ) खण्डन करूँ, सुणज्यो आण विवेक॥

ढाल—आठवीं

(तर्ज—अनुकम्पा सावज मत जाणो)

द्रव्यलाय में बले जद प्राणी,
आरत-ध्यान पावे दुख भारो।
बिल-बिलता रुद्रध्यान जो ध्यावे,
अनन्त संसार वधे दुखकारो॥
चतुर धरम रो निर्णय कीजे ॥१॥

कोई दयावन्त दया दिल धारी,
अग्नि में बलता ने जो बचावे।
द्रव्य भाव दया तिणरे हुई,
विवरो सुणो तिणरो शुद्ध भावे ॥च०॥२॥

द्रव्ये तो उणरा प्राण री रक्षा,
भावे खोटा ध्यान घटाया।
यह उपकार इणभव परभव रो,
विवेक विकल यों भेद न पाया ॥च०॥३॥

द्रव्य आगसे बलता राख्या,
भाव आग तिणरी टल जावे।

आरत रुद्र ध्यान घट्या सुं,
शान्तिभाव तिणरे मन आवे ॥च०॥४॥
समदृष्टी शुद्ध ज्ञानसे जाणे,
लाय बले खोटो ध्यान ते ध्यावे।
तेथी अनुकम्पा लाय बचावे,
समकित लक्षण ज्ञानी बतावे ॥चतु०॥५॥
भावदया तिणरे शुद्ध भावे,
द्रव्यदया थी भाव ते आवे।
ते थी अनुकम्पा जीव बचाया,
पड़त-संसार सूत्र बतावे ॥चतु०॥६॥
केइएक जीव, जीवाँ ने बचाया,
अणलाधो समकित गुण पावे।
पड़त संसार करे तिण अवसर,
अभयदान देवे शुद्ध भावे ॥चतु०॥७॥
दव बलता जीव शरणे आया,
हाथी अनुकम्पा दिल लायो।
संसार पड़त अरु समकित पायो,
ज्ञातासूत्र में पाठ बतायो ॥चतुर०॥८॥
शून्यचित सूत्र वांचे मिथ्याती,

द्रव्य, भाव रो नाहीं निवेरो ।
दयाहीन कुपन्थ चलायो,
त्याँ कुगति सन्मुख दियो डेरो ॥चतु०॥९॥
स्वारथत्यागी परउपकारी,
दुखी दर्दी रो दर्द मिटावे ।
ते पिण माठा-ध्यान मिटावण,
तिण में पाप मिथ्याती बतावे ॥चतु०॥१०॥
(कहे) "साधु गृहस्थ ने ओषध देने,
दुःख आरत तिणरो न मिटावे ।
तेथी पाप में गृहस्थ ने केवां,
साधु न करे ते पाप में आवे" ॥च०॥११॥
(उत्तर) चौमासे उत्पत्ति जीवां री जाणो,
गामानुगाम विहार न करणो ।
त्रिविधे (त्रिविधे) साधू त्यागज कीधा,
सूत्र में साधु ने बतायो निरणो ॥च०॥१२॥
साधु न करे ते पाप में गावो,
तो चौमासे (में) साधु ने आणो न जाणो ।
गेही चौमासा में वन्दण जावे,
(तो) तिणमें एकान्त-पाप बताणो॥च०॥१३॥

वन्दण का तो बन्धा करावे,
चौमासे सेवा रा भाव चढ़ावे।
पन्थी, पन्थ बढ़ावण कारण,
धर्म कही-कही ने ललचावे ॥चतु०॥१४॥
जो साधु न करे ते पाप में आवे,
तो गृहस्थ ने पाप थें क्यो न बतावो।
चौमासे दर्शन अर्थे न जाणो,
इण विध त्याग क्यों न करावो ॥चतु०॥१५॥
राते वखाण सुणावण काजे,
आंतरो पाड़ण त्याग करावो।
वर्षते पाणी वह सुणवा ने आवे,
तिण सुणवा में धर्म बतावो ॥चतु०॥१६॥
गेही रो आणो जाणो सावज,
त्रिविध-त्रिविध भलो नहीं जाणो।
(तो) वखाणादिक ने पाप में केणा,
आया विना किम सुणे वखाणो॥चतु०॥१७॥
जो वखाणादिक सुणवा में धर्म है,
आवा-जावा रो साधु न केवे।
तो आरत-ध्याण मेटण में धर्म है,

औषधादिक साधू नहिं देवे ॥चतु०॥१८॥
वाहण चढ़ बखाण में आवे,
औषधादि देई आरत मिटावे।
दोनों कारज सरीखा जाणो,
शुद्ध भावां रो बेहु फल पावे ॥चतु०॥१९॥
एक में भाव रो धर्म बतावे,
बीजा में पाप री बोले वाणी
भोला ने भ्रम में पाड़ विगोया,
तेपिण डूबे छे कर-कर ताणो ॥च०॥२०॥
(कहे) "उपदेश देई म्हें हिंसा छुड़ावां,
आहार छोड़ी उपदेश ने जावां।
कोश आंतरे हिंसा छूटे तो,
आलस छोड़ म्हें तुर्त ही धावां" ॥च०॥२१॥
(उत्तर) धर्मी नाम धरावण काजे,
भोला जाणे दयागुण खाणी
हिंसा छोड़ावां मुख से वोले,
पिण काम पड़्या बोले फिरती वाणी॥२२॥
किड़ियाँ, माखा, लट्टा, गजायाँ,
गेही रे पग हेटे चींथ्या जावे।

वन्दण का तो बन्धा करावे,
चौमासे सेवा रा भाव चढ़ावे ।
पन्थी, पन्थ बढ़ावण कारण,
धर्म कही-कही ने ललचावे ॥चतु०॥१४॥
जो साधु न करे ते पाप में आवे,
तो गृहस्थ ने पाप थें क्यों न बतावो ।
चौमासे दर्शन अर्थे न जाणो,
इणविध त्याग क्यों न करावो ॥चतु०॥१५॥
राते बखाण सुणावण काजे,
आंतरो पाड़ण त्याग करावो ।
वर्षते पाणी वह सुणवा ने आवे,
तिण सुणवा में धर्म बतावो ॥चतु०॥१६॥
गेही रो आणो जाणो सावज,
त्रिविध-त्रिविध भलो नहीं जाणो ।
(तो) बखाणादिक ने पाप में केणा,
आया विनाकिम सुणे बखाणो॥चतु०॥१७॥
जो बखाणादिक सुणवा में धर्म है,
आवा-जावा रो साधु न केवे ।
तो आरतध्याण मेटण में धर्म है,

औषधादिक साधू नहिं देवे ॥चतु०॥१८॥
वाहण चढ़ बखाण में आवे,
औषधादि देई आरत मिटावे।
दोनों कारज सरीखा जाणो,
शुद्ध भावां रो बेहु फल पावे ॥चतु०॥१९॥
एक में भाव रो धर्म बतावे,
बीजा में पाप री बोले वाणी
भोला ने भ्रम में पाड़ बिगोया,
तेपिण डूबे छे कर-कर ताणो ॥च०॥२०॥
(कहे) "उपदेश देई म्हें हिंसा छुड़ावां,
आहार छोड़ी उपदेश ने जावां।
कोश आंतरे हिंसा छूटे तो,
आलस छोड़ म्हें तुर्त ही धावां" ॥च०॥२१॥
(उत्तर) धर्मी नाम धरावण काजे,
भोला जाणे दयागुण खाणी
हिंसा छोड़ावां मुख से बोले,
पिण काम पड़्या बोले फिरती वाणी॥२२॥
कड़ियाँ, माखा, लटा, गजायाँ,
गेही रे पग हेटे चींथ्या जावे।

भेषधारी कहे म्हें हिंसा छोड़ावां,
(तो) उपदेश देवा ने क्यों नहिं जावे ॥२३॥
ठोड़ (घर) बेठा उपदेश देवे तो,
दस-बीस जोवां ने दोरा समजावे ।
(जो) उद्यम करे चार महिना रे माहीं,
तो लाखां जीवां री हिंसा टलावे ॥२४॥
सौ घरां अन्तर तपस्या करावण,
आलस तज उपदेशण जावे ।
सौ पग गयां (लाखां कीड़ां री) हिंसा छुटे छे,
तो हिंसा छुड़ावण क्यों न सिधावे॥२५॥
दीक्षा लेतो जाणे सौ कोस ऊपर,
(तो) भेषधारी भेष पेरावा जावे ।
एक कोस पर (कीड़ा री) हिंसा छुटे छे,
कोड़ां री हिंसा क्यों न छुड़ावे ॥२६॥
जब तो कहे "बकरादि पँचेन्द्री,
हिंसक री हिंसा छोड़ावण जावां ।
कीड़ा-मकोड़ा तो हणे वणाई,
(त्यांरी)हिंसा छोड़ावा कहां-कहां धावां॥२७॥
कीड़ा-मकोड़ादि हिंसक री हिंसा,

छोड़ावा में म्हें धर्म तो जाणां।
(पिण) सगले ठिकाने जाय ने हिंसा,
छोड़ावा रो उद्यम किम ठाणां ॥''॥२८॥
तो इमहिज समझो रे भाई,
कोड़ादि रक्षा धर्मलें जाणां
मार्गादिक में सगले ठिकाणे,
बचावण रो उद्यम किम ठाणां ॥च०॥२६॥
हिंसा छुड़ावा सगले न जावो,
तिम ही जीव बचावा रो जाणो।
जीवरक्षा रो द्वेष धरी ने,
मिथ्यामति क्यों ऊंधो ताणो ॥च०॥३०॥
आपणा व्रत री रक्षा करे और,
परजीवां रा प्राण बचावे।
हिंसक थी मरता जाणी ने,
उपदेश देई जीव छुड़ावे ॥चतुर०॥३१॥
हिंसादि अकृत्य करता देखी,
भेषधारी कहे झट समझावाँ।
गृहस्थ पग हेटे जीव आवे तो,
तिण ने तो कहे म्हें नाय बतावां ॥३२॥

श्रद्धा जाँरी पग-पग भटके,
न्याय सुणो ज्ञानी चितलाई ।
दोनों पक्ष री सुण ने वातां,
सत्य ग्रहो तो है चतुराई ॥चतुर०॥३३॥
बकरा री हिंसा छुड़ावण काजे,
(कहे कसाई ने)"पापोने उपदेशदेवा नेजावां"
भोला भरमावण इणविध बोले,
चतुर पूछे तब ज्वाव न पावां ॥च०॥३४॥
श्रावक पग तले चिड़ियो मरे छे,
हिंसा हुवे छे थारे सामे ।
उपदेश देई ने क्यों न छुड़ावो,
श्रावक उपदेश तत्क्षण पामे ॥चतुर०॥३५॥
तब तो कहे म्हें मौनज साधां,
मतमार कह्या म्हां ने पापज लागे ।
थें केता म्हें तो हिंसा छुड़ावां,
बोल ने बदल गया क्यों सागे ॥चतु०॥३६॥
कदी कहे म्हें हिंसा छुड़ावां,
कदी मतमार कह्या पाप केवे ।
देवलध्वज ज्यों फिरे अज्ञानी,

बोल बदल मिथ्यामत सेवे ॥चतु०॥३७॥

(कहे) "हिंसादि अकृत्य करता देखी,
उपदेश देई में हिंसा छुड़ावां।
अकृत्य करता रा पाप मेटण में,
फुरती करां में देर न लावां" ॥चतु०॥३८॥

*डफोरसंख ज्यों बात या थारी,
काम पड़्या से झट नट जावो।
गृहस्थी रा पग हेटे जीव मरे जब,
हिंसा छोड़ावण तुम नहीं चावो ॥३९॥

तेल ढुलण दृष्टान्त रे न्याय,,
पगतल जीव बतावणो खोटो।
ते दृष्टान्त थी थारी श्रद्धा में,
हिंसा छुड़ावण में होसी तोटो ॥४०॥

युक्ति पे युक्ति सुणो चित लाई,
जीव बचावणो धर्म रे माई।
जो जीव बचावा में पाप बतावे,
वाने उत्तर (यो) दो समजाई ॥४१॥

*जो कहते हैं, पर करते नहीं, उन्हें डफोरसंख कहा जाता है।—संग्राहक

*गृहस्थ रे घर साधु गोचरी पहुंच्या,
गृहस्थ ने अकृत्य करतो देखे।
तेल घड़ा ने फोड़े ने ढोरे,
कीड़ियां रा दर मांहो जावे विशेखे ॥४२॥
(बीचमें) जीव आवे ते तेल से बहता,
तेल बह्या-बह्यो अग्नि में जावे।

* जैसा कि वे कहते हैं:—

गृहस्थ रे तेल जाय सूग फुट्यां,
कीड़ियां रा दल मांहि रेला आवे।
वीच में जीव आवे तेल सूं वहता,
तेल वह्यो-वह्यो अग्नि में जावे ॥
वेशधारी भूलां रो निर्णय कीजे ॥ १८ ॥
जो अग्नि उठे तो लाय लागे छे,
त्रसथावर जीव मार्‌या जावे।
गृहस्थ रा पग हेटे जीव वतावे,
तो तेल ढुले ते वासण क्यों न वतावे ॥ १६ ॥
पग सूं मरता जीव वतावे,
तेल सूं मरता जीव नहीं वतावे।
यह खोटी श्रद्धा उघाड़ा दीसे,
पण अभ्यंतर अंधारो नजर न आवे ॥ २० ॥
(अनुकम्पा ढाल—८)

जो अग्नि उठे तो लाय लागे छे,

(तब) गृहस्थ ने अनरथ रो पाप थावे ॥४३॥

तिणने बर्ज ने पाप छुड़ावो,

अनरथ होता ने अटकावो।

जो तिणने तुमे वर्जो नहीं तो,

हिंसा छुड़ावां यूं झूठ सुणावो ॥४४॥

हिंसा छुड़ावाँ यूं मुख से बोले,

तेल सूं होतो हिंसा न छुड़ावे।

यह खोटी श्रद्धा उघाड़ी दीसे,

अन्तर अंधारो नजर न आवे ॥४५॥

(कहे) "पग से मरता जीव तुमे बतावो,

तेल से मरता तो थें न बतावो"।

(उत्तर) खोटा बोलो मन रे मँते थें,

म्हारे तेल पगां रो सरीखो दावो ॥४६॥

पग से मरता ने तेल से मरता,

मुनि जोवां री रक्षा में धर्म बतावे।

म्हारी तो श्रद्धा कठेइ न अटके,

तो अणहूंता सन्त पर ते कलंक चढ़ावे॥४७॥

कठे कहे "हिंसक (ने) समझावां,"

तेल थी हिंसा करता न वरजो ।
वलि तुमारा हेतु रा उत्तर,
देऊं ते सुण ने रोस म करजो ॥च० ॥४८॥
(कहे) "श्रावक रा पग तल अटवी में,
जीव मरे त्याने क्यों न बचावो*" ।
(उत्तर) वाँ पिण में तो जीव बतावाँ,
झूठो बातां क्यों थें उठावो ॥ चतु० ॥४९॥
थाँरा हेतु थी थारी श्रद्धा में,
दूषण आवे विचारी देखो ।
मिथ्या-ज्ञान मिटावण काजे,

---

*जैसा कि वे कहते हैं:—

एक पगहेठे जीव बतावे,
त्याँ में थोड़ा सा जीवाँ ने बचता जाणो।
श्रावकाँ ने उजाड़ सों मार्ग घाल्यां,
घणा जीव बचे त्रसथावर प्राणी ॥ २४ ॥
थोड़ी दूर बतायाँ थोड़ो धर्म हुवे,
तो घणा दूर बतायाँ घणो धर्म जाणो ।
घणा दूर रो नाम लियाँ धक उठे,
ते खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥ चे० ॥ २५ ॥
(अनुकम्पा ढाल—८)

थारा हेतु रो भाखूं लेखो ॥ चतुर०॥५०॥
करता विहार मारग में थारा,
श्रावक सामा मिळवा आवे ।
मार्ग छोड़ो ने ऊजड़ जावे,
त्रसथावर री हिंसा थावे ॥चतुर०॥५१॥
श्रावक ने उपटपंथ जाता,
त्रसथावर (रो) हिंसा करता देखा ।
(जो) हिंसा छुड़ावा में धर्म थें मानो,
तो श्रावक ने वर्जणो इण लेखे ॥५२॥
हिंसा छोड़ावणो मुख से बोले,
थोथा बादल जिम ते गाजे ।
श्रावक वन (उजाड़) में जीव ने चौंथे,
मौन साजे वर्जता क्यों लाजे ॥चतुर०॥५३॥
कहो बकरा हणता ने समझावां,
(तहां तो कसाई) समझे निश्चय नहिं जाणा
श्रावक ने वन में हिंसा थो न वर्जें,
जहां छूटे हिंसा त्रसथावर प्राणो.॥चतु०॥५४॥
कसाई केणो माने न माने,
श्रावक तो थारा अनुरागो ।

जो थें वर्जो हिंसा नहीं होवे,
नहिं वर्जो थांरी श्रद्धा भागी ॥चतुर०॥५५॥
हिंसा छोड़ावणी जो थें मानो,
धर्म रो काम युं मुख से बखाणो।
(तो) श्रावक पग री हिंसा छुड़ाया,
धर्म हुवा रो क्यों नहिं मानो ॥चतुर०॥५६॥
* दोपग (हिंसा) छोड़ाया थोड़ो धरम हुवे,
घणा पग छुड़ाया घणो धर्म जाणो।
घणा (पगां) रो नाम लिया बक उठे,
तो खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥ ५७ ॥
*अन्धा पुरुष रो हेतु देने,

---

*जैसा कि वे कहते हैं:—
थोड़ी दूर बतायां थोड़ो धर्म हुवे,
तो घणी दूर बतायां घणों धर्म जाणो।
घणी दूर रो नाम लियां बक उठे,
ते खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥वेश० ॥२५॥
(अनुकम्पा ढाल—८)

*जैसा कि वे कहते हैं:—
कोई अन्धा पुरुष गामान्तर जातां,
आंख बिना जीव किणविधि जोवे।

जीव बतावा में पाप बतावे ।

तो तेहिज हेतु थी हिंसा छुड़ावा में,

तेनी श्रद्धा में दूषण आवे ॥ चतुर० ॥५८॥

(कोई) अन्धा पुरुष गामान्तर जातां,

आंख बिना हिँसा किम टाले ।

कीड़ो गजाया मारता जावे,

त्रसथावर (जीव)पर पग देई चाले ॥च०॥५९॥

थें पिण सहजे साथे हो जावो,

अन्धा ने हिंसा करता देखो ।

पग-पग हिंसा थें न छुड़ावो,

(तेथो) खोटा बोलण रो तुम लेखो ॥च०॥६०॥

(त्या अंधा ने) जताय जताय ने हिंसा छुड़ाणी,

कीड़ी मांकादिक चींथतो जावे,

त्रसथावर जीवां रा घमसाण होवे ॥वेश०॥२६॥

वेषधारी सहजे साथे हो जाता,

अंधा रा पग सूं मरता जीवांने देखे ।

यह पग-पग जीवां ने नहीं बतावे,

तो खोटो श्रद्धा जाणज्यो इन लेखे ॥वेश० ॥ २७ ॥

(अनुकम्पा ढाल—८)

पापबन्ध थो करणा दूरा ।
इण कार्य क्रिया थो पोते जो लाजो,
तो जीव बतावा में दोष दे कूरा ॥च०॥८१॥
* आटा री ईल्याँ रो नाम लेई ने,
जीव बचावा में दोषण केवे ।
तेइज हेतु थो त्यारी श्रद्धा में,
हिंसा छुड़ाया में दूषण रेवे ॥चतुर०॥८२॥
ईल्यांदि जीवां सहित आटो छे,
गृहस्थ ढोले छे मारग मांयो ।
तपती रेत उनालारी तिण में,

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—
इल्यां सुलसुलियां सहित आटो छे,
गृहस्थ सूं ढुले मार्ग मांयो ।
यह तपती रेत उन्हाले री तिण में,
पड़त प्रमाण होत जुदा जीव काया ॥वेश०॥२६॥
गृहस्थ नहीं देखे आटो ढुलतो,
ते वेषधारियां री नजरां आवे ।
यह पग हेठे जीव बतावे तो,
आटो ढुलता जीव क्यों न बचावे ॥वेश०॥३०॥
(अनुकम्पा ढाल—८)

पड़त मरे हिंसा बहु थायो ॥चतुर०॥६३॥

गृहस्थ रे ज्ञान न पाप लागण रो,

ते कद्दा थारे समझ में आयो।

थें हिंसा देखो छोड़ावणो केवो,

[तो]आगे हुरता हिंसा थी क्यों न मुकावो ॥६४॥

[कहे] "गृहस्थ री उपधी सूं जीव मरे छे,

सब ठांड़ बतावा ने क्यों नहिं जावो*।"

तो उत्तर सिद्धो थारा हेतुरो

हिंसा छुड़ावा ने थें [क्यों] नहीं धावो ॥६५॥

किणहिक ठौर हिंसा छुड़ावे,

किणहिक ठौर शंका मन आणे।

मिथ्या उदय थी समझ पड़े नहीं,

अज्ञानी जन तो ऊंधी ताणे ॥चतुर०॥६६॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

इत्यादिक गृहस्थ रे अनेक उपधि सूं,

त्रसथावर जीव मुवा ने मरसी।

एक पग हेठे जीव बतावे,

त्यां ने सगलो ही ठौर बतावणा पड़सी॥ २१

(अनुकम्पा ढाल—८)

गृहस्थ विविध प्रकार री वस्तु थी,
(त्रसथावर) जीवां री हिंसा किधी ने करसी
[जो] हिंसा देखी छोड़ावणो केवे,
तो सगलेई ठोड़ छोड़ावणि पड़सी ॥६७॥
पग-पग ज्वाब अटकता देखो,
तो पिण खोटी रूढ़ न छोड़े।
मोह मिथ्यात में डूब रह्या छे,
जीवरक्षा रा धर्म ने तोड़े ॥चतुर०॥६८॥
हिंसा छोड़ावणो जीव बचावणो,
दोनों ही काम धर्म में जाणो।
अवसर ज्ञानी जन आदरता,
कर्म निर्जरा ठाण पिछाणो ॥
या श्रद्धा श्री जिनवर भाखी ॥ चतुर० ॥६९॥
हिंसा छुड़ावा में धर्म बतावे,
जीव बचाया में पाप जो केवे।
ऊँधा बोलां री थाप करीने,
खोटा हेतु बहुविधि देवे ॥चतुर०॥७०॥
(मुनि) सब ठामे हिंसा छुड़ावा न जावे।
सब ठामे जीव बचावा न धावे।

अवसर थी हिंसा छुड़ावे,

अवसर जीव बचावा जावे ॥चतुर०॥७१॥

जोव बचावणो हिंसा छुड़ावणो,

दोनां रो एक ही समझो लेखो ।

एक में धर्म दूजा में पापो,

इम श्रद्धे ते मिथ्यामति देखो॥चतुर०॥७२॥

गृहस्थी रा पग हेठे जीव आवे तो,

साधु बतावे तो पाप न चाल्यो ।

भेषधारी तिणमें पाप बतावे,

परतख घोचो कुगुराँ घाल्यो ॥चतुर०॥७३॥

(केहे) "समवसरण जन आता ने जाता,

केई रा पग से जीव मर जाथा ।

जो जीव बचाया में धर्म होवे तो,

भगवन्त कठेही न दीसे बताया ॥चतुर०॥७४॥

नन्दण मनिहार डेंडको होय ने,

वीर वन्दण जाता मारग मांगो ।

तिणने चींथ मार्यो श्रेणिक ना वछेरे,

वीर साधु सामांमेल क्यों न बचायो"॥७५॥

"तेथी जीव बताया में पाप बतावां"

एवो कुगुरु कुतर्क उठावे।
न्याय से उत्तर ज्ञानी देवे,
तब चुप होवे ज्वाब न आवे ॥चतुर०॥७६॥
जो जीव बचावा साधु न मेल्या,
तिण थी जीव बचाया में पापो।
तो राजगिरी सो नगरी रे मांये,
(महा) हिंसादि कुकर्म होता संतापो ॥७७॥
भगवन्त ते कुकर्म छोड़ावा,
साधां ने मेल्या कठेई न दीसे।
तो थारे लेखे उपदेश देई ने,
कुकर्म छोड़ावा में पाप विशेषे ॥चतु०॥७८॥
जो कुकर्म छोड़ावणो धर्म रे मांई,
(पिण) उपदेश साधु अवसर थी देवे।
तो जीव छोड़ावणो धर्म रे माँई,
अवसर स्थान विचारी लेवे ॥ चतुर० ॥७९॥
कोई गृहस्थ उपदेश देइ ने,
सब ठामे जाई (महा) हिंसा छुड़ावे।
कोई पंचेन्द्रिय जीव बचावे,
ये दोनो ई धर्म तणो फल पावे॥चतुर०॥८०॥

हिंसा छोड़ाया तो धर्म बनावे,

जीव बचाया पाप जो केवे ।

ऊँधो श्रद्धा या पग-पग अटके,

ताण करी-करी दुर्गति लेवे ॥चतुर० ॥८१॥

श्रावक रो नाम तो अलगो मेलो,

साधां रा कर्तव्यमुख लावें ।

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रे अवसर,

साधु कार्य किया गुण पावे ॥ चतुर०॥८२॥

सज्झा, ध्यान, तप विहार विचरणो,

व्याख्यान, व्यावच धर्म रो कामो ।

बल बुद्धि और क्षेत्र काल रे,

विवेक करे साधु गुण धामो ॥चतुर०॥८३॥

बिन अवसर ये नांय करे तो,

सज्झा ध्यान न पाप में आवे ।

(तिम) बिन अवसर जीव नाय छुड़ाया,

(तेथी) जीव छोड़ावणो पाप न थावे ॥८४॥

कदा केई एम परूपे,

साधु-श्रावक (रो) अनुकम्पा एको ।

साधु करे तिम श्रावक ने करणी,

पिण काम पड़े जब फिरता ही देखो ॥८५।
साधु, साधु थी मरता जीव बतावे,
पाप टले अनुकम्पा गावे।
श्रावक, श्रावक थी मरता जीव बतावे,
झटपट तेने पाप बतावे ॥चतुर० ॥८६॥
श्रावक श्रावक ने(मरता) जीव बतावे,
(तो) किसो पाप लागे किसो व्रत भागे।
तिण रो तो उत्तर मूल न आवे,
थोथा गाल बजावा लागे ॥ चतुर० ॥८७॥
सिद्धान्त (रा) बल विना बोले अज्ञानी,
संभोग (रो) नाम अनुकम्पा में लावे।
गालां रा गोला मुख से चलावे,
ते न्याय सुणो भविषण चित चावे ॥च०॥८८॥
साधु रे संभोग श्रावक से नाहीं,
(तेथी) जीव बतावा में पाप बताओ।
(तो) श्रावक साधु ने जीव बतावे,
तिण में तो धर्म तुमें क्यों गावो ॥८९॥
जद कहे म्हारी हिंसा टलाई,
(तेथी) धर्म रो काम कियो सुखदाई।

(तो) श्रावक श्रावक ने (मरता) जीव
(तो) यो पिण धर्म मानो क्यों न श्राई॥१०
साधू थी मरता जीव बचाया,
श्रावक थी मरता तिम ही बचाया।
एक में धर्म ने दूजा में पापो,
ई झगड़ा थारी श्रद्धा में मचिया॥च०॥११॥
बारा प्रकार रा संभोग भाख्या,
सूत्र समायंग माईं देखो।
जीव बताया संभोग लागे,
इसो नाहीं सूत्तर में लेखो॥चतु०॥१२॥
श्रावक, श्रावक ने जीव बताया,
पाप लागे यो मत काढ़्यो कूरो।
तिण लेखे जीवाँ रा भेद सिखाया,
थाँरी श्रद्धा में (होसो) पाप रो पूरो॥१३॥
(कहे) "जीवां रा भेद तो ज्ञान रे खातिर,
(वली) दया रे खातिर म्हें पिण बतावाँ।
भूत भविष्य में जीव बताया,
धर्म रो काम म्हें कहि समझावाँ॥च०॥१४॥
वर्तमान (काल) पग हेठे आया बताया,

जो लाय से निसर बाहर न जावे ॥१०४॥
(कहे) "बलता परिणाम सेंठा नहीं रेवे (तो),
अकाम मरण थी दुर्गति जावे ।
(तेथी) थिवरकल्पी ने बाहर निकलणो,
(म्हारो)उपसर्ग मिट्या मन निर्मल थावे"॥१०५॥
रे तुम्हें कहता बलता जावां रा,
कर्म छुटे निर्जरा बहु थावे ।
निज बलवा री बात आई जद,
बाल मरण री तुमें याद आवे ॥च०॥१०६॥
(जो) साधु नामधारी पिण बलता,
परिणाम बिगड़्या दुर्गति जावे ।
(तो) गृहस्थी बलतो बिलबिल बोले,
ते लाय बल्या कर्म केम चुकावे ॥च०॥१०७
ते तो महाआरत रे वस थी,
लाय बल्या संसार वधावे
ते अनन्त संसार रा पाप मुकावा,
दयावन्त त्याँने बाहिर लावे ॥च०॥१०८॥
ज्यां-ज्यां गृहस्थ रा गुण रो वर्णन,
त्यां-त्यां अल्पारम्भी भाख्या ।

बली हलुकर्मीपणो गुणां में,

तुमे कहो थारा ग्रन्थ में दाख्या॥च०॥१०९॥

अल्पारम्भो गुण श्रावक केरो,

उवाइ सुगड़ाअंग में देखो।

महारम्भो श्रावक नहीं होवे,

(तेथी) अल्पारम्भी श्रावक रो लेखो॥११०॥

लाय लगावे ते महा अवगुण में,

सूत्र मांहीं जिन इणविध भाख्यो।

(अत्यन्त) ज्ञानावर्णी आदि:कर्म रो कर्त्ता,

तेथी महाकर्मी प्रभु दाख्यो ॥ १११ ॥

महा क्रियावन्त तेने जाणो,

महा आश्रव कर्म बन्ध नो करता।

परजीव ने महा वेदनदाता,

एहवा दुर्गुण नो ते धरता ॥ च० ११२ ॥

लाय बुझावे तेना गुण तो,

भगवती मांहीं इणविध बोले।

अल्पकर्म ज्ञानावर्ण्यादि,

तेथी हलुकर्मी इण तोले ॥ च० ॥ ११३ ॥

अल्पक्रिया अल्प आश्रवो ते छे,

तेथी माठा-कर्म न बांधे ।
जीवाँ ने बहु वेदना नहिं देवे,
(तेथी) अल्प वेदना गुण ते साधे ॥ ११४ ॥
सूत्र रो न्याय विचारो जोवो,
अग्नि लगावे महारंभो (महा) पापो ।
तिणने बुझावे ते अल्पारम्भो,
हलुकर्मी यूं थोरजो थापो ॥च० ॥११५॥
(सहजे) लाय बुझावे वो अल्पारम्भो,
तो बलता नर बचिया (महा) गुण कहिये ।
अभयदान रो पिण ते दाता,
शुद्ध परिणामो ते धर्म में लहिये ॥११६॥
(कहे) "लाय बुझावे ते अल्पारम्भी,
तो पिण पापो-धर्मी तो नाहीं ।
थोड़ा आरम्भ ने गुण में न श्रद्धां,
आरम्भ सगला पाप रे माहीं" ॥च०॥११७॥
(उत्तर) इम बोले तो जाणो अज्ञानी,
अल्प-महारम्भ (रो) भेद न पाया ।
अल्पारम्भी तो स्वर्ग में जावे,
(तेथी)अल्पारम्भीने गुण में बताया ॥११८॥

थारा भ्रम-विध्वंसन माहीं,
 अल्पारम्भो ने स्वर्ग * बतायो ।
अल्पारम्भे महारंभ नाहीं,
 यो पिण गुण है बठे हो* गायो॥च०॥११९॥
अग्नि थी मरता जीव बच्या रा,
 द्वेष थी तुम इहाँ अवला बोलो ।
"अल्पारंभ तो गुण में नाहीं",
 [यो]सत्य छोड़्यो तुम हिरदामें तोलो।१२०।
अल्पारंभ श्रावक [रा] गुण बोले,
 निरारंभो साधु [रा] गुण जाणो ।
तेथी साधु-श्रावक रो धर्म है जुदो,
 दो विध धर्म (इम) सूत्र बखाणो ।च०।१२१।

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

अथ इहां तो भद्रकालिक घणा गुण कह्या । सहजे क्रोध,मान, माया, लोभ, पतला; अल्प इच्छा, अल्प आरंभ, अल्प समारंभ, एहवा गुण करी देवता हुवे छे ॥

(भ्रम-विध्वंसन—पृ० ४८)

*जैसा कि वे कहते हैं:—

परम अल्प आरम्भ, अल्प समारम्भ, अल्प इच्छा कही । विचारे इम जाणिये जे घणी इच्छा नहीं ए गुण छे ॥

(भ्रम-विध्वंसन—पृ० ४८)

(कहे) "अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,
साधु बुझावा ने क्यों नहि जावे।"
छन्दमती एहो तर्क उठावे,
ज्ञानी उत्तर इण विध देवे ॥चतुर० ॥१२२॥
अल्पारंभ गुण लाय बुझाया,
निरारंभ गुण साधु रो जाणो।
अग्नि आरम्भ रा त्याग न तोड़े,
मिथ्या तर्क थी न करो ताणो ॥ १२३ ॥
अतिचार टल ने व्रत पले जे,
ते काम श्रावक रा धर्म माहीं।
साधु करे नहीं त्याँ कामाँ ने,
ते काम साधु रे कल्प में नाहीं ॥च०॥१२४॥
"जो साधु न करे ते गृहस्थ रे पाप,"
यूँ भोलाने भरमाया काठा।
जे चातुर होय ने ज्वाब पूछे जब,
न टिके मिथ्याति जावे नाठा ॥च०॥१२५॥
(जो) नर, पशु, श्रावक भूखा राखे,
तो हिंसा लागे पेलो व्रत भागे।
अन्न दिया करुणा नहिं जावे,

अतिचार टलवा रो धर्म है सागे ॥१२६॥

साधु रा मातपितादि गृहस्थो,

(जाने) साधु जिमावे तो दूषण लागे।

गृहस्थो (अपना) मनुष्याँ ने भूखा राखे तो,

दूषण लागे पेलो व्रत भागे ॥चतुर०॥१२७॥

गृहस्थो, गृहस्थो रो थापण नहिं देवे,

दूजो तीजो व्रत तिण रो भागे।

थापण देदे साधु न केवे,

पिण गृहस्थ दिया व्रत रेवे सागे ॥च०॥१२८॥

इम अनेक बोल साधु रे दूषण,

ते गृहस्थो रे व्रत रक्षा रा ठामो।

(तिथो) गृहस्थ ने साधु रो आचार जुदो,

एक कहे ते मिथ्यात रा धामो ॥च०॥१२९॥

सुणे (वखाण) धर्म आई पड़ते पाणो,

एकान्त पाप तो तिणने न केवे।

लाय से काढ़ मनुष्य बचाया,

एकान्त पापी रो पद देवे ॥चतु०॥१३०॥

(इम) उलटी कथनी कथी-कथो ने,

भोला ने कुपन्थ चढ़ाया।

परठाण पूछ्या ज्वाब न आवे,
शर्म छोड़ो ने भेष लजाया ॥चतु०॥१३१॥
अग्नि थी बलता मनुष्य बचाया,
अग्नि री हिंसा तिण में थावे।
जो इणविध धर्म मनुष्य बचाया,
तिण पर खोटा न्याय बतावे॥च०॥१३२॥
(कहे) "पाँच सौ नित्य-नित्य जीवाँ ने मारे,
करे कसाई अनारज कर्मो।
जो मिश्र-धर्म होवे अग्नि बुझायाँ,
तो इणने हो मार्‍याँ हुवे मिश्र धर्मो ॥१३३॥
जो लाय बुझाया जीव बचे तो,
कसाई (ने) मार्‍या बचे घणा प्राणी।
लाय बुझाया कसाई ने मार्‍या,
दोयाँ रो लेखो सरीखो जाणी"॥च०॥१३४॥
(उत्तर) खोटा न्याय इम देवे अज्ञानी,
परतख बोले अनारज वाणी।
अग्नि बुझावणो मनख ने मारणो,
सरिखो कहे महाअधर्म-प्राणी ॥च०॥१३५॥
मनुष्य मार बकरा ने बचावे,

अग्नि थी बलता मनुष्य निकाले।
दोयां रो एक हो लेखो बतावे,
वे अन्याय रे मारग चाले ॥चतुर०॥१३६॥
कुगुरु रा मत रा श्रावक श्राविका,
अग्नि तो नित हो लगावे बुझावे।
(ते) मनुष्य रा मारण जेसा महापापी,
थारो श्रद्धा रे लेखे थावे ॥चतुर०॥१३७॥
मोटी में मोटो मनुष्य रा हिंसा,
अग्नि रो हिंसा सूक्ष्म साखो।
लाय बुझावे ते अल्पारंभो,
भगवतो सूत्र छे तिण रो साखो ॥१३८॥
बकरा बचावण मनुष्य ने मारे,
अग्नि थो बलता मनुष्य बचावे।
दोयां ने सरीखा कुगुरु केवे,
ते महा मिथ्याति चोडे दावे॥च०॥१३९॥
बकरा बचावण मनुष्य ने मारे,
ते तो परतख छे कुकर्मो।
अग्नि थो बलता मनुष्य बचावे,
अल्पारम्भो ने दया धर्मो ॥च०॥१४०॥

बिन आरंभ नर मरता बचावे,
तिण में जो एकान्त-पाप बतावे।
ते अग्नि रा आरंभ रो नाम लेइ ने,
फोकट भोला ने भरमावे ॥चतु०॥१४१॥

जीवदया रा द्वेषी वेषो,
अणहूंताई चोज लगावे।
बुद्धिवन्त न्याय सूनर रो देवे,
पग-पग कुगुरु ने अटकावे ॥चतुर०॥१४२॥

उगणीसे छीयासो सम्मत,
श्रावण द्वादशी सुखदाई।
ढाल रसाल कुमति मन खण्डण,
चूरू-शहर में हर्ष बनाई ॥चतुर०॥१४३॥

इति आठवीं ढाल समाप्तम्

दोहा

जीवहिंसा छे अति बुरो, तिण में दोष अनेक।
जीवरक्षा में गुण घणा सुणजो आणि विवेक ॥१॥

ढाल-नवमी

(तर्ज—यो भव, रतनचिन्तामणि सरिखो)

रक्षा देवो सब (ने) सुखदाई,
या मुक्तिपुरो नो साई जो।
साठे नामे दया कही जिन,
दशमां अंग रे माई जो ॥
रक्षा धरम श्री जिनजी री वाणी ॥ १ ॥
त्रसथावर रे खेम री कर्ता,
अहिंसा दुःखहर्ता जो।
द्वीप तणो परे त्राण शरण या,
गणधर एम उचरताजो ॥रक्षा०॥२॥
'निर्वाण'[1] 'निर्वृत्ति'[2] नाम छे इणरो,
'समाधि'[3] 'शक्ति'[4] स्वरूपो जो।

५
'कीर्ति' जग प्रसिद्ध (री) करता,
६
'कान्ति' अद्‌भुत रूपोजी ॥रक्षा०॥३॥
७
'रति' आनन्द रे हेतुपणा थी,
८
'विरति' पाप निवरती जी ।
९
'श्रुताङ्ग' श्रुतज्ञान थी उपनो,
१०
तृप्त करे ते 'तृप्ति' जी ॥ रक्षा०॥४॥
११
देही री रक्षा थी 'दया' कहीजे,
१२ १३
'मुक्ति' अरु 'क्षान्ति' (खन्ती या क्षमा) उदारोजी
१४
'समकितनो' आराधना सांची,
भवजीवा हिरदा में धारोजी ॥रक्षा०॥५॥
सर्व धर्म अनुष्ठान चढ़ावे,
१५
'महन्ती' इणरो नामो जी ।
बीजा व्रत इण रक्षा रे काजे,
जिन भाखे अभिरामो जी ॥रक्षा०॥६॥
जिन धर्म पावे इण परतापे,

१६
तेथी 'बोधि' कहिये जी ।
१७ १८ १९ २० २१
'बुद्धि' 'धृति' 'समृद्धि' 'ऋद्धि' वृद्धि,
२२
'स्थिति' शाश्वतो एथी लहिये जी ॥र०॥७॥
२३
'पुष्टि' पुण्य रो उपचय इण थी,
२४
समृद्धि लावे 'नन्दा' जी ।
जीवां रे कल्याण री कर्ता,
२५
'भद्रा भणे मुनिन्दा जी ॥रक्षा०॥८॥
२६
'विशुद्धि निर्मलता दाता,
२७
लब्धि री दाता 'लब्धि जी ।
सब मत में प्रधानता इणरी,
२८
'विशिष्टदृष्टि' प्रसिद्धो जी ॥रक्षा०॥९॥
२९
'कल्याणा' कल्याण री दाता
३०
'मंगलिक' विघ्न मिटावे जी ।
३१
हर्ष करे तेथी यह 'प्रमोदा'

[३२]
'विभूति' इणथी आवे जी ॥रक्षा०॥१०॥
जीव बचायां जीवां री रक्षा
[३३]
'रक्षा' इण रो नामो जी ।
ज्ञानी होवे समझे ज्ञान में
रक्षा धर्म रो कामो जी ॥रक्षा०॥११॥
भारीकर्मा लोगां ने भ्रष्ट करण ने
(जीव) रक्षा में पाप बतावे जी ।
त्यांने कुगुरु थे' प्रत्यक्ष जाणो'
ते दीर्घ संसार वधावे जी ॥रक्षा०॥१२॥
जीवरक्षा सूत्तर री वाणी
तो पाप कह्यो किण लेखे जी ।
अन्तर आंख हिया री फूटी,
ते सूत्र सामो नहीं देखे जी ॥रक्षा०॥१३॥
[३४] [३५]
'सिद्धिआवास' अरु 'अनाश्रवा'
[३६]
केवली केरो 'स्थानो' जी ।
[३७] [३८]
'शिव' 'समिति' सम्यक पर वृत्ति,
[३९]
'शील' मन समाधानोजी ॥रक्षा०॥१४॥

४०
हिंसा उपरति 'संयम' कहिये,
४१
'शीलपरोवर' जाणो जो।
४२ ४३ ४४
'संवर' गुप्ति 'व्यवसाय' नामे,
निश्चय स्वरूप थो जाणोजी ॥रक्षा०॥१५॥
४५
'उच्छय' भाव उन्नतता समझो,
४६
'यज्ञ' भाव पूजा देवां री जो।
गुण आश्रय रो स्थानक निर्मल,
४७
'आयत्तन' नाम छे भारो जो॥रक्षा०॥१६॥
४८
'यजन' अभयदान थो जाणो
जीवरक्षा रो उपायोजी।
तेथो यतना इण ने कहिये,
पर्याय नाम कहायो जो॥रक्षा०॥१७॥
जीव बचाया में पाप बतावे,
ते कुपन्थे पड़िया जो।
परतख पाठ देखे नहीं भोला,
हिरदा मिथ्यात से जड़ियाजो ॥र०॥१८॥

३२
'विभूति' इणथी आवे जी ॥रक्षा०॥१०॥

जीव बचायां जीवां री रक्षा

३३
'रक्षा' इण रो नामो जी ।

ज्ञानी होवे समझे ज्ञान में

रक्षा धर्म रो कामो जी ॥रक्षा०॥११॥

भारीकर्मा लोगां ने भ्रष्ट करण ने

(जीव) रक्षा में पाप बतावे जी ।

त्यांने कुगुरु थें प्रत्यक्ष जाणो'

ते दीर्घ संसार बधावे जी ॥रक्षा०॥१२॥

जीवरक्षा सूत्तर री वाणी

तो पाप कही किण लेखे जी ।

अन्तर आंख हिया री फूटी,

ते सूत्र सामो नहीं देखे जी ॥रक्षा०॥१३॥

३४ ३५
'सिद्धिआवास' अरु 'अनाश्रवा'

३६
केवली केरो 'स्थानो' जी ।

३७ ३८
'शिव' 'समिति' सम्यक पर वृत्ति,

३९
'शील' मन समाधानोजी ॥रक्षा०॥१४॥

४०
हिंसा उपरति 'संयम' कहिये,

४१
'शीलपरोवर' जाणो जो।

४२ ४३ ४४
'संवर' गुप्ति 'व्यवसाय' नामे,

निश्चय स्वरूप थो जाणोजी ॥रक्षा०॥१५॥

४५
'उच्छय' भाव उन्नतता समझो,

४६
'यज्ञ' भाव पूजा देवां री जी।

गुण आश्रय रो स्थानक निर्मल,

४७
'आयत्तन' नाम छे भारो जी॥रक्षा०॥१६॥

४८
'यजन' अभयदान थो जाणो

जीवरक्षा रो उपायोजी।

तेथो यतना इण ने कहिये,

पर्याय नाम कहायो जो॥रक्षा०॥१७॥

जीव बचाया में पाप बतावे,

ते कुपन्थे पड़िया जो।

परतख पाठ देखे नहीं भोला,

हिरदा मिथ्यात से जड़ियाजो ॥र०॥१८॥

४९
'प्रमादअभाव' इणो ने कहिये

डरते धीर बंधावे जो।

५०
'आश्वासन' छे नाम इणो रो,

सूत्र में गणधर गावे जो ॥ रक्षा० ॥ १९ ॥

५१
'विश्वास' पावे अन्य ने देवे,

दया भणोतो जाणो जो।

भयभीत प्राणी ने अभय जो देवे,

५२
ते 'अभय' नाम परमाणो जो ॥र०॥२०॥

५३
'अमाघात' ते अमारी कहिये,

(इण रो) श्रेणिक पडह पिटायो जो।

दयाहीन तो पाप बतावे,

सूत्र रो पाठ उठायो जो ॥ रक्षा० ॥ २१ ॥

५४ ५५
'चोखा' 'पवित्रा' अति ही पावन,

दोनां रो अर्थ एको जो।

५६
'भावशुचि' सर्व मूल दया थी,

५७
पवित्र 'पूता' देखो जो ॥ रक्षा० ॥ २२ ॥

अथवा पूजा अर्थ अणो रो,
भाव से देव पूजिजे जो।
द्रव्य सावज पूजा हिंसा में,
ते इहां नाय गणोजे जो ॥ रक्षा० ॥ २३ ॥

५८ ५९ ६०
'विमल' 'प्रभासा' अरु 'निर्मलतर',
साठ नाम प्रभु भाख्या जो।
प्रवृत्ति और निवृत्ति रा योगे,
भिन्न-भिन्न नाम ये दाख्या जो ॥र०॥२४॥
नहिं हणनो निवृति जाणो,
परवरतो गुण रक्षा जो।
प्रवृति निवृति दोनों ओलखाया,
यां (साठ) नामां रा दोनो शिक्षा जो ॥२५॥
त्रिविधे-त्रिविधे छः काय न हणनो,
हणने तो धर्म बतावे जो।
त्रिविधे-त्रिविधे जोवरक्षा करण में,
पाप कहि धर्म लजावे जो ॥ रक्षा० ॥२६॥
नहिं हणनो ने रक्षा करणो,
ते प्रभु आज्ञा आराधो जो।

याही बात सभामें परूपे,

(त्याँने) वीर कह्या न्यायवादी जो॥र०॥२७॥

प्राणी, भूत, जीव, सत्व री,

अनुकम्पा कोई करसी जी।

साताव्रेदनी कर्म ते बांधे,

पुण्यश्री ने वरसी जो ॥ रक्षा० ॥ २८ ॥

भय पाया ने शरणो देवे,[1]

दया जीव विश्रामो जी।

पंखीगगन[2] तिसिया ने पाणी,[3]

भूखो भोजन[4] रे ठामो जो ॥रक्षा ०॥२९॥

जहाज[5] समुद्र तिरण उपकारी,

चोपद[6] आश्रम थानो जी।

रोगी[7] औषध बल सुख पावे,

अटवी[8] साथ (सु) प्रमाणो जो ॥ र० ॥३०॥

(इण) आठाँ थी अधकी अहिंसा,

सूत्तरपाठ पिछाणो जी ।
थोड़ो-थोड़ो गुण आठ में दाख्यो,
सम्पूर्ण रक्षा में जाणो जी ॥ रक्षा० ॥३१॥
अंश तो रक्षा आठां में होवे,
ते एक देश दया जाणो जी ।
सब अंश रक्षा सर्व दया में,
(तेथी) उत्कृष्ट इणने पिछाणो जी ॥र०॥३२॥
सबजीव| खेमकरी कही इणने,
मूलपाठ रे मांई जी ।
रक्षा खेम रो अर्थ ही परगट,
तेथी रक्षा-धर्म सुखदाई जी ॥रक्षा० ॥३३॥
जीवरक्षा रा द्वेषी वेषी,
रक्षा में पाप बतावे जी ।
दया-दया तो मुख से बोले,
देही-रक्षा दया उठावे जी ॥ रक्षा० ॥ ३४ ॥
माहण-माहण कह्यो अरिहंता,
(तेथी) मतमार कह्या नहिं पापो जी ।
अन्तर नयन हिया रा फूटा,
(करे) मतमार में पाप री थापो जी ॥३५॥

(कहे) "रक्षा करतां प्राणी मर जावे,
(तिथी) रक्षा में पाप बतावाँ जी।
जो धर्मकारज में हिंसा होवे,
ते धर्म ने पाप में गावां जी" ॥
चतुर सत्य रो निर्णय कीजे ॥रक्षा०॥३६॥
जिण रक्षा में जीव मरे नहीं,
केवल जीवां री रक्षा जी।
तिण में भी थें पाप बतावो,
तो खोटो थांरी शिक्षा जी ॥ रक्षा०॥ ३७ ॥
श्रावक वन्दण ने नित आवे,
जीव घणा नित मारे जी।
ते वन्दणा ने पाप में केणो,
तुम श्रद्धा निरधारे जो ॥रक्षा०॥३८॥
(कहे) "आवण-जावण में जीव मरे छे,
ते तो आरंभ माँई जो।
वन्दणा ने म्हें धर्म में मानां,
भाव अच्छा सुखदाई जो" ॥रक्षा०॥३९॥
(उत्तर) तो इमहि तुम समझो चतुरनर,
रक्षादि धर्म रे माँई जो।

हलण-चलण थी जीव मरे तो,
आरँभ समझो भाई जो ॥रक्षा०॥४०॥
आरंभ ने अगवाणी करने,
रक्षा में पाप न भाखो जो।
परिणाम आछा है धर्म रे माँई,
थें श्रद्धा सूधी राखो जो ॥रक्षा०॥४१॥
थावर-त्रस हिंसा सूतर में,
अल्प-महारंभ बोले जो।
थावर सूक्ष्म-हिंसा कहिये,
त्रस रो मोटो खोले जो ॥रक्षा०॥४२॥
त्रस में स-अपराधी रो छोटो,
निर-अपराधी रो मोटो जो।
छोटे रा योग थी मोटो छुटे तो,
छूटो ते किम हुवे खोटो जो ॥रक्षा०॥४३॥
(इम) छोटी रा जोग थी मोटो हिंसा,
छोड़े छोड़ावे भल जाणे जो।
निजनो, परनो, हरकोई नो,
(तेने) ज्ञानी तो शुद्ध वखाणे जो॥रक्षा०॥४४॥
इम मोटी-हिंसा छांड़े छोड़ावे.

ते (तो) धर्म रो मारग जाणो जी,
तिण मांही जे पाप बतावे,
ते पूरा मन्द अयाणो जी ॥रक्षा०॥४५॥
(इम) पंचेन्द्रिय मारे मांस रे अर्थे,
तेनी हिंसा छोड़ावे अनेको जी।
(तेने) अचित दियां में पाप परूपे,
ते डूबे छे विना विवेको जी ॥ रक्षा० ॥४६॥
जीव बचाया में पाप कहे छे,
कुयुक्ति लगावे खोटी जी।
ते रक्षा रा द्वेषी अनार्य यूं बोले,
राखण आपनी रोटी जी ॥ रक्षा० ॥४७॥
(कोई) अनुकम्पा-दानमें पाप परूपे,
त्यांरी जीभ वहै तरवारी जी।
पेहरण सांग साधां रो राखे,
धिक त्यांरो जमवारो जी ॥ रक्षा० ॥४८॥
साधु रो विरुद धरावे लोकाँ में,
वाजे भगवन्त-भक्ता जी।
जीवरक्षामें पाप बतावे,
(त्याँरा) तीन व्रत भागे लगता जी॥रक्षा०॥४९॥

जीव बचाया में पाप परूपे,
ते जीव-दया ने त्यागे जी।
तीन-काल री रक्षा ने निन्दी,
(तिणसूँ)पहिलो महाव्रत भागे जी॥रक्षा०॥८०
रक्षा में पाप तो जिनजी कह्यो नहीं,
(रक्षा में) पाप कह्या झूठ लागे जी।
इसड़ा झूठ निरन्तर बोले,
त्याँरो दूजो महाव्रत भागे जी॥रक्षा०॥८१॥
जीव बचाया पाप जो केवे,
वां जीवां री चोरी लागे जी।
वले आज्ञा लोपी श्री अरिहंत नी,
तीजो महाव्रत भागे जी ॥ रक्षा०॥८२॥
जीव बचावामें पाप बतावे,
ज्यांरी श्रद्धा घणी छे गन्धी जी।
ते मोह मिथ्यात में जड़िया अज्ञानी,
त्यांने श्रद्धा न सूझे सूँधीजी ॥रक्षा०॥८३॥
(त्यांने) पूछ्या कहे म्हें दयाधर्मी छां,
दया तो देही री रक्षा जी।
तिण रक्षा में पाप बतावो,

थें दया रो न पायो शिक्षा जो ॥रक्षा०॥५४॥
जीव-रक्षा ने दया नहीं माने,
ते निश्चय दया रा घाती जो।
त्यां दयाहीनने साधू श्रद्धे,
ते पिण निश्चय मिथ्याती जो ॥ रक्षा० ॥५५॥
(कहे) "साधु ने जीव बचावणो नाहीं,
(जीव) रक्षा ने भलो न जाणे जी।"
(उत्तर) ते रक्षाधर्म रा अजाण अज्ञानी,
इसड़ी चर्चा आणे जी ॥ रक्षा० ॥५६॥
(कहे) "साधु तो जीवां ने क्याने बचावे,
ते तो पच रह्या निज-कर्मों जी।"
त्यांरे लेखे श्रो जीव-दया रो,
उपदेशणो नहिं धर्मो जो ॥ रक्षा० ॥५७॥
जीव मारे ते कर्मे पचे छे,
(तिण ने) उपदेशे केम छुड़ाओ जो।
जद कहे कर्म-बन्ध टलावां,
तो मरतेना क्यों न टलाओ जो ॥रक्षा०॥५८॥
(हिंसक ने) पाप कर्म करता थो बचावे,
तिण में तो (थें) करुणा बतावो जो।

(तो) मरणवालो पिण पाप थी बचियो,
तेनो करुणा में पाप क्यों गावोजी॥र०॥५९॥
हिंसक (री) करुणा में धर्म बतावे,
मरणेवाला री में पापो जी।
या खोटी श्रद्धा परतख दीसे,
जे थापे ते पामे सन्तापो जी ॥रक्षा०॥६०॥
(कहे) "छकाया रा शस्त्र जीव अव्रती,
(त्यांरो) जीवणो-मरणो न चावे जी।"
तो पाणी थी उन्दिर मारया काढ़ो,
(तेथी) थारी श्रद्धा खोटी थावेजो ॥रक्षा०॥६१।
(कहे) 'म्हें तो जीवणो मरणो न चावाँ,
पाप टालणो चावां जी।"
(उत्तर) तो जीवरक्षा पिण पाप टालण में,
स्व-पर नो पाप बचावां जी ॥रक्षा०॥६२॥
मारण ने मरणेवाला रो,
पाप छोड़ावा चावां जी।
मरणेवाला री दया किया सूं,
घातक रा पाप छुड़ावां जी ॥रक्षा०॥६३॥
जीव गरीब, अनाथ दुःखी री,

अनुकम्पा जिनजी बताई जी।
त्यांने बचाया में पाप बतावे,
या श्रद्धा दुःखदाई जी ॥रक्षा० ॥६४॥
जीवां री हिंसा असंजम जीतव,
ते तो मुनि नहिं चावे जी।
जीवां री रक्षा संजम जीतव,
ते [तो] चावे गुण पावे जी ॥रक्षा०॥६५॥
जीवां री हिंसा असंजम जीतव,
[तिणरा] त्याग सूतर में आया जी।
जीवरक्षा रा त्याग न चाल्या,
[प्रभु] जीवरक्षा रा गुण गाया जी॥रक्षा०॥६६॥
जीवां री रक्षा में पाप होतो तो,
रक्षा रा त्याग कराता जी।
[पिण] रक्षा में तो बहु धर्म बतायो,
जीवरक्षा जिन चाता जी ॥रक्षा०॥ ६७॥
त्रिविधे-त्रिविधे मुनि त्राता कहिये,
त्राता रक्षक जाणो जी।
(तेथी) छकाया रा पीयर साधु,
रक्षा री गुण पिछाणो जी ॥रक्षा०॥ ६८ ॥

मरता जीव ने कोई बचावे,
जामें पाप बतावे जी ।
ते पाप बताया समकित नासे,
जांरा मूल-उत्तर व्रत जावे जी ॥रक्षा०॥६९॥
(जो कहे)"त्रिविधे-त्रिविधे जीव-रक्षा न करणो"
(उत्तर] तो हिंसक री हिंसा छोड़ाया जी
मरता जीवां री रक्षा होसी,
थांरी श्रद्धा सु' पाप कमाया जी ॥रक्षा०॥७०॥
"बीच में पड़ पाप नाय छोड़ावणो,"
इसड़ो थे धर्म बतावो जी ।
जो हिंसक पाप करे तिण बीच में,
उपदेश देण क्यों जावो जी ॥ रक्षा० ॥७१॥
छे कारण जीव-हिंसा करे कोई,
अहित अबोध ते पावे जी ।
जीवरक्षा थी समकित पावे,
अहित त्रिकाल न थावे जी ॥रक्षा०॥७२॥
जीवहिंसा प्रभु खोटी बताई,
(आठ) कर्मा री गांठ बंधावे जी ।
जीवरक्षा प्रभु आछी भाखी,

ते भारीकर्मा जीव मिथ्याती,

(त्याँ) शुद्धबुद्धि नाहिं पिछाणीजी॥रक्षा०॥७८॥

त्यां निरदयी ने आरज पूछ्यो,

थांने बचाया धर्म के पापो जी।

तब कहे "म्हांने बचाया धरम छे,"

साँच बोल ने किधा(शुद्ध)थापोजी ।रक्षा०।७९।

(ज्ञानीकहे) थांने बचाया थें धरम जो श्रद्धो,

तो सर्वजीवां री इम जाणो जी।

ओरां ने बचाया पाप परूपो,

थें खोटा क्यों करो ताणो जी ॥रक्षा०॥८०॥

रक्षा में पाप बतावे त्यांने,

कीधा धर्म सूं न्यारा जी।

अंग उपांग रा मूलपाठ में,

गणधरजी विस्तारा जी ॥ रक्षा० ॥ ८१ ॥

पर ने बचाया पाप परूपे,

निज ने बचाया में धर्मो जी।

या श्रद्धा विकलां री ऊ घो,

नहिं जाणे पूरो मर्मो जी ॥ रक्षा० ॥ ८२ ॥

अर्थ अनर्थ धर्म रे काजे,

धर्म श्रद्धे तो समकित जावे जी"॥रक्षा०९२॥

(उत्तर) या श्रद्धा थांरो प्रत्यक्ष खोटो,

वन्दन रा थें भूखा जो।

तिण हेते आरम्भ करे जद,

भाव बतावो चोखा जो ॥ रक्षा० ॥ ९३ ॥

साधर्मी-वत्सलता मोटो,

समकित रो आचारो जो।

तिण में एकान्त-पाप बतावो,

मिथ्या थारो व्यवहारो जो ॥ रक्षा०॥ ९४॥

वन्दन आरम्भ (श्रावक) वत्सल आरंभ,

दोनों सरिखा जाणो जी।

वन्दन भाव निर्मल भाखो,

थें वत्सल खोटा मानो जी ॥ रक्षा०॥९५॥

ज्ञानी तो दोनों ही सरिखा जाणे,

थांने ज्वाब न आवे जी।

एक ने थापे ने एक उथापे,

ते मूरख ने भरमावे जी ॥ रक्षा० ॥ ९६ ॥

कोई तो जावां ने मरता बचावे,

कोई करे सेवा साधर्मी जी।

तिण में एकान्त पाप बतावे,
ते एकान्त मिथ्याकर्मी जो ॥रक्षा०॥ ९७ ॥
कोई जीवाँ रा दुःख मेट्या में,
एकान्त पाप बतावे जो
त्यांने जाण मिले जिन धर्म रो,
(तब) किण विध मारग लावे जो ॥रक्षा०॥९८॥
लोह नो गोलो अग्नि तपायो,
ते अग्निवर्ण कर तातो जो ।
[ते] पकड़ संडासा लायो तिण पासे,
(कहे) बलतो गोलो झेलो हाथो जो ॥र०॥९९॥
(जब) दयाहीण हाथ पाछो खेंच्यो,
तब जाण पुरुष कहे त्यांने जो ।
थें हाथ पाछो खींचो किन कारण,
थारी श्रद्धा मन राखो छाने जो ॥र०॥१००॥
जद कहे गोलो म्हें हाथ में ल्यां तो,
(म्हारो) हाथ बले दुःख पावां जो ।
(तो थारा) हाथ बालता ने जो म्हें बरजां,
तो धर्मी के पापी कहावां जो ॥र०॥१०१॥
(कहे) "(म्हारा) हाथ बलता ने जो कोई बरजे

तिणने तो होसी धर्मो जी।"
[तो] दूजा रा हाथ बालता [ने] वरजे,
ते में क्यों कहो अधर्मो जी ॥ रक्षा०॥१०२॥
इम सर्व जीव थें सरीखा जाणो,
थें सोचा देखो मन मांई जी।
दुःख मेटण में पाप बतावा रो,
कुबुद्धि तजो दुःखदाई जी ॥रक्षा०॥ १०३॥
थारा हाथ जलाता ने वर्जे,
ते में तो धर्म बतावो जी।
औरां रा राखे तो पाप बताओ,
[थें] एसीं क्यों कुमति ठावो जी ।रक्षा०।१०४।
जो जीव बचवा में पाप कहे छे,
रूले ते काल अनन्तो जी।
विपरीत श्रद्धा रा फल है खोटा,
भाख गया भगवन्तो जी ॥रक्षा०॥१०५॥
साधां रे काजे छःकाय हणी ने,
जागा करे छे त्यारो जी।
ढोले, लीपे, छावे, संभाले,
ते साधु करे इखत्यारो जी ॥ र०॥१०६ ॥

अनन्त जीवां री घात हुई तिहां,
हर्ष से करे निवासो जी।
पूछ्या थो कल्पनीक बतावे,
विकलां री जीवो तमाशो जी॥रक्षा०॥१०७॥
(कहे) "धर्म रे कारण हिंसा कीधा,
बोध बीज रो नासो जी।"
तो साधु काजे हिंसा करी ते,
तिण घर में क्यों करो वासोजी॥रक्षा०॥१०८
'पुरुषान्तकड़' रो नाम लेई ने,
सेज्जातर धर्म बतावो जी।
धर्म रे काजे हिंसा हुई यहां,
तेने मिथ्यात क्यों न बतावोजी॥रक्षा०॥१०९॥
(कहे) "दर्शन धर्म अरु हिंसा पाप में,
दोनों मानां न्यारा जी।"
(उत्तर) तो साधर्मी वत्सलता धर्म में,
हिंसा पाप में धारां जी ॥रक्षा०॥११०॥
उघाड़े मुख बोली (थांने) आहार आमंत्रे,
(वलि) मुख खुले बोल बेरावे जी।
जीव असंख्य, हण्या तुम काजे,

(इणमें) धर्म पाप सूं थावे जी ॥रक्षा०॥१११॥
(कहे) "दान देवा रो तो धर्म है मोटो,
अजतना रो पाप में मानां जी ।"
(उत्तर) जो वत्सलता रो तो धर्म है मोटो,
अरंभ पाप बखाणां जो ॥रक्षा०॥११२॥
एवा अनेक निज कामां में,
पाप ने धर्म बतावे जो ।
अनुकम्पा उपकारे (जो कदा) आरंभ,
तो अनुकम्पा पाप में गावे जी ॥रक्षा०॥११३॥
एकेन्द्रिय मरे पँचेन्द्री रक्षा,
(तिण में) एकान्त-पाप सिखावे जी ।
एकेन्द्री मारो ने साधाँ (पंचेन्द्रिय) ने देवे,
तिण ने तो धर्म बतावे जी ॥रक्षा० ॥११४॥
छः काया हणतो माये जावे,
(तिण ने) रस्ता री सेवा बतावे जी ।
त्याग कराय साथ ले जावे,
धर्म रो लोभ दिखावे जी ॥ रक्षा० ॥११५॥
निज स्वारथिया आहार रा अर्थी,
भोलां ने भरमावे जी ।

गाड़ी-घोड़ा लश्कर रे साथे,

उमाया-उमाया जावे जी ॥ रक्षा० ॥११६ ॥

स्वारथे हिंसा याद न आवे,

पर-उपकार में [झटपट] गावे जो ।

अट्ठारे पाप रो नाम लेई ने,

मूरख ने भरमावे जो ॥ रक्षा० ॥ ११७॥

[कहे] "आरम्भ लागा उपकार हुवे तो,

झूठ चोरी थो पिण होसी जो ।"

[उत्तर] [इम] अठारेहो पापां रो नाम बतावे,

ते पर-उपकार रा रोषी जो ॥रक्षा०॥११८॥

चोरी करा थारा दर्शन खातिर,

[कोई] कूड़ो-साख भरी धन लावे जो ।

तिन धन था थारा दर्शन कीधा,

[थलो] थारी भावना भावे जी॥रक्षा०॥११९

आरम्भ कर आयो दर्शन काजे,

तिणने धर्म बतावो जी ।

तो चोरी-जारी रा धन थो वंधां,

तिण में पिण धर्म दिखावो जो ॥रक्षा०॥१२०॥

(कहे) "चोरी, जारी खोटी गवाही,

दर्शन अर्थी न सेवे जो।
आरम्भ बिन तो आइ न सके,
(तेथो)आरम्भ कर दर्श लेवे जो"॥रक्षा०॥१२१॥
(उत्तर) (तो) उपकार में तुम्हें इमहिज जाणो,
उपकारी चोरी न सेवे जी।
कुशील व्यभिचार पाप ने,
उपकारी तज देवे जी ॥ रक्षा० ॥ १२२ ॥
इमहिज जीवरक्षा में जाणो,
चोरी आदिक नहिं सेवे जो।
अल्पारम्भ बिन (महा) रक्षा न हो तो,
आरम्भ ने आरम्भ केवे जी ॥रक्षा०॥१२३॥
आरम्भ उपकार जुआ-जुआ छे,
इमहिज रक्षा जाणो जी।
उपकार रक्षा धर्म रो अंग,
आरम्भ अलग पिछाणो जो ॥रक्षा०॥१२४॥
जिन-मारग रो नींव है रक्षा,

खोजो हुवे ते पावे जी ।

जीव बचाया धर्म है निर्मल,

दधि मथिया घो आवे जी ॥ रक्षा० ॥१२५॥

जीवरक्षा में पाप बतावे,

ते जल में लाय लगावे जी ।

अमृत थी मरणो कोई केवे,

ते मिथ्यावादी कहावे जी ।, रक्षा० ॥१२६॥

जीवरक्षा श्री जिनजी री वाणी,

दशमें अंग बखाणी जो ।

जो करसी भवसागर तिरसी,

मनवंछित सुखदानी जी ॥रक्षा०॥१२७॥

उगणीसे छ्यासी संमत में,

सुदी भादव एकादशमी जी ।

ढाल जोड़ी रक्षा दीपावणी,

तिमिर मिटावण रश्मी जी ॥रक्षा०॥१२८॥

मालचन्द कोठारी रे कमरे,

चूरू कियो चोमासो जी ।

कोठारयां शुद्ध श्रद्धा धारी,

पामो ज्ञान प्रकाशो जी ॥रक्षा० ॥१२९॥

इति नवमी ढाल सम्पूर्णम् ।

ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः

दयादान प्रतिपादक

श्रीगब्बूलालजी महाराज

विरचित—

पद्य-संग्रह

॥ श्रीगब्बूलालजी कृत ढाल ॥

दानके गुण को लेवो जान

दान से पावोगे कल्याण ॥टेक॥

प्रथम श्री ऋषभदेव भगवान,

हुए श्रीचौविसमें वृषमान ।

सभी ने दिया है वर्षी दान,

शास्त्रमें है जिसका परमान ॥

दोहा

एक क्रोड़ आठ लाख सोनैया

हाथसे देते दान ।

दुःख मिटाया दुखी जीवका,

पाया पद निर्वान ॥

इसीसे समझो सकल जहाना ॥दान०॥१॥

सूत्र ठाणायंग मझार,

दान फरमाया दस प्रकार ।

यथा अर्थ लो हिरदयमें धार,

तिरने चाहो यदि संसार ॥

दोहा

अनुकम्पा संग्रह भय, कालुणि लज्जा जान ।

गारव अधर्म धर्म आठवां, काहीइ कृत दान ॥

शास्त्रका क्रम लिया है जान ॥दान०॥२॥

दुःखी दीन और अनाथ, अन पाणी विन दुखपात।
अचित वस्तु दे मिटावे दुःख, दयासें करदेवे सब सुख।

दोहा

अपना धर्म जावे नही, बांधे पुण्य अपार।
प्राणीमात्रके लिये थे दान जो देवे सुख श्रीकार
कहा अनुकम्पा दान बखान ॥दान० ॥३॥

उदाहरण देते इसपे खास,
सूत्र रायप्रसेनी लोविमास
राय परदेशीको समझाय,
दिया अनुकम्पा दान बताय

दोहा

सतरे सौ पचास गाँवकी,
जितनी आमद आय।
उसी खर्चसे दानकी शाला,
उसने दी खुलवाय॥
अन्तमें पाया स्वर्ग विमान ॥दान०॥४॥

भगवती सूत्रके मंझार,
चला है श्रावकका अधिकार।

तुंगिया नगरी थी सुखकार,

बसें वहां श्रावक व्रतके धार ॥

दोहा

दान देनेके कारण,

उनके रहते खुले किवाड़ ।

भिक्षाचरका प्रवेश चाहते,

दिलके बड़े उदार ॥

वे थे जैन धर्मके जान ॥दान०॥५॥

सभी श्रावकका यही आचार,

वीर फरमाया शास्त्र मंझार ।

खुलासा किया है टीकाकार,

देख लो अपने नयन उघार ॥

दोहा

दुखी जीवको दान जो देना,

हैं अनुकम्पा प्रसिद्ध ।

शास्त्र वचनको प्रमाण करके,

छोड़ो अपनी जिद्द ॥

इसीमें है सबका कल्याण ॥दान॥६॥

दान अनुकम्पा उठाना चाय,

युक्तियाँ खोटी मनसे लगाय ।
सदा ही अपना स्वार्थ चाय,
औरको देना दिया उठाय ॥

दोहा

अनन्त संसार बढ़ाय के,
जावे जन्म को हार ।
प्राणीमात्रसे द्वेष बँधे है,
देखो शास्त्र मँझार ॥
दसवें अंगमें है यह ज्ञान ॥दान०॥७॥
क्षमादि धर्म्म निभाने काज,
मुनीको दे संजमका साज ।
अशनादिक चतुर्दश जानो,
फ्रासुक निर्दोषी मानो ॥

दोहा

भव परम्परा घटायके,
बाँधे पुण्य अपार ॥
स्वर्गादिककी ऋद्धी पावे,
पावै मोक्ष दुवार ॥
यही करना सबका कल्याण ॥दान०॥८॥

ई खुरस ऋषभ देव पाया,
कुंवर श्रीयांस वहराया।
वहराया दाखोका पानी,
शंखनृप जशोमति रानी ॥

दोहा

नेम राजुल हो गये,
बाइसमाँ जिन राज।
तोरण जाकर पशु बचाये,
अभयदानके काज ॥
मोक्ष गये करके अक्षतध्यान ॥दान०॥९॥

धन्ना शालिभद्र कुमार,
दानसे पाये सुख अपार।
सुबाहु कुंवर आदि सुखदाय,
गये जो स्वर्ग मोक्ष सुख पाय ॥

दोहा

अनन्त जीव जो तर गए,
भव संसार महान।
सभी तरहका सुखको चाहो,
देओ सुपात्र दान ॥

कहां तक मैं कर सकूं बयान ॥दान०॥१०॥

धर्म दान है दो परकार,

सुपात्र अभयदान विचार

कह दिया सुपात्र दानका हाल,

सुनो अब अभयदानकी चाल ॥

दोहा

मरण भय सबसे बड़ा,

मरना न चाहै कोय ।

मरण भय जो कोइ मिटावै,

तन धन देकर सोय ॥

कमावे जगमें धर्म महान ॥दान० ॥११॥

श्रेष्ठ ये सब दानोंमें दान,

कहा अंग दुसरेमें भगवान ।

इसीसे हुए हैं शांतीनाथ,

सुनो मेघरथ राजाकी बात ॥

दोहा

भय पाया परेवड़ा,

आया गोद मंझार ।

अपना तन दे उसे बचाया,

सफल किया अवतार ॥
लिया सर्वार्थ सिद्ध विमान ॥दान०॥१२॥

श्री श्री गर्दभालो मुनिराय,
केसरी वनमें ध्यान लगाय ।
संजती कंपिलपुरका राय,
शिकार करनेको वन जाय ॥

दोहा

एक मृगके बाण लगा है,
आया मुनिके पास ।
देख मुनीको संजति राजा,
पाया अति ही त्रास ॥
कंपता बोले है राजान ॥दान०॥१३॥

कहे मुनि देता हूं अभयदान,
तू भी दे इनको ये दान ।
जंगलके जीव दुखी महान,
अभय दे करले तू कल्याण ॥

दोहा

मुनि वचनको मानके,
लिया है संजम भार ।

कर्म खपाके मोक्ष पधारे,
है सूत्रमें अधिकार ॥
सार ये जिनमतका लो जान ॥दान०॥१४॥

पाखण्डो पाखण्ड फैलावे,
पाप अनुकम्पामें केवे ।
कंद और मूल मुख लावे,
भद्रक जीवोंको बहकावे ॥

दोहा

अभयदानका अर्थ बदलकर,
उलटा देत दिखाय ।
नहीं मारे हैं अपने हाथसे,
वही अभय कहलाय ॥
इसीको कहना महा अज्ञान ॥दान०॥१५॥

मनमानी गप्पां चलाई,
नहीं पर भव चिन्ता आई ।
मनो कल्पित ये पंथ चलाय,
अभय अनुकम्पा दान उठाय ॥

दोहा ॥

अनन्त सँसार में हो अब रुलना,

करते ऐसे काम।

बीतरागका आशय छोड़ो,

करते अपना नाम॥

धाम नरकोंके लो पहिचान ॥दान०॥१६॥

अपना पेट भरनके काज;

प्रथम ही बांधो गाढी पाज।

बोलत मुखसे न आई लाज,

आपही बन बैठे हैं जहाज॥

दोहा॥

हम सिवाय संसारके,

सब कुपात्र नर नार।

पात्र हमारे भरदो पूरण,

बोले बारंबार॥

औरको देना पाप महान ॥दान०॥ १७॥

हमको दिया धर्म फल पाय,

औरको दिया पाप बतलाय।

भूलसे दो दुसरेको दान,

तो पीछे से करलो पछतान॥

दोहा ॥

ऐसी बात अनेक बनाकर,
फसा दिये नर नार।
समझाना हो गया है मुश्किल,
चाहे आप करतार॥
आती इनकी करुणा महान ॥दान० ॥१८॥

ढाल दूसरी

म्हाने आवे अनुकम्पा किस विध,
तिरसी रे थांरी आतमा।
प्रभु कृपा करीने सद्बुद्धि,
देवो तीरे आतमा ॥ टेर ॥
शासन नायक वीर प्रभू जी,
चौबिसमां जिनराज।
साधु साध्वी श्रावक श्राविका,
सुमिरण करते आज ॥
भवोदधि और कलिकालमें,

यहो तिरणकी जहाजरे ॥म्हा० ॥१॥

माताका उपकार परम है,
देव गुरू समान।
विनय भक्ति आज्ञाका पालन,
सुकृत मांय बखान॥
स्वर्ग सुखोंका साधन समझो,
यही प्रभूकी वानरे ॥म्हा० ॥ २ ॥

तीन ज्ञान धर थे जब प्रभुजी,
गर्भावास दरम्यान।
जननी की अनुकम्पा करके,
धर दिया निश्चल ध्यान ॥
जीवत रहते संजम न लूं,
अभिग्रह पहिचानरे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥

इस करणी में पाप बताते,
कलियुगके सरदार॥
चार ज्ञान धर चूके कहकर,
चढावे सिर पर भार॥
पाप कहैं वे पापी नर हैं,
पाखंड मतके धार रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥

सर्वज्ञ मुखसे सुना है मैंने,
सुन जम्बू अणगार।
छद्मस्थपन में पाप न कीन्हा,
वीर एक भी वार॥
आचारंग में सुधर्म स्वामी,
यह कीन्हा निर्धार रे॥ म्हा०॥ ५॥
कलीकाल के जन्मे कहते,
वीर गये हैं चूक।
अनुकम्पाका द्वेषी वेशी,
झूठ मचाई हूक।
अर्हन्त अवगुण वाद बोलकर,
सत्यसे गये हैं रूखरे॥ म्हा०॥ ६॥
छे लेश्या छद्मस्थ वीर में
इसको करके धाय।
चूका कहते वीर प्रभूको,
सूतर वचन उत्थाप।
झूठी कथनी कथी अज्ञानी,
सुनके उपजे ताप रे॥ म्हा०॥ ७॥
हाथ जोड़ कर शीश नमाऊं,

सुणो वीर भगवान।
निन्हव मुखकी सुनी वार्ता,
मेरे दुखते प्राण॥
कोप भाव मुझको मत आवो,
मांगू प्रभुसे दान रे॥ म्हा०॥ ८॥
लेश्याका लक्षण फरमाया,
गणधरजी यूं गाय।
चौंतीसमा अध्येनको देखो,
सुणजो तुम हुलसाय।
किंचित लक्षण तुम्हें सुनाऊं,
धारो हिरदय मांय रे॥ म्हा०॥ ९॥
हिंसा कर्ता झूठ बोलता,
चोर लम्पटो जानो।
महा ममत्वो प्रमादी पूरा,
तीव्र आरम्भी मानो
मन वच काया रखे मोकला,
करे छकायकी हानोरे॥ म्हा०॥ १०॥
सबका अहित करनेवाला,
क्षुद्रिक जानजो भाई।

पाप करन में साहसीक है,
इह परलोक डरनाई ॥
जीव घात करते नहीं डरता,
हृदय कठोर दुखदाई रे ॥ म्हा० ॥ ११ ॥
नहीं जीती है इन्द्रयों पांचो,
भोगोंमें भरपूर ।
कृष्ण लेश्याका ये है लक्षण,
जानो महा करूर ॥
(ऐसो) कृष्ण लेश्या कहै वीर जिनेन्द्रमें
ज्यांसे मुक्ति दूर रे ॥ म्हा० ॥ १२ ॥
दूजेका गुण देखके करता,
ईर्षा जो तत्काल ।
तपस्या रहित कदाग्रही पूरा,
अज्ञानो कहो या बाल ॥
अनाचारी निर्लज्ज जो जानो,
विषय लंपट संभाल रे ॥ म्हा० ॥ १३ ॥
द्वेषी सबका महा धूर्त है,
आठों मदका करता ।
रस लोलुपी और आरंभी,

क्षुद्रिक दुर्गुण धरता।
लक्षण नील लेश्याका ऐसे,
वीरसे क्योंकर पाता ॥ म्हा० ॥ १४ ॥
टेढा बोले टेढा चाले,
टेढा ही करे काम।
कपटी अपना दोष छिपावे,
मिथ्या दृष्टी नाम ॥
अनार्य वज्र सरीखा बोले,
करे चोरीका काम रे ॥ म्हा० ॥ १५ ॥
गुणी जनो का मत्सर धरता,
कपोत लेश्या मानी।
ऐसी लेश्या वीरके कहते,
वे हैं बड़े अज्ञानी।
कलीकाल की महिमा देखो,
कैसे हैं अभिमानी रे ॥ म्हा० ॥ १६ ॥
प्रशस्त लेश्या पावे मुनि में,
भगवती में फरमाया।
प्रथम शतक उद्देशा पहिला,
पूरा भेद बताया ॥

महावीरके वचन अराधो,
सफल करो सब काया रे ॥ म्हा० ॥ १७ ।
द्रव्य भावसे प्रशस्त लेश्या,
वीर प्रभू में जानो ।
छ लेश्या पानेको अब तुम,
झूठी हठ मत तानो ॥
परभव निश्चय जाव नो सरे,
छोड़ देवो दुर्ध्यानोरे ॥ म्हा० ॥ १८ ॥
तीन भुवनमें रूप अनूपम,
कंचन वर्णी काया ।
पद्मगंधसे सुगन्ध अनन्ता,
श्वासोच्छ्वास सुखदाय ॥
उज्वल लोही मांस प्रभूका,
यही अतिशय कहाय रे ॥ म्हा० ॥ १९
महावीर की छद्मस्थअवस्था,
कैसे करूं वखान ॥
बारा वर्ष छःमास अधिक में,
पाये केवल ज्ञान ॥
घोर तपस्या करी वीर प्रभु,

काटे कर्म महान रे ॥ म्हा० ॥ २० ॥

ग्यारा वर्ष छेमास पचीस दिन,

तपस्या करी दयाल ।

अन्न जल त्याग्यो सर्व प्रकारे,

तज निद्रा की चाल ॥

धर्म ध्यान अरु शुक्ल ध्यान में,

व्यतित कियो शुभ काल रे ॥ म्हा० ॥२१॥

किया न कोप किसी जीव पे,

किन्तु किया कल्याण ॥

पाली सुमती गुप्ति प्रेम से,

महाव्रत पाँचों महान ॥

शीत ताप को ले आतापना,

खींचो ध्यान कमान रे ॥ म्हा० ॥ २२ ॥

देव मनुष्य तिर्यंच कास रे,

सह्या परीषह भारी ।

दुःख दिया नहिं किसी जीव को,

बन सब के हितकारी ॥

गुण अनन्ता कहां तक गाऊं,

अल्प बुद्धि है म्हारी रे ॥ म्हा० ॥ २३ ॥

रिजु वालिका नदी किनारे,

ध्यायो शुक्ल ध्यान।

नाश किया घनघाती कर्म जब,

प्रभु पाया केवल ज्ञान॥

बहुत जीव को तारे प्रभु ने,

पाये पद निर्वाण रे॥ म्हा०॥ २४॥

अवधि मन पर्जव ज्ञान,

और पांचवाँ केवल ज्ञान।

जो जो भाव देखा उन मांही,

वही किया वृद्धमान॥

ऐसा प्रभु का सरणा लेवे,

निश्चय होत कल्याण रे॥ म्हा०॥ २५॥

ज़वाहिर लाल जी पूज्य प्रसादे,

जोड़ी गब्बू लाल।

सरदार शहर के माय ने सरे,

सित्यासी के साल॥

गावे जो कोई नर नारी,

तो पावे मंगल माल रे॥ म्हा० २६॥

ढाल तीसरी

दान की महिमा अति भारी,

भाव शुद्ध से हैं सुखकारी ॥ टेर ॥

आज इस कालो काल माईं,

निर्दयता रही जग छाई ।

अनुकम्पा दान कौन देवे,

खोटो मौजा मे रेवे ॥

दोहा ॥

इण ऊपर कुगुरू मिले,

दो अनुकम्पा उठाय ॥

सहाय करे दुखिया को दान से,

उसमें पाप बताय ॥

ऐसे हैं जैन—वेश धारी ॥ दान० ॥ १ ॥

साधु हम भरत खंड माईं,

सुपातर हमहिज हैं भाई ।

कुपात्तर और सभी जानो,

ऐसो तो कुगुरु करे ताणो ॥

दोहा ॥

पुण्य धर्म हम को दिया,

और को दियां पाप ।

पेट भराई परतक्ष दीखे,

कुगुरां को या साफ ॥

धरावे साधु नाम धारी ॥ दान० ॥ २ ॥

औरों को दान कोई देवे,

मांस खावे और वेश्या सेवे ।

तीनों ये सरीखा बतलावे,

ग्रंथमें लिख के दिखलावे ।

दोहा ॥

शंका हो तो देख लो,

भ्रम विध्वंशन मांय ।

महा कुकर्म दूजे को देना,

लिखते नहि शरमाय ॥

भ्रम ये फैलाया भारी ॥ दान० ३ ॥

अचित वस्तुको दे के सहाय,

दुखी का दुखड़ा देय मिटाय ।

कुकर्म इसको दिया बताय,
कुगुरु थोथा गाल बजाय॥

दोहा ॥

कंद मूल का नाम ले,
अचित को दिया छिपाय।
भूले को भर्मावे भारी,
भरम की बात बनाय॥
अवज्ञा सत्य की कर डारी ॥ दान० ॥ ४ ॥

अब तो सुधरो रे भाई,
कुगुरुकी तज दो कपटाई।
रखो अनुकम्पा दिल माईं,
मौज का मोह मेटो भाई ॥

दोहा ॥

अनुकम्पा से सभी सुधरते,
लो जिनवर का नाम।
देश धर्म समाज का,
हितकारी है काम ॥
यही सुमति है हितकारी ॥ दान० ॥ ५ ॥

चौथी ढाल

मतो बांधोरे बांधवरोटी की वारियांरे ।
जासे होय संजमको खुवारियाँ रे ॥मती०॥

जैनागम वीर फरमाया,
नहीं कहीं यह पाठ आया ।
नहीं कोई ज्ञानी दिखलाया,
नहीं किसी ने धारिया रे ॥ म०॥ १ ॥

सूत्र आजाण नरनारी भोले,
गुरुस्थानक में आकर बोले ।
घर वस्तु का भेद जो खोले,
हम घर है यह त्यारियां रे ॥ म० ॥ २ ॥

विविध माल को सुन कर बात,
गुरू जो मन में खुश हो जात ।
वचन मात्र से अति फूलात,
तुम हो बाई गुणं कारिया रे ॥ म० ॥ ३ ॥

सिंघाड़े को पूछा जावे,

कहो तुम्हारे क्या क्या चावे ।
चीज कौन सी तुम को भावे,
लिखा ने को यह वीरियां रे ॥ म० ॥ ४ ॥
विविध तरह के पकान गिनावें,
मन मानी सागें मंगवावें ॥
घी दूधका प्रमाण बतावे,
पड़े स्वाद की लारियां रे ॥ म० ॥ ५ ॥
श्रावक श्राविका हाजिर रेवे,
अमुक वासमें गोचरी केवे ।
नर नारी नेवता देवे,
खड़े रहे घर द्वारियां रे ॥ म० ॥ ६ ॥
भोजन लेख को होवे खवर,
चट पट त्यारी करे जबर ।
नहीं पर भव का रखते डर,
यह मोह की छारियां रे ॥ म० ॥ ७ ॥
अन्य भिक्षु भावना दिन आवे,
गुर्रा करके दूर भगावे ।
हटजा पापी पाप लगावे,
गुरु जी पधारिया रे ॥ म० ॥ ८ ॥

मन मान्या माल जो पावे,
चुप्प चाप पातर भर लावे।
नहीं तरकई टुकड़ा करावे,
हाथ लगा लो नारियां रे ॥ म० ॥ ९ ॥
नर नारी परदेशां जावे,
भावना स्टेशन पर भावे।
निन्दव शीघ्र वहां पर ध्यावे,
नहीं करे अबारियां रे ॥ म० ॥ १० ॥
पकवानो से पात्र भरावे,
नर नारी को खुशी बनावे।
देखो सद्गुरु नाम धरावे,
लोप सूत्रकी कारियां रे ॥ म० ॥ ११ ॥
हमको अचम्भा अधिका आवे,
टुकड़ा बदले धर्म लजावे।
फिर भी क्षमा क्षमा करवावे,
कलियुग को बलिहारियां रे ॥ म० ॥ १२ ॥
सूत्र भिक्षा प्रभु फर्माई,
अण चिन्ती गोचरी बताई।
ऐसो विधि शास्तर में आई,

खोलो अज्ञान किवारियाँ रे ॥ म० । १३॥

जवाहिर लाल पूज्य गुरु राया,

करके कृपा थलीमें आया।

इसका हम को भेद सुनाया,

जब समझे सुख कारियां रे ॥ म० ॥ १४ ॥

सरदार शहर सित्यासी साल,

जोड़ बनाई जैन बाल ।

शुद्ध आहार से होत निहाल,

आई तिरन को वारियां रे ॥ म० ॥ १५ ॥

पाचवीं ढाल

ब्रह्मचारी होतो कहो, थारं वारियां रे ॥ टेर ॥

साधु स्थान में रात पड्यां,

मत आओ नारियां रे ॥ ब्र० ॥

उत्तराध्ययन सूत्र के मांय,

सोलमा अध्ययन है सुखदाय।

ज्यामें भाष गया जिन राय,

प्रथम गाथा देखो चित लाय॥

खोल हृदय किवाडियां रे ॥ ब्र० ॥ १ ॥

आचारंग को भावना देखो,

नववाड़ हृदय से पेखो ।

सुनिये प्रश्न व्याकरण को लेखो,

अव तो काम राग ने छेको ॥

सीख सुख कारियां रे ॥ ब्र० ॥ २ ॥

स्त्री सहित मकान में रेवे,

और कथा उनही कोकेवे ।
नशीथ सूत्र प्रायश्चित देवे,
अष्टम उद्देशो देख लेवे ॥
किया निरधारियां रे ॥ व्र० ॥ ३ ॥
जैनो साधू नाम धराये,
सेवा बायों से कर वावे ।
नहीं शरम जरा पिण आवे,
पुरुष पास में नहीं रहावे ॥
या सेवा दुख कारियां रे ॥ व्र० ॥ ४ ॥
जिनेश्वर की आज्ञा को लोप,
मिथ्या धर्म को खूंटो रोप ॥
भोले नर नारो है चोप (द)
बांधन वाले यहो गोप ॥
न किसी ने विचारियां रे ॥ व्र० ॥ ५ ॥
नारी स्वरूप शास्त्र में गाया,
जिसका पूरा भेद बताया ।
महा ज्ञानी ध्यानी डिगाया,
तुम तो हो कलिकाल के जाया ॥
है नागन सी नारियां रे ॥ व्र० ॥ ६ ॥

अग्नि पास गाढा घी रेवे,
तुर्त नीर स्वरूप कर देवे ।
संगत लाग्या भस्मि नहि रेवे,
यही उपमा ज्ञानी लेवे ॥
दूर रहे नारियां रे ॥ ब्रह्म० ॥ ७ ॥
मेरी हित शिक्षा सुन लीजे,
बन्दोवस्त शील का कीजे ।
नारि जात से दूर रहीजे,
जैनागम पर चित अब दीजे ॥
करके दिल उदारियां रे ॥ ब्र० ॥ ८ ॥
महावीर सुनो अरदासा,
'जैन बाल' की पूरो आशा ।
दो ब्रह्मचर्य समाधि वासा,
ज्यों भ भव मे सुख पासां ॥
मिले मुक्ति दुवारियां रे ॥ ब्र० ॥ ९ ॥

छठवीं ढाल

कुमति घट दर्शाई रे ॥ टेर ॥

अनुकम्पा दया को सावज
ठेराई रे ॥ कुमति घट० ॥

आचारंग आदि बत्तीस सूतर,
सब ही जैन सिर धारा रे।
मूल पाठ अर्थ टीका अन्दर,
नहीं (यह) शब्द उचारा रे ॥ कु० ॥ १॥

कई व्याकरण कोष कितेई,
प्रसिद्ध दुनियां माईं रे।
सावज अनुकम्पा शब्द पाया,
न व्युत्पत्ति पाई रे ॥ कु० ॥ २ ॥

टीका चूर्णि भाष्य बहुत है,
अवचूरि दीपिका जाणो रे।
न्याय अलंकार वेद पुराण मे,
नहीं परमाणो रे ॥ कु० ॥ ३ ॥

अनुकम्पा कहो करुणा कहो चाहे,
दया शब्द उचारो रे ।
तीनु ही शब्दका रक्षा करना,
अर्थ विचारो रे ॥ कु० ॥ ४ ॥
अवद्य कहते पापको भाई,
स शब्द आदि लगावे रे ॥
पाप सहित सावद्य शब्द बना है,
लो सूत्र दिखावें रे ॥ कु० ॥ ५ ॥
सहस्र किरण सूरज ऊगा अरु,
अंधेरा अति छाया रे ।
दोनों साथ में कभो नहीं रहते,
यही भ्रम माया रे ॥ कु० ॥ ६ ॥
शीतल चन्द्रमा कह दिया फिर,
अग्नि झसा बतावें रे ।
मूढ़ मती यों ही दया कह कर,
फिर सावज लगावे रे ॥ कु० ॥ ७ ॥
कारण कारज समझे नहीं मूरख,
बोधाने बहकावे रे ।
कारण ने तो कारज बताई,

दया उठावे रे ॥ कु० ॥ ८ ॥

साधु ने असाधु कहे तो,

मिथ्यात लग जावे रे।

वैसे ही कारण ने कारज बतावे,

तो मिथ्यात फैलावे रे ॥ कु० ॥ ९ ॥

गुरु भक्ति में तो लाभ बतावे,

दरशन करवा जावे रे।

गाड़ी घोड़ा ऊंट रेल चढ़े जब,

जीव मर जावे रे ॥ कु० ॥ १० ॥

कारज तो गुरु भक्ति करना,

कारण असवारी जाणो रे ॥

कारणमें आरंभ पिण होवे,

लाभ कारज जाणों रे ॥ कु० ॥ ११ ॥

तिर्यंच हो कर दया जो पाली,

श्रेणिक नृप घर जाया रे।

मेघरथ राजा दया जो पाली,

तीर्थंकर कहलाया रे ॥ कु० ॥ १२ ॥

हरण गमेष्यादि कई देवता,

दया जीवां की कीधीरे।

महावोर अपने शास्त्र अंदर,
साक्षी दोधोरे ॥ कु० ॥ १३ ॥
धर्मरुचि दया करी तन देकर,
भव भय दुःख मिटाया रे।
जीव बचे जब नेमोनाथ जी,
धन बखशाया रे ॥ कु० ॥ १४ ॥
मन वचन से जीव बचावे,
जिसका पार नहीं पावे रे।
इसो तरह कोई जीव बचावे,
वे आनन्द पावे रे ॥ कु० ॥ १५ ॥
पशु होकर जीव बचावे,
संसार सिन्धु तिर जावे रे।
परम पशु वो नर है इसमें,
पाप बतावे रे ॥ कु० ॥ १६ ॥
अज्ञान पड़दा दूर करो अब,
अंतर आंखे खोलो रे।
जीव बचाये धर्म होत है,
यों मुख से बोलो रे ॥ कु० ॥ १७ ॥
दुखी देख कर करुणा कर लो,

मरते जीव बचावो रे।
जीव दया के प्रताप सभो दिन,
साता पावो रे ॥ कु० ॥ १८ ॥
मोह अनुकम्पा और सावज दया,
अब तो कहना छोड़ो रे।
पूर्व पाप का पश्चाताप करी ने,
कर्म को तोड़ो रे ॥ कु० ॥ १९ ॥
संवत उन्नीसौ साल नित्यासी,
सरदार शहर मांहा रे।
असोज बदी अष्टमी दिन में,
जोड़ बनाई रे ॥ कु० ॥ २० ॥
पूज्य जवाहिरलाल प्रसादे,
'जैन बाल' सुख पाया रे।
दया धर्म का मर्म भाव से,
गाय सुनायो रे ॥ कु० ॥ २१ ॥

सातवीं ढाल
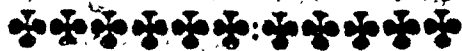
इचरंज आवे रे । विना कारण,

मारज्यां से आहार मंगावे रे

॥ इच० ॥ टेक ॥

चवदे हजार मुनिवर थे सारे,

वीर आज्ञा के माईं रे ।

छतीस हजार महासती थी,

शास्त्र में गई रे ॥ इच० ॥ १ ॥

मन मानी ये पोल चलावे,

पर भव डर नहीं राखे रे ।

अन्धा धुन्धी का काम चला है,

नहीं कोई भाषे रे ॥ इच० ॥ २ ॥

श्रमणी निग्रंथी नाम छोड़कर,

राज सत्यां कहावे रे ।

संसारी पदवी दे इनको,

खूब रिझावे रे ॥ इच० ॥ ३ ॥

आहार मंगावे पाणी मंगावे,
बोझा अपना लोकावे रे ।
ओघा घटावे पात्र रङ्गावे,
वस्त्र सिवावे रे ॥ इच० ॥ ४ ॥
विहार करे जव राजसत्यों जी,
आगे आगे जावे रे ।
दोनों वक्त पलेपण करेने,
आसन विछावे रे ॥ इच० ॥ ५ ॥
साधु जीमे सतियां परुषे,
या विध कहां से आई रे ।
किस गणधर ने किस शास्त्रमांही,
आज्ञा बताई रे ॥ इच्छा० ॥ ६ ॥
महावीर का निन्दव होता,
जामाली विख्यातो रे ।
बीमार पड़ा जब चेलापासे,
सेजा विछातोरे ॥ इच्छा० ॥ ७ ॥
चौथे आरे में निन्दव होता,
यह काम नहीं करता रे ।
इन निन्दव से बढ़ कर बातें,

अब करवाता रे ॥ इच० ॥ ८ ॥

अविधि से साधु स्थान में,

अगर आरज्यां जावे रे ।

अतरे बोल करे यदि वहां पर,

तो प्रायश्चित आवे रे ॥ इच० ॥ ९ ॥

व्यवहार सूत्र में साफ मना है,

देखो आंखे खोली रे ।

बिन कारण व्यावच नहि करता,

लो हिरदै तोली रे ॥ इच० ॥ १० ॥

गच्छाचार पईन्ना में लिखा,

आरज्यां आहार लावे रे ।

नपुंसक गच्छ कहा है वो,

जो आहार खावे रे ॥ इच ॥ ११ ॥

सुख सेज्जा बताई प्रभू जी,

ठाणायंग के माईं रे ।

साधु अपने हाथ से गोचरी,

लावे सदाई रे ॥ इच० ॥ १२ ॥

सरल होय कर शिक्षा सुनो,

हिरदै मांहो धारो रे ।

पुरुषा कार पराक्रम करके,
मुगती पधारो रे ॥ इच० ॥ १२ ॥

॥ गजल ॥

कलियुग के ओ नाम धारी जैन,
श्रावक सुनिये जरा ।
दर्द हमको होत है
करतूत, तुम देखो जरा ॥ टेर ॥ १ ॥
लाकर दया गरीब की कोई,
दान अनुकम्पा करे ।
उसको पाप बताते हो तुम,
कैसे वाक्य ऊचरे ॥ २ ॥
बचावे मरते जीव को,
अभय दान प्रभुजीने कहा ।
धर्म के बदले में अब जो,
पाप ही तुम ने कहा ॥ ३ ॥
न्याय नीति युक्त कोई करे,
है देशोत्थान है ।

स्वार्थ अन्दर लिपटाय के,
कहते पाप जो महान है ॥ ४ ॥
माता पिता का पुत्र पे,
उपकार शास्तर में कहा।
पाप एकन्त तुमने तो
सेवा करने में कहा ॥ ५ ॥
पतित पावन जैन दर्शन,
के नियम विशाल हैं।
जिसके सहारे गर कोई,
चाले तो होवे न्याल है ॥ ६ ॥
राय परदेशी को निर्दयता,
वड़ो जो क्रूरता।
देखो न गई चित सारथी से,
उसकी वही निष्ठुरता ॥ ७ ॥
प्रत्यक्ष ज्ञानी केसी स्वामी को,
कहे सरनाय के।
सदुपदेश देवो प्रभुजी,
हम पे कृपा लाय के ॥ ८ ॥
अनेक पशुपक्षी को ये,

मौत से ये मारता।
जीवों की रक्षा होवे और,
राजा बने दया पालता ॥ ९ ॥
मानी अदानो है राजा,
तकलीफ भिक्षु को देत है।
दीजिये अब ज्ञान ऐसा,
सबसे भलाई लेत है ॥ १० ॥
कठोर कर से इनकी प्रजा,
सारी बनी अकाल है।
संतोष सबको हो प्रभु जी,
इन्हें ज्ञान दो अनुकूल है ॥ ११ ॥
पास में मेरे वो आवे,
ज्ञान जरूर पायगा।
जी हजूर ये दास तेरा,
चरणों में इन्हें लायगा ॥ १२ ॥
अदब का यहना बना के,
लाया मुनी के पास में।
युक्तियां दे ज्ञान की,
मुक्त किया मोह पास से ॥ १३ ॥

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
९९	१८	घम	धर्म
१०२	७	प्रत्येक वोसी	प्रत्येकबोध
१०७	१	काउसरग	काउसग्ग
१०७	२	सोगल	सोमल
११३ में ११ से १३वीं लैन तक दोवार छप गया है			
१२९	२	बोलणरा	बोलणरी
१४०	६	यावे	ध्यावे
१४२	१४	आवे	भावे
१४३	१५	"क	एक
१५५	३	बकरो	बकरा
१६८	४	बहुगण	बहुगुण।
१७१	७	घाल्यो	घाल्यो।
१७४	९	दावा	दाव
१८०	११	जा	जो
१८२	४	मिन्ना	मिन्नो
१८४	१२	बचाय	बचाया
१८५	१२	कुत्त	कुत्ता
,,	,,	िड़िया	चिड़िया

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
१८५	१८	डावडो	डावडा
१८७	६	जा	जो
१८९	१४	जाव	जीव
,,	,,	जा	जा
१९६	१८	बचया	बचाया
२०२	७	घमं	घमं
२०५	११	मारतां	मरतां
*२०९	४	याकृयारोतियारे	पाडणारी तिणरे
२१७	१८	करनेको	करने हो
२१९	११	३९	६९
,,	१५	हो	हो
२२४	५	सेणिक	श्रेणिक
,,	६	तुम्हें	म्हें
२२६	१०	तणा	तणी
२२७	१७	वारजो	बोरजो
२२९	७	वोरो	वोर
२३६	३	बारा	बांरी
२४१	११	उणों	उणा

* कुछ प्रतियों में शुद्ध छपा है।

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
२४२	६	लग्या	लाग्या
२५८	१६	थोड़ी	थोड़ा
२५९	७	देखा	देखें
२६६	५	पापोण	पापो
२८५	१२	पतावे	बतावे
३०४	१२	बचवा	बचावा
३०५	७	करा	करी
३०७	१३	धनथा	धनथी
३१३	१३	जहाना	जहान
३२४	१४	थाय	थाप
३२६	७	कुष्ण	कृष्ण
३३४	७	आजाण	अजाण
३४०	१४	भ	भव
३५१	१६	वहना	बहाना

—०○—